श्रीः

ज्योतिष्मती

षैमासिक

वर्ष
१३
सं० २०२६

संख्या
१
कातिक



वार्षिक
मूल्य
७.५०

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य १.१५

विषय-सूची

इस अङ्कके सम्बन्धमें

यह १३वें वर्षका 'नववर्षाङ्क' ११२ पृष्ठका नवरात्रप्रारम्भमें ही प्रकाशित कर देनेका विचार था। परन्तु २७जुलाईको मैं दिल्लीमें बस दुर्घटनाकी चपेटमें आ जानेसे एक मास अस्वस्थ रहा और २३ सितम्बर को शिमलामें पुनः दुर्घटना-ग्रस्त होजानेसे छपाईके कार्यमें व्यवधान पड़ गया। अब १ अक्टूबरको प्रेसके प्रधान कम्पोजीटर श्री दुनीचन्दजी शर्माके भ्राताका देहावसान हो जानेसे उन्हें घर जाना पड़ गया। अतः १२ दिन फिर कम्पोजिंगका कार्य बन्द रहा। इन दैवी घटनाओंके कारण यह अङ्क पूर्व निश्चित समय १२ अक्टूबर (प्रथमनवरात्र) को प्रकाशित न हो सका। शीघ्रताके कारण कई आवश्यक लेख ('तृतीय विश्वमहायुद्ध'' ''संसर्गदोष'' भारतीय मंत्र यंत्र तंत्र और आयुर्वेदका चमत्कार' 'कुम्भ लग्नका विशेषफल' 'साहित्य- समीक्षा' आदि) इस अङ्कमें प्रकाशित न हो सके। इन सबके छापनेमें १० दिनका और विलम्ब हो जाता जो पाठकोंके लिए असह्य था, अतः इन लेखोंको आगामी अङ्कके लिए रोककर यह अङ्क ८८ पृष्ठोंमें पूर्ण करके विजया-दशमी पर पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत किया जा रहा है।

परिस्थितिवशात् १० दिनके विलम्बके लिए पाठक क्षमा करेंगे। इस अङ्कमें जिनका मूल्य समाप्त है उनको छपा मनीआर्डरफार्म साथ भेजा जा रहा है, मूल्य शीघ्र भेज दें। आगामी अङ्कसे वार्षिक मूल्य ८) आठ रुपये होगा।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[अखिल भारतीय ज्यौतिषपरिषद्की मुखपत्रिका]



संरक्षक

हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ श्रीगजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरेश।



सहायक

श्रीमान् स्व० नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' साहब, भू०पू० अध्यक्ष नगरपालिका—सोलन।

श्रीमती अ० सौ० तारामणि, धर्मपत्नी श्री बनवारीलालजी बंसल
(मालिक फर्म देवीसहाय बनवारीलाल, कटरा तमाखू, देहली—६)

श्रीमान् हीरालाल मोतीलाल पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)।

श्रीमान् मेसर्स झुम्बरलाल नथमल झंवर, मालेगांव (नासिक)।

श्रीमान् रामचन्द्र हरिराम मानधन्या, मालेगांव (नासिक)।

श्रीमान् तेजराज कस्तूरचन्द जैन, जमखण्डी (बीजापुर कर्नाटक)।



सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

अध्यक्ष—अ० भा० ज्यौतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)



उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य
एम.ए. (हिन्दी संस्कृत) पी.एच.डी.



प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१ भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रति-वर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे।

(३) जो सज्जन २१) से १००) रुपये तक प्रति-वर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मत' के सम्मानित सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ७.५० सात रुपये पचास पैसे और एक प्रतिके दो रुपये पन्द्रह पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरों कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं। चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका यह 'नववर्षाङ्क'समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अंक न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

'नववर्षाङ्क' सहित तीन अंकों या नौ मासका मूल्य ५.७५ रु०। दो अंकोंका मूल्य ४.०० और एक अंकका मूल्य २.१५ मनीआर्डर द्वारा पेशगी आने चाहिएं। वी०पी० किसीको भी नहीं भेजी जावेगी।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिएं। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिखकर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य वा एक अंकके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है, प्रकाशन तिथिसे दश दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है।

ग्राहक नम्बर स्मरण रक्खें

यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए। जो अपना ठीक शुद्ध ग्राहक नम्बर नहीं लिखेंगे उनको और १० दिनके बाद (५ नवम्बर १९६९ के बाद) यह अंक न मिलनेकी शिकायत लिखने वालोंको दुबारा यह अंक नहीं भेजा जावेगा, यह नोट कर लें।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[नववर्षाङ्क]

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ।।

वर्ष १३ — सोलन, आश्विन शु० १५ शनिवार, सं० २०२६ वि० ३ कार्तिक, शाके १८९१ (२५ अक्टूबर १९६९ ई०) — संख्या १

वेद-वाणी

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु ।

बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम् ।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ।। (अथर्व० १२-१-११)

हमारी मातृ-भूमि के हिमाच्छादित पर्वत, वन भूमि हमारे लिए सुखदायी हों। मातृ-भूमि धन धान्यसे हमारा पोषण कर रही है। मैं नीरोग, सबल, अजेय हो कर इसका अध्यक्ष हूं।

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु संरभध्वम् ।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।। (अथर्व० ६-९७-३)

युद्ध-विजयी वीरका हम हर्षध्वनिके साथ अभिनन्दन करें। शत्रुका वेगसे पराजय करने वाले तेजस्वी शूरवीरके हम अनुकूल रहकर कार्य करें। विजयी बलशाली वीरका अभिनन्दन करें।

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः ।। (अथर्व० ३-१९-१)

मैं जिनका नेता हूं, अग्रेसर हूँ उनका ज्ञान तेजोमय हो, उनका वीर्य और बल तेजस्वी हो, उनका क्षात्र-तेज अक्षय हो।

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत । इन्द्रस्य वज्रात्तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः (अथर्व० ३-१९-४)

जिनका मैं अग्रणी नेता हूं, उनके शस्त्र परशुसे अधिक तीक्ष्ण, अग्निसे अधिक तेज, इन्द्रके वज्रसे अधिक कठोर होवें।

द्वितीय युगमें पदार्पण

'ज्योतिष्मती' अपने उल्लास-मुखरित बारह वर्षोंको पूर्ण कर प्रस्तुत अङ्कसे तेरहवें वर्षमें पदार्पण कर रही है। भारतीय ज्ञान-विज्ञानकी विकासोन्मुख प्रवृत्तियोंके साथ ही प्राचीन ज्योतिष और मन्त्र-तन्त्र शास्त्रके अभिनव दायको नवीन परिप्रेक्ष्यमें प्रस्तुत करते हुए 'ज्योतिष्मती' निरन्तर प्रगतिपथ पर बढ़ रही है, यह प्रत्येक पाठकके लिये गौरवकी बात है। ईश्वरकी अनुकम्पासे 'ज्योतिष्मती' का प्रत्येक अङ्क अपने अङ्कमें वैविध्यपूर्ण साहित्यको पुरस्कृत करते हुए पाठकोंके सौहार्दका पात्र बनता है, उत्तमोत्तम लेखक बन्धु अपने साहित्य-नवनीतसे इसकी अर्चना करते हैं, तथा ग्राहक महानुभाव अपनी गुणग्राहकता को सार्थक करते हुए इसकी उत्तरोत्तर अभिवृद्धिमें सहयोगी बनते हैं। इस प्रकार आज नवीन वर्षारम्भ के अवसर पर हम "ज्योतिष्मती" के विगत बारह वर्षोंमें साहित्य द्वारा सेवा करने वाले साहित्यकारों, ज्योतिर्विज्ञानके माध्यमसे भविष्यफल एवं अन्यान्य विषयों पर लिखने वाले महानुभावों तथा आर्थिक अनुदान अथवा ग्राहक शुल्क देकर इसका पोषण करने वाले सभी पाठकोंके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, तथा भविष्यमें भी इसी प्रकार—इससे भी अधिक सहयोगकी कामना करते हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र

'प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं' की सिंहगर्जना सूर्य और चन्द्रकी साक्षितामें सदा समुन्नत होती रही है। चाहे कोई माने या न माने, भारतीय मानव ज्योतिषकी सत्यतामें सन्देह नहीं करता। किन्तु, धर्म निरपेक्षताके समान ही ज्योतिषको न माननेकी घोषणा करना एक प्रकारका फैशन बन गया है। बाह्य दृष्टिसे उपेक्षा दिखलाते हुए भी हमारा नेतृवर्ग बिना ज्योतिषके (गुप्त रूपमें ही सही) कोई कार्य नहीं करता। ज्योतिषी वर्ग भी अब अपने आपमें उतना स्पष्ट नहीं रह गया है। पढ़े लिखे वर्गमें अधिकांश व्यक्ति स्वयं पढ़ लिख कर ज्योतिष के लाभसे वञ्चित नहीं होते। इस दृष्टिसे 'ज्योतिष्मती' उनका मार्गदर्शन करती है। 'ज्योतिष्मतीमें' प्रकाशित भविष्यफल अधिकतर सत्य प्रमाणित होता है, वर्तमान राष्ट्रपतिके निर्वाचनमें सम्पादकीय-घोषणा इसका जीता-जागता प्रमाण है। इसी प्रकार वर्षोंसे इसकी भविष्य सम्बन्धी घोषणाओं एवं निर्भीक सम्पादकीय टिप्पणियोंने विद्यानुरागियोंके हृदयमें घर जमा लिया है।

तन्त्र शास्त्र एवं अन्य साहित्य

वर्तमान युग बुद्धिवादका युग है। बुद्धिवादने विज्ञानके आलम्बनसे मानवीय मेधाको चरमोत्कर्ष तक पहुँचनेका अवसर दिया है। विज्ञान भले ही चन्द्रमा ? तक पहुंच कर वहांसे कुछ मिट्टी-पत्थर ले आये और विश्वके बुद्धिजीवी वर्गको अपनी ओर आकृष्ट करे, किन्तु आत्मज्ञानकी यात्रामें वह सदा पीछे ही रहा है तथा रहेगा। जब तक मानवताकी अवहेलना होती है, सामाजिक-सन्निपात उथल-पुथल मचाता रहता है और सौजन्य, सौशील्य और सौमनस्य किसी कोनेमें बैठ सिसकियां लेते रहते हैं तब तक विज्ञानका साफल्य नगण्य ही रहेगा। इस दृष्टिको ध्यानमें रखते हुए भारतीय महर्षियोंकी उपासना-पद्धतिको उर्वरित बनाये रखनेके लिये हम तन्त्रशास्त्र के कतिपय लोकोपयोगी विषयोंका भी प्रकाशन करते रहते हैं, और हमारा विश्वास है कि उससे हमारा पाठकवर्ग लाभान्वित हो रहा है।

साथ ही कहानी, कविता तथा अन्यान्य मनोरंजन सामग्री प्रकाशित होनेसे 'ज्योतिष्मती" हिन्दीकी पत्रिकाओंमें अपना एक अनूठा स्थान बनाये हुए है। इन सब कार्यों एव आवश्यकताओंको सफलताओंमें हमारा सर्वविध सहयोग करने वाले मनीषीवर्ग तथा पाठकवर्गका आभार स्वीकार करते हुए जगदम्बासे दीर्घायुष्य एवं सम्पन्न-जीवनकी कामना करते हैं और हमारी यह भावना है कि—

ज्योतिःशास्त्रपरम्परासतितरां सञ्जीवयन्त्यामृत-
लेंखैर्लेखविदां समुन्नतितति संवर्धयन्ती सदा।
नानाशास्त्रकथाप्रथाप्रचितिभिः पथ्यं पुरस्कुर्वती,
मातस्त्वत्करुणाकटाक्षमुदिता 'ज्योतिष्मती' जायताम् ॥

सम्पादकीय विचार—

कांग्रेसका भविष्य

**हिमालयं समारभ्य यावद् बिन्दु सरोवरम् ।
हिन्दुस्थानमिति ख्यात आद्यन्ताक्षरयोगत ॥**

दार्शनिक राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णनने २५ जनवरी १९६७ में भारत राष्ट्रको एक चेतावनी दी थी :—

"भारतकी सीमामें जो भी लोग रहते हैं चाहे वे किसी भी जाति वर्ण या सम्प्रदायके क्यों न हों भारतीय ही हैं, उनमें विचारों विश्वासों और रीति रिवाजोंका मुक्त आदान प्रदान होता रहा है। किन्तु दुर्भाग्यसे हम अभी अखिल भारतीय दृष्टिकोण विकसित नहीं कर पाये।"

भारतीयताकी भावना का अभाव यह एक राष्ट्रीय दुर्भाग्य है और यह आज भी भारत पर छाया हुआ है। कांग्रेसने इस देशमें भारतीयताको विकसित नहीं होने दिया। भारत-विभाजन स्वीकार किया, फिर हिन्दुत्वको विनष्ट किया। फलत: राष्ट्रपति-निर्वाचन-संग्राममें सोवियत रूस और कम्युनिस्ट पार्टीके उम्मीदवार श्रीगिरि विजयी हुए। उनकी विजय रूसकी विजय और भारतकी पराजय है।

श्री संजीव रेड्डीकी पराजय भारतीय राष्ट्रकी पराजय है .१५६५ में विजयानगरम् साम्राज्यका अन्त हुआ। किसने अन्त किया ? इस्लामने। बीजापुर गोलकुण्डा, अहमदनगर, बीदर और बरारके मुस्लिम राज्योंने संयुक्त होकर सम्मिलित हो चढ़ाई की। रामराया मारा गया। मारने वाला कौन था ? उसका ही सेनापति रणदुल्ला खां। राजधानी हम्पी धूलमें मिला दी गई। आज उस विनाशकी उसके अवशेष साक्षी दे रहे हैं।

१६ अगस्त १९६९को वही नाटक खेला गया। कांग्रेसके उम्मीदवारके प्रति पहले प्रधानमंत्री और उनके सहयोगियोंने विश्वासघात किया। श्री रेड्डीके शब्दोंमें 'बाड़ ही खेतको खा गयी।' किसान बिचारा क्या करे ? फिर इस्लामी तत्वों चमारों (हरिजनों) सिक्खों सब भारतविच्छेदक तत्वों और भारतएकताकी विरोधी शक्तियोंने श्री रेड्डीके विरोधमें वोट दिये और भारत-विरोधी कम्युनिस्टोंका साथ दिया। श्री गिरिकी विजय पर बंगालकी कम्युनिस्ट सरकारने एक दिन छुट्टा रक्खी, सोपारां और काश्मीरके अन्य स्थानोंमें पाक-पताका फहराई गई। काश्मीरके मुख्य मंत्रीने निस्सन्देह ईमानदारीका परिचय दिया और श्री रेड्डीको मत न देनेका कारण बताया कि उनकी विजय से काश्मीरका पृथक् विशेष अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। क्या यह इस बातको पुष्ट नहीं करता कि श्री गिरिकी विजय भारतीय राष्ट्रवादकी घोर पराजय है।

कम्युनिस्ट हैं

प्रधान मंत्री इस बातको बार-बार दुहराती हैं कि वह कम्युनिस्ट नहीं हैं। यदि वे कम्यूनिस्ट नहीं हैं तो उन्होंने श्री मेननके प्रस्तावित उम्मीदवारका समर्थन क्यों किया ? क्या श्री कोमिजिन और न्यूटाइम्सने श्री गिरिकी उम्मीदवारीका सर्व प्रथम नाम नहीं सुझाया था ? राष्ट्रपति निर्वाचन और १४ बेंकोंके सरकारीकरणके मध्य क्या कोई सम्बन्ध था ? इन दोनोंको जोड़नेका तत्र क्या कम्युनिस्ट तत्र नहीं ? क्या बैंकोंके सरकारीकरणके पक्षमें सब रैलियों और प्रदर्शनोंका आयोजन रूसी कम्युनिस्ट पार्टीने नहीं किया ? क्या भारतके चीनी कम्युनिस्टोंने आपको अपना नेता माननेके वास्ते इन्कार नहीं कर दिया कि आप रूससे

मिली हुई हैं ? क्या श्री नम्बूद्रीपादने देशाभिमानमें यह बात स्पष्ट नहीं की ?

बैंकोंका सरकारीकरण क्या अधिनायक तंत्रकी स्थापनाकी पहली सीढ़ी नहीं है ? हिटलरने क्या बैंकोंका संविधानकी सहायतासे राष्ट्रीयकरण नहीं किया था ? आपमें और हिटलरमें अन्तर इतना ही शेष है कि हिटलरने अपने विरोधियोंका अन्त करनेके लिए 'रीस्टाग'को आग लगा दी थी। आपने कांग्रेस अध्यक्ष पर मिथ्या आरोप लगाया। उसको मिथ्या मान कर भी आपने पद-त्याग नहीं किया। क्या यही नैतिकता है ?

आप यदि रूसके सहयात्री नहीं हैं, और कम्युनिस्ट नहीं हैं तो आपने चेकोस्लोवाकिया पर किये गए रूसी टैंक आक्रमणकी निन्दा क्यों नहीं की ? चेकोस्लोवाकियामें रूसी सेनाके ठहरनेका विरोध क्यों नहीं किया ? क्या भारतको रूसी साम्राज्यके साथ आपने बांध नहीं दिया है ? रूस-चीन सीमासंघर्षमें आपने रूसका क्यों समर्थन किया ? क्या इसका कारण आपकी रूसी भक्ति-नहीं है ?

२४ जनवरी १९६६ को आपने प्रधान मंत्रीके पदकी शपथ ली। इसके बादमें आप रूसी प्रधान-मंत्री कोसीजिनसे ६ सितम्बर ६९ तक कमसे कम बारह बार मिली हैं। मई और सितम्बरकी वार्तामें तो भारतीय दुभाषिये तकको आने नहीं दिया गया। क्या यह भारत राष्ट्रका अपमान नहीं ? यह अपमान आपने क्यों सहा ? स्पष्ट है आप रूस-भक्तिका परिचय देना चाहती थी। बैंकोंका सरकारीकरणका आप १९ जुलाई १९६९ से पहले तक सदा विरोध करती रही हैं। श्री अशोक मेहता और श्री कामराजकी कही बात क्या असत्य है ?—

क्या ९२ वर्षीय राजाजीका यह लिखना गलत है ? "भोले-भाले गरीबोंसे छल करना, उन्हें शब्दजालमें फाँसना आदि अवांछित कार्योंसे गांधी एवं नेहरूके लक्ष्यों एवं आदर्शोंकी प्राप्ति नहीं की जा सकती। नयी राजनीति अपने भाग लेने वालोंको उन्मत्त बना सकती है, किन्तु जनसाधारणके नैतिक स्तरको गिरानेके अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकती। बार-बार दोषारोपण करके किसी व्यक्ति या गुटको जनसाधारणकी दृष्टिसे गिरानेका हिटलरी ढंग केवल हिटलर-काल तक ही सीमित नहीं था, बल्कि आधुनिक राजनीतिज्ञोंका भी ब्रह्मास्त्र बना हुआ है। नयी राजनीति'के पण्डित बैंकोंके राष्ट्रीयकरण जैसे लोकप्रिय कदमका श्रेय लूटने तथा रुपयेके अवमूल्यन जैसे लोकनिन्दित कदमके लिए किसी दूसरेको बलिका बकरा बनानेमें निपुण है।" ये विचार हैं श्री अशोक मेहताके और इसलिए ध्यान देने योग्य हैं। राज्यतत्ववादियों पर काफ़ी गहरा प्रहार है मेहताजी की इस टिप्पणीमें।

कांग्रेसमें जो कुछ हुआ है, उस पर विचार करना भी अप्रसन्नतादायक है। सच पूछिए तो कांग्रेस एक असाध्य रोगकी शिकार हो चुकी है, इसलिए अब हमारी राष्ट्रीय राजनीतिको कहीं और निवास करना होगा।

'इन्सान तो बहुत कुछ चाहता है किन्तु होता वही है जो मजूरे खुदा होता है।' कांग्रेस तो स्थायी रूपसे सत्तारूढ़ रहना चाहती है, किन्तु खुदा ो यह नहीं चाहता और इसीलिए उसने कांग्रेसियोंके बीच पनपती 'फूटकी दरार' को नंगा कर दिखाया। गांधीजीने तो स्वाधीनता मिलते ही इस दलको राजनीतिक क्षेत्रसे हट जानेका सत्परामर्श दिया था, किन्तु इसने नहीं माना और उसका फल आज इसके सामने है। कांग्रेसमें फूटका उदय तो असहयोग कालमें भी हुआ था, किन्तु तब उसमें समर्थ लोग थे, जिन्होंने फूटकी दरार को चौड़ा नहीं होने दिया और दलको संभाल लिया। परन्तु आज बात और है, न तो कांग्रेसमें उतने

समर्थ आदमी हैं और न इसके सामने उतना ऊंचा कोई लक्ष्य। श्रीमती गांधी हैं जो अपने पुराने साथियों का परित्याग कर साम्यवादियों, प्रच्छन्न साम्यवादियों एव अन्य राज्यतत्त्ववादियोंके साथमें तथाकथित समाजवादका झण्डा फहराने पर तुली हैं। किन्तु **भारत कभी अपनी बागडोर साम्यवादियों या प्रच्छन्न-साम्यवादियोंको नहीं सौंपेगा। भारत बन्धन-मुक्त रहकर प्रगति करेगा।** भोले-भाले लोगोंको बहका कर श्रीमती इन्दिरा गांधी न अपना हित कर रही हैं और न देशका।

'निर्धनको धनी बनाओ

भारतकी समृद्धिके नारे लगाने, भीड़ इकट्ठी करके भाषण देनेसे या भोली भाली जनताको बहकानेसे निर्धनता दूर नहीं होगी, बल्कि इसके लिए देशका उत्पादन बढ़ाना होगा। देशके सब लोग कभी एक समान नहीं हो सकते, असमानता प्रकृतिका नियम है।

इस समय संग्राम है—राष्ट्रवाद और कम्युनिज्म के मध्य। लड़ाई है—लोकतन्त्र और अधिनायक तंत्रके बीच। कांग्रेसका निकट भविष्यमें विभक्त होना अपरिहार्य है। ये दोनों विरोधी तत्त्व एक साथ नहीं रह सकते। अगस्त १९६८ और अप्रेल १९६९ में प्रागमें क्या हुआ ? नई दिल्लीको प्राग बनाया जा रहा है। श्रीमती फिरोज गांधीने कानपुरमें कहा है—कांग्रेससे वह अपने सब विरोधियोंको निकाल देंगी जैसे १९१९ में गांधीजीने किया था। श्रीमती गांधी के एक भक्त कविने लिखा है—

"जीवनमें अपने अशान्तिको बचाते रहे,
शान्ति-दूत विश्वमें जवाहर-कनेडी थे।
बेटीने दिखा दिया तमाशा निज रोषका भी
यह भी दिखाया, कितने सहिष्णु 'डैडी' थे।
रारका जवाब दिया फौरन मुरारजीको,
सिंहनी है, जिसको समझ रहे लेडी थे।
उन मगरूरोंका गरूर किया चूर-चूर,
जिनके इशारे पर रेड्डी हुये रेडी थे।।"

आज प्रश्न है, क्या भारत रूसी साम्राज्यका एक भाग होगा और रूसकी ओरसे चीनसे लड़ेगा एवं सिन्धुसे ब्रह्मपुत्र तकके विस्तृत मैदानको रणक्षेत्र बनने देगा ? श्रीमती गांधीकी नीति एवं कार्योंने भारतको रणक्षेत्र बना दिया है। पाकिस्तानका मित्र रूस भारतका मित्र नहीं हो सकता। भारतका सबसे बड़ा शत्रु पाकिस्तान है। उसको एड़ीसे चोटी तक सशस्त्र करने वाला सोवियत रूस क्या भारतका मित्र हो सकता है ? महत्वपूर्ण स्थानों और पदों पर कम्युनिष्टोंकी नियुक्तियां क्या बताती हैं ? नेफा और लद्दाखको चीनी प्रदेश बताने वाला 'मास्को' क्या भारतका मित्र हो सकता है ?

कांग्रेस छिन्न विच्छिन्न नहीं हो रही है. वरन् भारत छिन्न-विच्छिन्न हो रहा है। पुलिस पहरेमें मतगणना होना, सन्त फतहसिंहका एक लाख 'निहंग' नई दिल्ली भेजनेका वचन देना, दंगा-फसाद करनेके लिए उद्यत ३०० नक्सलाइटोंका मतगणनाके दिन कलकत्तासे नई दिल्ली आना, चीनी कम्युनिष्ट नेता श्री प्रमोददास गुप्तका यह घोषणा करना कि श्री रेड्डी यदि विजयी हुए तो बंगालमें एक दिन 'बंद... ...' रहेगा, और अभी-अभी अहमदाबादमें हुआ अभूतपूर्व साम्प्रदायिक भयंकर दंगा क्या सूचित करता है ? देश गृह-युद्धकी ओर बढ़ रहा है। श्रीमती गांधी कम्युनिष्टोंकी सहायतासे देशको रक्त-रंजित क्रान्ति की ओर धकेल रहीं। प्रश्न है क्या २० अगस्त १९६९ के समान पुनः राष्ट्रवाद पराजित होगा ?

संस्कृत दिवस

संस्कृतमें अक्षय निधि है। भारतीय संस्कृतिका यह स्रोत है। इसका प्रचार-प्रसार करना भारत सरकारका पहला कर्तव्य होना चाहिए था। परन्तु संस्कृतका उद्धार करनेका अर्थ है. हिन्दू जातिका पुनरुद्धार करना। इस्लाम पोषक सरकारसे यह आशा कैसे की

जा सकती थी। किन्तु 'संसदीय समिति'ने शिक्षामंत्रालयको श्रावणी पर संस्कृत-दिवस मनानेको वाध्य कर दिया। नई दिल्लीमें शिक्षामंत्रालयने श्री भक्तदर्शनकी अध्यक्षतामें सनाया। प्रतीत होता था कि शिक्षा मंत्रालय 'संस्कृत-दिवस' हृदयसे मनाना नहीं चाहता था। अतः शिक्षामंत्री, डा० सुनीतिकुमार चटर्जी और श्री दिवाकरके भाषण अंग्रेजीमें हुए। वेदमंत्रोंके मंत्र पाठके साथ म्लेच्छ-भाषा अंग्रेजीका क्या कोई मेल है ? यह वेतुका काम क्या सूचित करता है ?

देशके विभिन्न कालेजों, सोलन सदृश संस्कृत-प्रेमी नगरोंमें श्रावणीके दिन संस्कृत दिवस मनानेसे संस्कृतकी रक्षा न होगी। दसवीं तक संस्कृत भाषाका एक अनिवार्य प्रश्न-पत्र रखनेसे ही संस्कृतकी रक्षा होगी। त्रिभाषा-सूत्रमें एक भाषा संस्कृत होनी चाहिए। अंग्रेजी वैकल्पिक भाषाके रूपमें पढ़ाई जाय। अंग्रेजीके रहते हुए संस्कृत कौन पढ़ेगा ?

संस्कृत दिवस सार्वजनिक रूपसे हवन यज्ञके साथ मनाया जाना चाहिए। श्रावणी पर 'संस्कृत-दिवस' वनाया जाय और इस अवसर पर चारों वेदोंका अखण्ड पाठ न होना क्या एक विचित्र बात नहीं है ?

प्रारम्भ हुआ है, इसको ही बहुत मानने वालोंकी संख्या कम नहीं है। क्योंकि इससे कुछ आशा बंधती है। पर जिस प्रकार डरते-डरते यह दिन मनाया गया, मंत्रियोंका इ से असहयोग करना, प्रधानमंत्रीका इसमें सर्वथा भाग न लेना सन्देह पैदा करता है। यह धारा आगे बढ़े, इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा-मंत्रालय 'संस्कृत' में एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करे। शिक्षा मंत्रालयमें एक संस्कृत विभाग पृथक् स्थापित किया जाय। संस्कृत-दिवस पर छात्रोंकी भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाय और अन्त्याक्षरीका आयोजन किया जाय। विजेता छात्र दल पुरस्कृत किया जाय। अभिनय हो, परन्तु कुछ विशिष्ट लोगोंके वास्ते ही नहीं, जनताके समक्ष हो। जनता इससे अनुभव करेगी कि वह जो भाषा नित्य प्रति बोलती है, वह संस्कृतसे बहुत अधिक भिन्न नहीं है।। निरक्षर भारतको यह आयोजन शिक्षित करेगा। शिक्षा मंत्रालयने सत्साहसका परिचय दिया, वेद मंत्रोंका पाठ कराया, इसके लिए वह संस्कृत प्रेमियों और भारत-भक्तोंके निकट धन्यवादका पात्र है। विश्वास करते हैं कि आगामी अशान्तिके वर्ष १९७० में और व्यापक रूपसे संस्कृत-दिवस मनानेका आयोजन किया जायगा और इसकी दशा 'शिक्षक-दि स' के समान न होगी।

मानव विजयी

"**श्रृण्वन्तु अमृतस्य पुत्राः**" भारतीय ऋषिकी वाणीको अमेरिकाने सुना और गर्वी सोवियत रूसका गर्व चूर कर दो अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री १२ जूनको चन्द्रमाके भूतल पर उतरे। मानवके चरण-स्पर्शसे चन्द्रलोक पुलकित हो उठा। रूसकी यह पराजय महत्व पूर्ण है। रूसी आर्थिक तंत्रके पिछड़ेपनका यह सूचक है। सोवियत रूस अमेरिकाके समकक्ष या उससे अधिक सैनिक शक्तिका निर्माण करते हुए सर्वप्रथम गागारिन को अन्तरिक्षमें भेजने वाला और स्पूतनिक छोड़ने वाले सोवियत रूसने अन्तरिक्ष अनुसन्धानमें अमेरिका से पराजय मान ली और चन्द्रलोकमें उतरनेका सर्व प्रथम साहस न कर सका। क्योंकि अपोलो ११ के निर्माणमें २४ अरब डालर व्यय हुआ। तीन हजारसे अधिक व्यक्ति—वैज्ञानिक तकनीकी शिल्पी डाक्टर इंजीनियर — अहर्निश काम करते रहे। भारतीय रेलें घंटा घंटा लेट चलती हैं किन्तु, अपोलो ११ के कार्यक्रममें एक मिनटका अन्तर न पड़ा। चन्द्र लोकमें उतरे अन्तरिक्ष यात्रियोंका पथ प्रदर्शन भूतलमें बने अन्तरिक्ष घरसे हुआ, यह न भूलना चाहिए। चन्द्र लोकका शासक भूतल वासी मानव ही रहा। अमेरिकाकी समृद्धि लोकतंत्रका फल है। कम्युनिस्ट तंत्र या मार्कस-लेनिनवाद गरीबीकी ओर ले जाता है। चेकोस्लोवाकिया और पूर्वी जर्मनी इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अमेरिकाके सर्वप्रथम चन्द्रमा पर उतरनेसे सोवियत रूसकी प्रतिष्ठाको गहरा धक्का लगा है। सोवि-

यत रूस इसखोई प्रतिष्ठाको पानेके लिए अपने साम्राज्यका विस्तार करना चाहता है। इसी वास्ते वह १९६९ के अन्ततक १०५० 'ए.सी.बी.एम.एस.' मिसाइल बना रहा है। सोवियत रूस साम्राज्यवाद और विश्व-शान्तिका शत्रु है। विश्व-शान्ति सम्मेलनका आयोजन वह अपने इरादों पर परदा डालनेके लिए करता है। यही कारण है कि रूसी जनसंख्याकी वृद्धि न होनेसे दुःखी हैं। चन्द्रमा पर पहुँचा अन्तरिक्ष यात्री विश्वको क्या एक प्रबल अणुबमसे भस्म कर सकेगा ? मानवके साधारण जीवनमें क्या अन्तर आएगा ? क्या बाढ़, तूफान, आंधी, भूकम्पका वह नियंत्रण कर सकेगा ? मानव जीवनको और अधिक सुखी बनानेमें किस मात्रामें सहायक होगा यह तो भविष्य बतायगा। आज तक तो यही सिद्ध हुआ है कि पुराणोंमें लिखी यह बात 'रावणका पुत्र नारायण प्रतिदिन प्रातः चन्द्रलोककी सैर करने जाता था।' सर्वथा असत्य नहीं है और काल्पनिक भी नहीं। बृटिश ऐतिहासिक टायनीने दिसम्बर १९६८ में अपोलो-८ के अन्तरिक्ष यात्रियोंके पूछने पर कहा था उनकी सफलतासे मानव जीवनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। यदि अपोलो ८ पर किया गया व्यय और श्रम समुद्र तलकी खोजमें लगाया जाता तो मानवके आहारकी समस्या सुलझ जाती। अतः कवियोंके प्रिय चन्द्रमाका विजयी मानव औत्सुक्यपूर्ण होनेका आत्म सन्तोष ही प्राप्त कर सकता है।

ज्योतिर्विज्ञान और दैवीशक्तिकी विजय

श्री वराह वेंकट गिरिके राष्ट्रपति निर्वाचित होनेकी भविष्यवाणी उनकी ग्रहस्थितिसे अनेक ज्योतिषियोंने की थी। कुछ दैवज्ञोंने उनको एक सप्ताह पूर्व बधाई पत्र और तार भी भेजे थे। ज्योतिष्मतीके गताङ्कमें एक मास पूर्व हमने इसी सम्पादकीय स्तम्भमें बिना जन्मकुण्डलीके ही गिरिके चौथे राष्ट्रपति बननेकी स्पष्ट घोषणा की थी। यह ज्योतिर्विज्ञान की विजय है। एक ज्योतिषीने प्रधान मंत्रीको बताया था कि उनके तीनों अंग्रेजीके "जी" नामाभिधेय उम्मीदवार विजयी होंगे।

श्री गुरुदयाल सिंह ढिल्लन लोकसभाके 'स्पीकर' निर्विरोध चुने गये। यद्यपि वे आज तक अपने पूर्ववर्ती श्री रेड्डीके समान 'सफल स्पीकर' सिद्ध नहीं हुए। उपराष्ट्रपति पद पर श्री गोपालप्रसाद पाठक चुने गए। प्रयागके एक वकीलका यह सम्मान है। श्री वेङ्कट वराह गिरि भी भीषण संघर्षके बाद चुने गए। विजयी उम्मीदवारोंका सादर अभिनन्दन है। नवीन राष्ट्रपति श्री गिरि यथार्थ अर्थोंमें राष्ट्रपति होनेका प्रयत्न कर रहे हैं। नई परम्परा डाल रहे हैं। १२ घंटे श्रम करते हैं। प्रतिदिन ७५००० पत्र उनको आते हैं। प्रातः प्रतिदिन एक घंटा भेंट करने वालोंको देते हैं। राष्ट्रपति भवन दूसरा शक्ति केन्द्र हो गया है। राष्ट्रपति संविधानके भीतर रहते हुए जनता के कष्टोंको दूर करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। प्रधान मंत्रीकी लोक-प्रियतामें अन्तर आ रहा है। दोनों जनताके प्रति-निधि हैं।

दोनों शनि-दशामें चल रहे हैं। दोनों शनिको सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। श्रीमती गांधी को माता श्री आनन्दमयीने सुना है एक रक्षा कवच भेजा है। श्रीश्री माँ आनन्दमयी आधुनिक सिद्ध सन्त महापुरुषोंमें एक उच्चतम दैवी विभूति हैं। जहां तक हम समझते हैं वे किसीको भी कवच यंत्रादि नहीं देतीं। हां, श्रीमती गांधीकी माता श्रीमती कमला नेहरू श्रीश्री माँ आनन्दमयीकी अनन्य भक्त थी और मातृसंस्कारवश श्रीमती गांधी भी माता श्री आनन्दमयीके श्रीचरणोंमें यदा-कदा पहुंचती हैं तो सन्तस्वभावानुसार माताजीका आशीर्वाद मिलना स्वाभाविक है। इसीको देखने वालोंने रक्षाकवच समझा हो। वह रुद्राक्ष माला पहलेसे ही धारण करती हैं। यह भी माता आनन्दमयीने दी है। प्रधानमन्त्रीने

तिरुपतिके मन्दिरको भी भेंट भेजी है। अभी उपराष्ट्रपति बननेके तत्काल बाद श्रीपाठक माताश्री आनन्दमयीका आशीर्वाद प्राप्त करने देहरादून गए थे । वहांसे फिर तिरूपति भी गए । तिरूपति वही स्थान है जहां श्रीमती गांधीको श्री नेहरू के बाद प्रधान मंत्री बनानेके लिए 'कामराज योजना' तैयार की गई थी । राष्ट्रपति भी तिरूपतिकी यात्रा करेंगे । ज्योतिषी-जगत् इस नवीन परिवर्तनका वस्तुतः हार्दिक अभिनन्दन करेगा । क्योंकि उसकी विजय हुई है। ज्योतिष शास्त्र है इसकी प्रामाणिकता इन चुनावोंने प्रमाणित और पुष्ट कर दी है। ज्योतिष-शास्त्रका आधार ईश्वर वश्वास है। कम्युनिज्म ईश्वरनिष्ठा होते हुए नहीं फैल सकता यह भी एक ध्रुव सत्य है। अतः यह विजय स्थायी होगी, यह क्या विश्वास किया जा सकता है ? परन्तु अभिनन्दनके समयमें यह प्रश्न उठाना व्यर्थ है। नूतन राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपतिका हम हृदयसे अभिनन्दन करते हैं शिव-भक्तोंकी भगवान् भोलाशंकर रक्षा करे यही हमारी प्रभुसे प्रार्थना है।

चीन रूस क्या लड़ेंगे

रूमानियाके प्रधान मंत्रीकी मध्यस्थतासे रूस और चीन के प्रधानमंत्रियोंके मध्य पेकिंगमें 'शिखरसम्मेलन' वार्ता हुई। फलतः मास्को और 'प्रवदा'का माओ विरुद्ध प्रचार भी सहसा बन्द हो गया। इससे पहले माओत्सेतुङ्गको मास्को साम्राज्यवादी शान्तिका शत्रु बताता था; कम्युनिज्म और अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारावर्गका शत्रु बताता था। पर पेकिङ्ग-वार्ताके बादसे यह अप्रचार बन्द हो गया है।

चीन और रूसके मध्य निकट भविष्यमें होने वाली लड़ाई भी क्या टल गई ? रूसने सेनाकी ६ डिवीजनें एशियाई रूसमें भेजी हैं। इनमेंसे दो डिवीजनें मंगोलियामें तैनात हैं। चीनने ६ लाख सेना बढ़ाई है। सिकियांगकी सीमा पर वह बराबर सेना भेज रहा है। रूसका कहना है कि अगस्त तक रूस चीनमें सीमा संघर्ष ८९४ हो चुके हैं। सोवियत रूस चीनी अणुबम विस्फोटोंके केन्द्रों पर हवाई हमला करनेका विचार कर रहा था। चीन लोपनारसे अणु-संस्थानको हटा कर तिब्बतकी सीमा पर ले गया है। नेपालमें नेपाल-नरेशकी छायामें चीनी कम्युनिस्ट पार्टी प्रगति कर रही है। इसमें ५०० गोरखे भी हैं। ये पेंशन पानेवाले सैनिक हैं। गुरिल्लावार करनेमें निपुण हैं, चीन इनको भारतकी सीमा पर भेज रहा है। ये चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और नक्सलवारीकी सहायता करेंगे। यू०पी० और बिहारमें इनका जाल फैल रहा है।

चीनकी इस रण नीतिको देखते हुए यह प्रतीत होता है कि चीन रूससे सिकियांग और मंगोलिया की सीमा पर या मंचूरियाकी सीमा पर न लड़ कर गंगा ब्रह्मपुत्रकी घाटीमें लड़ना चाहता है।

रूस इससे अवगत प्रतीत होता है। अतः जहां वह एक ओर पाकिस्तानको सशस्त्र कर रहा है, वहां वह भारतमें मर रही रूसी कम्युनिस्ट पार्टीको जीवित और शक्तिमान बनानेका प्रयत्न कर रहा है। श्रीमती गांधीने इस विषयमें रूसकी मदद की है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टीने केरल बंगाल और आन्ध्रमें ही नहीं अन्यत्र भी रूसी कम्युनिस्टोंका गला दबोच रखा था। श्रीमती गांधीने रूसी कम्युनिस्ट पार्टीमें नया जीवन डाल दिया। रूसी कम्युनिस्ट पार्टीका शक्तिमान् होना बताता है कि मास्को भी सिन्धुसे ब्रह्मपुत्र तक फैले मैदानमें अपने भाग्यकी परीक्षा करना उचित मानता है। भारतमें दोनोंके बीच युद्ध होनेसे दोनोंके साम्राज्य विघटित होनेसे बच जायेंगे। यह विश्लेषण यदि ठीक है तो मंगोलिया और सिकियांगमें रूस-चीनके मध्य तुमुल संग्राम होनेकी कल्पना भी क्या की जा सकती है ?

युद्ध ज्वालायें उठ रहीं हैं

पश्चिमी एशियामें जून १९६७ से ही युद्धकी आग सुलग रही हैं । परन्तु, अब उसमें ऊंची-ऊंची लपटें उठ रही है। स्वेज नहर और जोर्डन नदीके तट पर ही मुठभेड़े सीमित नहीं रही हैं। इजराइलने टैंकों और विमानोंसे मिश्रके युद्ध स्थलों पर भीषण हमला किया । मिश्रने इसके विरुद्ध संयुक्त राष्ट्रसे अपील न करके १०१ विमानोंके साथ सिनाई क्षेत्र पर बदलेमें हमला किया । क्या यह रण घोषणा है ?

रण-विशेषज्ञ मानते हैं कि अरब देशोंके पास जून १९६७ की तुलनामें टैंक तोपें विमान आदि शस्त्रास्त्र अधिक मात्रामें हैं। संयुक्त राष्ट्र पश्चिमी एशियामें शान्ति स्थापित करानेमें विफल रहा है। माओत्सेतुङ्ग की मान्यता है कि युद्ध अनेक समस्याओंको स्वतः हल कर देता है। यदि यह सिद्धान्त स्वीकार किया जाय तो पश्चिमी एशियामें युद्धकी ज्वाला धधकनेमें देर न मानना चाहिए। किन्तु प्रश्न यह है क्या दोनों पक्षोंमेंसे किसीमें इतनी सामर्थ्य है कि वह अपना उद्देश्य सिद्ध कर सके।

क्या अरब राष्ट्र इजराइलका अस्तित्व मिटाने में समर्थ होंगे ? सोवियत रूस क्या इस सीमा तक उनकी मदद करेगा ? क्या मास्को वाशिंगटन और पश्चिमी यूरोपसे पश्चिमी एशियामें हाथ मिलानेको प्रस्तुत है ?

क्या इजराईल अरब राष्ट्रोंको तेलअवीबमें आने और सन्धि वार्ता करनेके लिए वाध्य करनेकी सामर्थ्य रखता है ? क्या रूसी मिसाइलका जबाव उसके पास है ? इजराइल युद्ध नहीं चाहता, परन्तु यह उसके चाहने या न चाहनेका प्रश्न नहीं है । इस्लामके जीवन और प्रतिष्ठाका प्रश्न है। धर्मान्धता विवेकसे काम नहीं करती। इस्लामका गर्व एक बार धूलमें मिल चुका है, अतः मिश्र लड़ेगा और शीघ्र लड़ेगा। उसको अपने नेतृत्वकी भी रक्षा करना है। अल अजहर अन्यथा शून्य हो जाएगा। अल-अक्स मस्जिदका एक तिहाई भाग एक आस्ट्रेलियन ईसाईने जला दिया। इस्लामके भड़कनेके लिए यह पर्याप्त है। धर्मान्ध इस्लाम अरब इजराइल युद्धको 'इस्लाम-ज्यू' युद्धमें परिणत करना चाहता है। इसमें भारत सरकार और भारतीय इस्लाम सबसे आगे है। श्रीमती गांधीका इस्लाम प्रेम और इजराइल विद्वेष इस समय तीव्रतम स्तर पर पहुंच गया है। तटस्थता नीतिका अन्त हो गया है। प्रसन्नताकी बात यही है कि शान्त भारतीय जनता विचलित नहीं हुई। मस्जिद १९६४ में भी जली थी, किन्तु तब जोर्डन जेरुसलेमका स्वामी था। तब कोई मुसलमान नहीं बोला तब शायद यह मस्जिद तृतीय स्थानकी नहीं रही थी। अब जेरुसलेम इजराइलके अधिकारमें है, अतः उससे जेरुसलेम छीननेके लिए ५०करोड़ मुसलमानोंको एक किया जा रहा है। विचित्र बात यह है कि 'अल अक्स' मस्जिदके एक भागके जलनेसे भारतीय मुसलमान ही केवल प्रक्षुब्ध हुए हैं और आन्दोलित हैं। मलेशिया हिन्देशिया पाकिस्तान तुर्की ईरान मध्य एशियाके मुसलमान मौन ही हैं। मोरक्को और अलजीरिया भी मौन है। ट्यूनिशिया भी चुप है। भारतीय इस्लाम कितना धर्मान्ध और विवेक शून्य है क्या यह इसका प्रमाण नहीं है ? अणु युगमें मस्जिदके एक भागके जल जाने पर जिहादकी पुकार लगाना क्या अर्थ रखता है ? विश्व इस्लाम परिषद बुलानेका विचार, विचार ही रह गया है। अतः अल-अक्स मस्जिदके जलनेसे पश्चिमी एशियामें होने वाला युद्ध अधिक शीघ्र न होगा। अक्तूबरके अन्त और नवम्बरके प्रारम्भमें सम्भवतः युद्धकी ज्वाला धधके। धधकेगी अवश्य। और १९६९ की समाप्तिसे पहले ही मिश्र खुजलाहट दूर करनेको उत्सुक है। समय इधर उधर हो सकता है, पर जब तक मिश्र और सीरियाकी

खुजली शान्त नहीं होती इजराइल भी सुरक्षा और नीश्चिन्तताका जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। अतः इजराइल महिला प्रधान मंत्रीको युद्ध करना पड़ेगा। इजरायली पार्लमेंटका चुनाव इसमें बाधक न होगा, विलम्बका कारण हो सकता है। भारत इसकी ज्वालाओंकी आंचकी तपनसे बचा रह सकता है यदि साम्प्रदायिकताका परित्याग कर दे। क्या यह सम्भव है ?

सीमान्त गांधी

सीमान्त गांधी अब्दुल गफ्फारखांका क्या भारत स्वागत करनेके योग्य रह गया है ? कांग्रेस नेताओंके विश्वासघातके कारण सीमान्त गांधीको निरन्तर बीस वर्ष पाकिस्तानकी जेलोंमें रहना पड़ा। सीमा प्रान्त यदि आज भारतमें नहीं है, पाकिस्तानका एक भाग है तो कांग्रेसकी मूर्खता और भीतिके कारण। सीमान्त गांधी पख्तूनिस्तान चाहते हैं। क्या भारत पख्तू निस्तानकी स्थापनामें मदद नहीं कर सकता ? वियतनामके तिए गलियोंमें हल्ला करने वाले पख्तूनिस्तानका झण्डा कभी नहीं उठाते। क्यों नहीं ? स्वतंत्रतासे अधिक उनको पाकिस्तान अधिक प्रिय है। सीमान्त गांधीका यदि भारत वस्तुतः सम्मान करना चाहता है तो उसको पाकिस्तानका अन्त करनेका प्रण करना चाहिए। सीमान्त गांधीको थैली नहीं वरन्पख्तूनिस्तान चाहिए, यह क्या हम भूले रहेंगे ? हम खुदाई खिदमतगार नेताका भारतमें हार्दिक स्वागत करते हैं।

तन्त्र साहित्य : एक विहंगावलोकन

[डा० रुद्रदेव त्रिपाठी, एम.ए., पी-एच.डी., दिल्ली—६]

सामान्य धारणा—

तन्त्रोंके विषयमें अनेक भ्रम व्याप्त हैं। हम अशिक्षितोंको छोड़ दें, तो भी शिक्षित-समाज तन्त्र की वास्तविक भावनासे दूर केवल भ्रान्त-धारणाओं के आधार पर इस साहित्यको जादू-टोनेका साहित्य ही मानता है। तन्त्रोंकी उदात्त भावना एवं विशुद्ध आचार-पद्धतिसे परिचित न होनेके कारण ही आज अधिकांश व्यक्ति या तो उससे घृणा करते हैं या उसमें कुछ ऐसी बातोंको खोजते हैं जो कतिपय तुच्छ स्वार्थोंकी पूर्तिमें सहायक बनती हों।

'तन्त्र' शब्दका अर्थ—

शैवागमोंमें तन्त्र-शब्दार्थको स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि—

सर्वेऽर्था येन तन्यन्ते त्रायन्ते च भयाज्जनान् ।
इति तन्त्रस्य तन्त्रत्वं तन्त्रज्ञाः परिचक्षते ॥

'अर्थात् जिसके द्वारा मन्त्रके अर्थोंका विस्तार-पूर्वक निरूपण किया जाय और मनुष्योंकी भयसे रक्षा की जाय वही तन्त्र हैं।' तन्त्र शब्दका व्यापक अर्थ है—शास्त्र, सिद्धान्त, अनुष्ठान और विज्ञान। इसीका द्वितीय नाम है 'आगम'। तन्त्र और आगम पर्यायवाची कहे जा सकते हैं। आगमशास्त्र उसे कहा जाता है जिससे भोग और मोक्षके उपाय बुद्धि में आएँ।

देवताओंके स्वरूप, गुण, कर्म आदिका जिसमें चिन्तन हो और पटल, कवच, सहस्रनाम तथा स्तोत्र इन पांच अङ्गोंवाली पूजाका जिसमें विधान हो उसे तन्त्र-ग्रन्थकी संज्ञा दी जाती है। तन्त्रोंमें पञ्चमकारादि अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनका रहस्यार्थ गुरुगम्य है। वाममार्गका भी यही रहस्य है। ऐसे शब्दोंको ही लक्ष्य करके कुछ लोग इस साहित्यकी निन्दा करने लगते हैं, जो सर्वथा अनुचित है।

तन्त्र-साहित्य अति प्राचीनकालसे चला आ रहा

है। इसमें भारतीय विभिन्न सम्प्रदायोंके उदयके साथ ही उदित विविध तन्त्र-सम्प्रदायोंने भी सर्जन प्राप्त किया है। कतिपय विद्वानोंकी यह भी धारणा हैं कि वेद-वेदाङ्गके अध्ययनमें उपेक्षित शूद्रादि वर्गके लिये तन्त्र-ग्रन्थोंका प्रणयन हुआ होगा !

तन्त्र ग्रन्थ—

तन्त्र-ग्रन्थोंका प्रणयन कब-कहां सर्व-प्रथम हुआ ? यह प्रश्न भी आज तक अनुत्तरित ही है । कुछ विद्वानोंका मत है कि सर्वप्रथम बंगालमें और साथ ही साथ काश्मीरमें इसका आलेखन आरम्भ हुआ होगा ! आज भारतकी स्वतन्त्रताके पश्चात् विद्वानों का यह दायित्व है कि वे इसके यत्र-तत्र बिखरे हुए साहित्यको संगृहीत करें तथा इसकी ग्रन्थ-सम्पदाको संकलित कर विशृंखलित कड़ियोंको जोड़ें।

उपलब्ध तन्त्रग्रन्थोंमें मुख्यत: ४ बातें प्रमुख हैं—

१—ज्ञान, २—योग, ३—क्रिया तथा ४—चर्या। इनमें प्रथम **ज्ञान**—विभागमें दर्शनके साथ ही मन्त्रोंके रहस्यात्मक प्रभावका वर्णन किया गया है । यन्त्र और मन्त्र भी इसीमें आ जाते हैं । **योग** विभागमें समाधि और योगके अन्यान्य अङ्गोंकी चर्चा प्रमुख है तथा साथ ही यह भी दिखाया गया है कि योगके अभ्याससे अलौकिक सिद्धियोंकी प्राप्ति सहज ही हो जाती है । **क्रिया**—विभागमें मूर्ति-पूजाका विधान प्रमुख है। मूर्ति और मन्दिरका निर्माण तथा इनकी प्रतिष्ठाका विधान भी इसमें सम्मिलित है। **चर्या**—विभागमें उत्सव, व्रत एवं सामाजिक अनुष्ठानोंका विवरण प्रस्तुत है। इस प्रकार तन्त्र ग्रन्थोंको विषयगत व्यापकता दर्शनीय है । इतना ही नहीं, इन ग्रन्थोंका दार्शनिक दृष्टिसे अनुशीलन करने पर तीन प्रकारके विमर्श प्रतीत होते हैं यथा --१—द्वैत-विमर्श, २—अद्वैत-विमर्श तथा ३—द्वैताद्वैत-विमर्श । देवता-भेदसे भी इसके अनेक भेद हैं, जिनमें बहुचर्चित हैं—१—वैष्णवतन्त्र, २—शैवतन्त्र, ३—शाक्ततन्त्र, ४—गाणपत्यतन्त्र, ५—बौद्धतन्त्र और ६—जैनतन्त्र आदि। अवान्तर भेदोपभेदोंके कारण इनमें भी कई शाखा-प्रशाखाएं बनी हुई हैं । व्यवहारमें वैष्णवतन्त्रको 'संहिता' कहते हैं। शैवतन्त्रको 'आगम' कहा जाता है तथा शाक्ततन्त्र की 'तन्त्र' संज्ञा है। इसी लिये लोकमें 'तन्त्र' का अर्थ 'शाक्त' आगमोंकी 'साधना पद्धति' ऐसा प्रचलित है।

१—वैष्णव तन्त्र—

इस तन्त्रमें '**पांचरात्र**' की प्रमुखता है । पांचरात्र संहिताओंकी सूचीके अनुसार इसके ग्रन्थोंकी संख्या २०० से अधिक है। इनमें कुछ ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं। इनकी रचनाका काल पांचवें शतक से सोलहवें शतक तकका माना जाता है। इसका महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ '**अहिर्बुध्न्य संहिता**' है। इसमें नारद जी शिवसे प्रश्न करते हैं तथा शिवजी उसका उत्तर देते हैं । ग्रन्थके वर्ण्य विषयोंमें—धर्म, दर्शन वर्णाश्रम, अक्षरोंकी दार्शनिक अभिव्यक्ति, दीक्षावर्णन, मन्त्र, यन्त्र, चक्र, योग तथा युद्धमें विजय प्राप्त करने वाले विधानोंकी प्रधानता है । इन सबका वर्णन समीक्षात्मक-शैलीसे किया गया है । ईश्वरसंहिता, पौष्कर-संहिता, परमसंहिता, सात्वतसंहिता, बृहद्ब्रह्मसंहिता, ज्ञानामृतसार आदि संहिताओंकी रचना उपर्युक्त कालकी प्रमुख देन हैं । ज्ञानामृतसारसंहिता '**नारद पंचरात्र**' के नामसे प्रकाशित है। इसमें कृष्ण और राधाके सम्बन्धमें विस्तृत चर्चा है। सभी प्राणियों पर एकाधिपत्य प्राप्त करनेके लिए पाँच दिन का अनुष्ठान करनेसे इसका नाम पाञ्चरात्र पड़ा है। इसमें भी आज अनेक सम्प्रदाय प्रचलित हैं। लोग दीक्षित होते हैं तथा पारम्परिक साधना द्वारा स्व-पर कल्याणमें व्यस्त रहते हैं।

२—शैवतन्त्र

शैवागम-साहित्य अतिविस्तृत है, क्योंकि इसमें सिद्धान्तशैव, वीरशैव, जंगमशैव, रौद्र पाशुपत, कापालिक, वाम, भैरव आदि अनेक अवान्तर भेद हैं।

अद्वैतदृष्टिसे शैवसम्प्रदायमें त्रिक अथवा प्रत्यभिज्ञा और स्पन्द प्रभृति विभाग हैं। अद्वैतमतमें भी शक्तिकी प्रधानता मानने पर स्पन्द महार्थ, क्रम इत्यादि भेद प्राप्त होते हैं। १० शैवागम और १८ रौद्रागम प्रसिद्ध हैं। यह भी कहा जाता है कि परमशिवकी पाँच शक्तियाँ चित्, आनन्द ज्ञान, इच्छा और क्रिया हैं। इसीलिए उन्हें पञ्चवक्त्र कहते हैं। उनके पांच मुखोंके नाम ईशान, तत्पुरुष, सद्योजात, वामदेव और अघोर हैं। इन्हीं पाँच मुखोंसे निकली वाणियोंके प्रस्तार-विस्तार से १० सात्त्विक आगम १८ रौद्रागम तथा ३८ भैरवागमोंकी उत्पत्ति हुई है। इनमें भेदप्रधान अवस्थासे १० सात्त्विक आगम, भेदाभेद प्रधान रूपसे १८ रौद्रागम तथा अभेद प्रधानरुपसे ६८ भैरवागमोंका आविर्भाव हुआ है। सम्मोहन-तन्त्रमें बाईस भिन्न-भिन्न आगमोंकी चर्चा है। इनमें चीनागम, कापालिक, अघोर जैन तथा बौद्ध आदि आगमोंकी भी चर्चा है। इनमें पाशुपत, सिद्धान्ती और प्रत्यभिज्ञादर्शन प्रसिद्ध एवं प्रधान हैं। पाशुपत सम्प्रदायकी प्रसिद्धि किसी समय पश्चिम भारतमें अधिक थी। सिद्धान्ती सम्प्रदायका स्थान दक्षिणमें है। प्रत्यभिज्ञा दर्शनका केन्द्र काश्मीर है।

किसी समय भारतवर्षमें पाशुपत-संस्कृतिका पूर्ण विस्तार हुआ था। न्यायवार्तिककार 'उद्योतकर' एवं न्याय भूषणकार 'भासर्वज्ञ' पाशुपत थे। भासर्वज्ञकी 'गणकारिका' आकारमें यद्यपि छोटी है तथापि यह पाशुपत-दर्शनके विशिष्ट ग्रन्थोंमेंसे एक है। यह पाशुपत दर्शन पञ्चार्थ - वाद - दर्शन तथा पञ्चार्थ लाकुलाम्नायसे विख्यात था। प्राचीन' पाशुपत सूत्रों' पर राशीकरका भाष्य था। वर्तमानमें इस पर कौण्डिन्य-भाष्यका प्रकाशन दक्षिणसे हुआ है। उसमें कुछ उपागम भी हैं जो 'मृगेन्द्र' और 'पुष्कर' नामसे प्रसिद्ध हैं। इन आगमोंमें-सृष्टि, प्रलय, देवपूजा, मन्त्रसाधन, पुरश्चरण षट्कर्मसाधन और ध्यानयोग, इन सात विषयोंकी प्रधानता रहती है। आगम-प्रामाण्य, शिवपुराण तथा आगम-पुराणमें और भी अनेक तान्त्रिक सम्प्रदाय भेद वर्णित हैं, वैष्णवागमोंकी अपेक्षा शैवागमोंमें पर्याप्त विस्तार पाया जाता है तथा इसीमें शाक्त सिद्धान्तोंका सम्मिश्रण होनेसे अनेक धाराएँ फैल गईं। डा० प्रबोधचन्द्र बागचीने 'स्टडीज इन द तन्त्राज'में तरतम भावसे स्थित तन्त्रोंके तीन विभाग बतलाये हैं — १—स्त्रोतो विभाग २—पीठविभाग तथा ३—आम्नाय विभाग। इनमें प्रथम विभागके तीन भेद हैं यथा — १—वाम २—दक्षिण तथा ३—सिद्धान्त। इन तीन प्रकारके शैवोंकी चर्चा 'अजितागम' की भूमिकामें 'पूर्वकारणागम' के वचनसे तथा 'नेत्रतन्त्र' के वचनसे इस प्रकार मिलती है—

वामदक्षिण—सिद्धान्तस्त्रिविधं शुद्धशैवकम्।
मूलावतारतन्त्रादि शास्त्रं यद्वामशैवकम्।
स्वच्छन्दादीनि तन्त्राणि दक्षिणं शैवमुच्यते
कामिकादीनि तन्त्राणि सिद्धान्ता इति कीर्तिताः
(२६।५६-६०)

इस प्रकार १—वामशैव २—दक्षिणशैव तथा ३—सिद्धान्तशैव ये संज्ञाएँ बन गईं। इधर 'सिद्धान्त शिखामणि' में इनका अधिक स्पष्टीकरण देते हुए एक 'मिश्र शैव' नामक प्रकार और बतलाया है।

शक्तिप्रधानं वामाख्यं दक्षिणं भैरवात्मकम्।
सप्तमातृपरं मिश्रं सिद्धान्तं वेदसम्मतम्॥

वर्तमान समयमें तन्त्रोंके वाम और दक्षिण ये दो मार्ग मिलते हैं। इनमें वाम मार्गका तात्पर्य पञ्चमकारसे न हो कर 'नित्याषोडशिकार्णव' के अनुसार 'वामावर्तेन पूजयेत्' (१।१७८) इस पर की गई सेतुबन्ध टीका 'सव्यापसव्यमार्गस्था (श्लो० २२०)इस ललितासहस्र-नामके सौभाग्यभास्कर व्याख्यान द्वारा प्रतिपादित पूजनका प्रकारविशेष है। इन शैवागमोंके वक्ता, अनुवक्ता, श्रोता, श्लोकसंख्या तथा २०७ उपागमोंकी चर्चा पाण्डिचेरीसे प्रकाशित 'भैरवागम' प्रथम भागमें

देखनी चाहिये। 'अजितागम' में भी इस विषय पर पर्याप्त विचार किया गया है। इस विषयके प्रधान ग्रन्थ —मूलावतार तन्त्र, स्वच्छन्द तन्त्र, और कामिकतन्त्र आदि हैं।

३—शाक्ततन्त्र

तन्त्रोंके पूर्वोक्त तीन विभागोंमें प्रथम स्रोतोविभाग शैवोंका, द्वितीय पीठ विभाग भैरव तथा कौलमार्गानुयायिओंका और तृतीय आम्नाय विभाग शाक्तोंका है। शाक्ततन्त्रका विस्तार पूर्वोक्त दोनों तन्त्रोंकी अपेक्षा और भी विस्तृत है। 'तन्त्र सद्भाव' में तो यहाँ तक कहा गया है कि—

सर्वे वर्णात्मका मन्त्रास्ते च शक्त्यात्मकाः प्रिये।
शक्तिस्तु मातृका ज्ञेया सा च ज्ञेया शिवात्मिका॥

इसके अनुसार मातृका और वर्णसे निर्मित समस्त वाङ्मय ही शिवशक्त्यात्मक है। शक्तिके विभिन्न रूप और उपासनाके विविध प्रकारोंके कारण इसके साहित्यका प्रमाण बताना नितान्त कठिन है। अतः हम यहाँ केवल 'त्रिपुर-सुन्दरी' की उपासना और इससे सम्बद्ध 'कतिपय ग्रन्थोंकी ही चर्चा करेंगे।

'सौन्दर्यलहरी' के टीकाकार 'लक्ष्मीधर' ने त्रिपुरोपासनाके तीन मतोंकी चर्चा की है १—कौलमत, २—मिश्रमत और ३—समयिमत। इनमें कौलमतके ६४ आगम 'नित्याषोडशिकार्णव' में दिखाये गये हैं। जिनमें १—५—महामाया, शम्बर, योगिनी, जालशम्बर तथा तत्त्वशम्बर ये पाँच तन्त्र हैं। ६—१३—स्वच्छन्द, चण्ड क्रोध, उन्मत्त, उग्र, कराली, झङ्कार, शेखर और विजय ये आठ भैरवके तन्त्र, १४—२१ बहुरूपाष्टक, शक्ति-तन्त्राष्टक, २२—ज्ञानार्णव, २३—३० ब्रह्म, विष्णु, रुद्र, जयद्रथ, स्कन्द, उमा, लक्ष्मी और गणेश-यामल ये आठ यामल, ३१ चन्द्रज्ञान, ३२—मालिनी विद्या, ३३—महासम्मोहन, ३४— महोच्छुष्मतन्त्र, ३५—३६—वातुल और वातुलोत्तर, ३७—हृद्भेदतन्त्र, ३८—मातृभेदतन्त्र, ३९—गुह्यतन्त्र, ४० कामिक, ४१—कलावाद, ४२—कलासार, ४३—कुब्जिकामत, ४४—मतोत्तर, ४५—वीणाख्य ४६,४७—त्रोतल और त्रोतलोत्तर ४८ पञ्चामृत, ४९—रूपभेद, ५०—भूतोड्डामर, ५१—कुलसार, ५२—कुलोड्डीश, ५३—कुल चूडामणि, ५४—सर्वज्ञानोत्तर, ५५—महापिचुमत ५६—महालक्ष्मीमत, ५७—सिद्धयोगीश्वरीमत, ५८—कुरूपिकामत, ५९—रूपिकामत, ६०—सर्ववीरमत, ६१—विमलामत, ६२—अरुणेश, ६३—मोदिनीश, ६४—विशुद्धेश्वर, इन तन्त्रोंकी गणना की हुई है। मिश्रमतानुयायियोंमें चन्द्रकला, ज्योत्स्नावती कलानिधि कुलार्णव, कुलेश्वरी, भुवनेश्वरी, बार्हस्पत्य और दूर्वासमत इन आठ आगमोंकी स्वीकृति है। समयिमतानुयायी शुभागमपञ्चकको मानते हैं। जिनमें वसिष्ठ, सनक, शुक, सनन्दन और सनत्कुमार इन पाँच मुनियों के द्वारा प्रोक्त संहिताएँ आती हैं।

उपर्युक्त मतोंके विशदीकरण, प्रतिपादन और मार्गनिर्देशनकी दृष्टिसे अनेक आचार्योंने तन्त्रग्रन्थोंकी रचना की है। परशुरामकल्पसूत्र, नित्योत्सव, वामकेश्वरतन्त्र, नित्याषोडशिकार्णव, शाक्तप्रमोद, शाक्तानन्दतरंगिणी, प्रपञ्चसार, तन्त्रालोक आदि सुप्रसिद्ध एवं संग्राह्य ग्रन्थ हैं। इनके अतिरिक्त कतिपय पूजापद्धतियाँ, स्तोत्र और उनके टीका-भाष्यादि भी पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

४—गाणपत्यतन्त्र—

गणपतिकी उपासनाको लक्ष्यमें रखकर रचे गये तन्त्र गाणपत्य तन्त्रमें आते हैं। गणपतिके-गिरिगणपति, क्षिप्रगणपति, सिद्धिगणपति, नवनीतगणपति, शक्तिगणपति, उच्छिष्टगणपति और एकाक्षरी गणपति आदिकी पूजा - उपासना शास्त्र सम्मत है। आम्नायभेदसे पूर्वाम्नायके विरिञ्चिगणपति, दक्षिणाम्नायके लक्ष्मीगणपति, पश्चिमाम्नायके विघ्नगणेश आदि की पूजा शास्त्र विहित है। इनके अतिरिक्त हरिद्रा, अर्क, दूर्वा आदिके गणपति, और विविध

काम्यकर्मों पर आधारित विविध आकृतिमूलक गणपतिकी उपासनाएँ होती हैं । गणेशपुराण इस विषयमें सकेत करता है। वैसे जो तन्त्रके मिश्र ग्रन्थ हैं उनमें तथा समस्त पूजापद्धतियोंमें गणेशकी आराधनाका विधान मिलता हैं । भारतके विभिन्न भागोंमें 'गणपत्यथर्वशीर्ष' का प्रयोग अत्यधिक प्रचलित है। जो दक्षिण-महाराष्ट्रके आचार्योंसे प्रभावित है। प्रपंचसार, शारदातिलक, मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव आदि ग्रन्थोंसे इस विषयमें विस्तृत ज्ञान उपलब्ध किया जा सकता है।

५ — बौद्धतन्त्र

भगवान् बुद्धके परिनिर्वाणके २८ वर्ष बाद सिंहलके मलय पर्वत पर पांच सत्कुलोंने बैठकर तेईस प्रार्थनाएँ कीं । उस समय भगवान् बुद्धने स्वयं गुह्यपति वज्रपाणिके रूपमें अवतार लेकर सभी तन्त्रोंका उपदेश दिया। इन तन्त्रोंको तृतीय सत्कुल राक्षस-सत्कुलने सात सन्धियोंकी शक्तिसे आकाश-कोशमें सुरक्षित कर लिया। तदनन्तर साहोरके सम्राट 'जः' को स्वप्न हुआ और उन्होंने साधना की। जिसके फल स्वरूप वाराणसीसे क्रिया तन्त्र, सिंहलके वनभागसे अनुयोग तन्त्र, ज्वालामुखीके शिखरसे चर्यायोग तन्त्र तथा उड्यानदेशसे आदियोगतन्त्रके ग्रन्थ प्राप्त हुए। ये ग्रन्थ महाआचार्य आनन्द वज्रको प्राप्त हुए तब उन्होंने इनका आलेखन किया। भारतमें आचार्य शान्तरक्षित तथा आचार्य पद्मसम्भव बौद्धतन्त्र विद्याके परमनिष्णात थे । इन्हीं आचार्योंने तिब्बतमें जाकर 'बसम्-यस्-अचिन्ता' महाविहारकी स्थापना की तथा उसकी प्रतिष्ठामें क्षुद्र देवताओं द्वारा किये गये उपद्रवोंका शमन किया। फलतः तिब्बतमें अनेक तन्त्रग्रन्थोंका अनुवाद हुआ । वज्रयान और हीनयान नामसे इनमें शाखाएँ हैं। वज्रयानके पिटकोंमें विशुद्ध मुक्तिका सहज मार्ग है इसीलिऐ यह हीनयान तथा सामान्य महायानसे अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। महाआचार्य श्रीसिंह तथा महाआचार्य हुंकारने विदेशसे आये अनेक जिज्ञासुओंको भारतमें विशुद्ध तन्त्रका ज्ञान दिया था तथा महाभिषेक किया था। तारा इस मतकी उपास्या देवी है। अब कुछ ग्रन्थ संस्कृतमें प्रकाशित भी हो चुके हैं। आचार्य पद्मसम्भवने 'बसम्-यस् मुछिम्लफू, में महान् अष्ट साधनाओं के मण्डल द्वारा वहाँके राजा और शिष्योंको अभिषिक्त कर प्रत्येकको एक-एक सिद्धिका भार दिया था। परिणामतः शिष्योंने अपने अपने कुलके अनुसार सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। इस प्रकार बौद्ध तन्त्र साहित्य के ग्रन्थ भी प्रचुरमात्रामें प्राप्त होते हैं जिनका अनुशीलन भारतमें कुछ अंशोंमें प्रचलित है।

६—जैनतन्त्र

जैनधर्मके आद्य तीर्थंकर ऋषभदेव ही जैनतन्त्र के प्रवर्तक माने जाते हैं। ऋषभदेवके पुत्र नमिनायको नागराजने आकाशगामिनी विद्या दी थी। इसी प्रकार गन्धर्व और पन्नगोंको भी नागराजने ४८ हजार विद्याएँ दी थीं। इसका वर्णन वसुदेवहिण्डीके ४ थे लम्भकमें प्राप्त होता है। विद्याओंके धारक विद्याधर होते हैं। दिगम्बर ग्रन्थोंमें ५०० महाविद्याओं तथा ७०० विद्याओंका वर्णन हैं। श्वेताम्बरोंके ग्रन्थ समवायांगमें स्पष्ट है कि विद्यानुवादमें १५ वस्तुएँ ली गई तथा जैनाचार्योंके ४ कुलोंमें एक विद्याधर कुल था। विद्याचारण मुनि और ऋद्धिवाले मनुष्योंमें पूर्वचारण होते थे। लब्धि तप द्वारा प्राप्त होती है। स्त्रीदेवताधिष्ठित विद्या जपादि साध्य तथा पुरुषदेवताधिष्ठित मन्त्र पाठ साध्य माने गये हैं। वस्तुतः तन्त्रसम्प्रदायका प्रवर्तन तेईसवें तीर्थङ्कर श्रीपार्श्वनाथ से अधिक पुष्ट रूपसे हुआ है। निशीथसूत्र एवं कुछ अन्य आगमोंमें सर्वप्रथम नमस्कार-मन्त्र और उसकी साधना पर विशेष बल दिया गया है। सूरिमन्त्र एवं अन्य कतिपय विद्याओंका उल्लेख भी इन ग्रन्थोंमें है। पञ्चमचरित्र, वसुदेव हिण्डी, त्रिषष्टि शालाका पुरुष चरित, आदि ग्रन्थोंमें विद्याओंका वर्णन है। उत्तर काल

(शेष पृष्ठ ६५ पर)

अ० भा० गुर्जरगौड़ ब्राह्मणमहासभाके १७वें महाधिवेशन पर

अजमेरमें अ० आषाढ़ शु० ७ रविवार दि. २२ जून १९६९ को

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदीका

अध्यक्षीय अभिभाषण

[गताङ्कसे आगे]

हमारा गौरवपूर्ण इतिहास एवं उत्तरदायित्व

यद्यपि ऋग्वेदके—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठा स एते संभ्रातरो वा वृधुः सौभगाय ।
युवा पिता स्वया रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥

इस मन्त्रके अनुसार मानवोंमें न कोई बड़ा है और न कोई छोटा । सब एक जैसे भाई हैं, सबका पिता उत्तम कर्म करने वाला रुद्र ईश्वर है । इन सबकी माता पृश्नि प्रकृति है । सब भाई मिलकर सौभगाय—उत्तम ऐश्वर्यके लिए प्रयत्न करें । अतः समाजवादकी स्थापना करनेमें और आर्थिक विषमता दूर करनेमें प्रत्येकका सहयोग अपेक्षित है । ब्राह्मण उनमें ज्ञान प्रधान स्थानीय होनेसे ज्ञान विहित कार्योंमें अगुआ बने और नेतृत्व करे यह भी स्वाभाविक है । 'समुदाय जितना विस्तृत होता है उतना ही नेतृत्व व्यापक होना चाहिए' इस दृष्टिसे हमारा जातीय नेतृत्व हमारे जातीय मनीषियों पर ही निर्भर है ।

गुर्जरगौड़ ब्राह्मणोंका इतिहास विश्वके सर्जक लोकपिता ब्रह्माकी मानसी सृष्टिसे प्रसूत वसिष्ठादि सप्तर्षियोंकी श्रेणिमें 'महर्षि गौतम' के कालसे अनवच्छिन्न चला आया है । उनके महनीय कार्यकलापोंमें तपःपूत जीवन तथा ब्रह्मचिन्तनकी प्रमुखताने इन्द्रकी कुदृष्टि एवं कुवासनासे बचानेके लिए उसी ब्रह्माने अपनी अपर मानस सृष्टिसे प्रसूत नारी सृष्टिके एक देह 'अहल्या' को गौतमके आश्रममें धरोहरके रूपमें रखा जाना और वर्षों तक अहल्याके द्वारा सुमन-सञ्चयादि सेवा कालमें कमनीय कोमल गात्र एवं रूपयौवन सम्पन्न दिव्य देह पर भी वासनामय दृष्टि न डालते हुए आश्रमस्थ शिष्य परम्परामेंसे ही एक साधारण तापस कन्याके रूपमें देखना गौतमकी संयम साधनाका प्रतीक बना । जिसकी परिणति ब्रह्माकी प्रसन्नता और अन्ततः उन्हें पत्नीके रूपमें स्वीकृत करनेका आग्रह किया गया और अहल्या गौतमकी धर्मपत्नी बनी, जो 'सती शिरोमणि' हमारी मातृस्थानीया हैं ।

इस उज्ज्वल आनुवंशिक अमृतधारामें प्रवहमान हमारा गौरवपूर्ण इतिवृत्त भगवान् श्रीकृष्णके गुरु महायोगी 'सान्दीपनि' की दिव्य प्रतिभासे तेजोमय बना हुआ है और ऐसे अन्यान्य अनन्य सामान्य अगणित ब्रह्मर्षियों, कर्मप्रवणों तथा जागतिक प्रतिष्ठा सम्पन्न मनीषियों द्वारा उत्तरोत्तर उज्ज्वलतम बनता जा रहा है । यह हमारे लिए पूर्ण स्वाभिमानकी बात है । किन्तु, पूर्ण आलोककी स्थिति तभी सम्भव है जब हम दीपक तलेके

अन्धेरे पर भी निगाह रक्खें और उसे उतना न फैलने दें कि वह प्रकाशको ही निगलने लग जाय । हमारी संस्कृतिकी विकाशशीलता और जातीय इतिहासकी अजस्र उज्ज्वलतामें भी यही रहस्य निहित हैं । हमारे साहसी चिन्तकोंने समय-समय पर रूढ़ियोंकी पूजा न करते हुए आदर्श और शास्त्रोंके अनुरूप धाराको प्रवहमान रखा एवं अपने उत्तरदायित्वको निभानेसे कभी मुँह नहीं मोड़ा है । आइये हम भी कर्त्तव्यकी कसौटी पर कृतित्व को कसें और उत्तरदायित्वको निभाएँ ।

प्रगतिके चरण एवं राष्ट्रसेवा

बन्धुगण ! मैं ज्योतिष-शास्त्रका अध्येता हूं और व्यक्ति, समाज, देश और विश्वके पटलपर ग्रहगणोंकी स्थितिका अवलोकन भी मेरा प्रमुख विषय है । अतए आप मुझे कहने दीजिए कि आने वाली ग्रहस्थिति क्या बतलाती है । मैंने अपने 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' और 'ज्योतिष्मती' पत्रिकाके माध्यमसे अपने ज्योतिर्गणितके आधार पर सूक्ष्म चिन्तन द्वारा देश और राष्ट्र पर आने वाली विपदाओंका संकेत दिया है । आने वाले कुछ वर्ष केवल भारतके लिए ही नहीं, अपितु समस्त विश्वके लिए महान् क्रान्तिकारक और ऐतिहासिक सिद्ध होंगे । इस आने वाले तूफानमें अपना अस्तित्व दांव पर है ।

ऐसी स्थितिमें प्रगतिके चरण बढ़ानेके साथ ही राष्ट्रकी रक्षाके लिए भी कटिबद्ध रहना है । गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभाके क्षेत्रसे आगे बढ़कर 'अखिल-भारतीय-ब्राह्मण महासंघ' का एक सुदृढ़ संघ बनाकर जनसाधारण की प्रसुप्त धमनियोंमें राष्ट्र जागरण एवं स्वधर्म संरक्षणकी प्रतप्तरक्तधारा प्रवाहित करना है । वसिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, गौतम और दधीचिकी स्वस्थ परम्पराके पुनरुजीवनके साथ ही भगवान् श्रीपरशुराम, महर्षि कौटिल्य और मिहिर-कुलके प्रतिपक्षी पुष्यमित्रके आदर्शको भी प्रस्फुरित करना है । यह सब उस जगदाराध्या माँ जगदम्बाके कृपा-प्रसादसे ही सम्भव है । आज हमारा ओज, हमारी तपःसाधना और ब्रह्मकर्म-सम्पादन जन्य शैथिल्यके कारण धूमिल हो गया है । **'इदं शास्त्रं इदं शस्त्रं शापादपि शरादपि'** का उद्घोष करने वाले ऋषि पुत्रोंकी सन्तति का आजीविकाके लिए छोटेसे छोटा हीन काम करना और पदपद पर तिरस्कार फटकार मिलने पर भी भीगे चूहेकी भांति मौन रहकर सब कुछ सहना किस मनस्वी ब्राह्मणके अन्तरको नहीं सालता होगा ?

अस्तु, इसे हम कालका दोष मानकर **'जब जागे तभी सवेरा'** समझकर अब भी आगे चरण बढाएँ । जातीय उन्नतिके साथ-साथ राष्ट्र और धर्मकी रक्षामें अपना आत्मोत्सर्ग करनेके लिए कटिबद्ध हो जांय तो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है । अवश्य ही हम अपने पूर्व गौरवको प्राप्त करेंगे । हमारे समाजमें आज भी ऐसे नर-रत्नोंकी न्यूनता नहीं है कि जिन्होंने विविध क्षेत्रोंमें अपने वैदुष्यकी धाक नहीं जमाई हो । क्या उद्योग ! क्या अधिकार ! क्या सम्पदा और क्या प्रतिष्ठा ! कौनसा ऐसा क्षेत्र है जहां अपनी जातिके बन्धु न हों ?

केवल आवश्यकता है एकीभावकी, समन्वयकी, तथा जातीय बन्धुओंके समुन्नयनकी । लेखक, वक्ता, कवि, शास्त्रज्ञ, वैज्ञानिक, चिकित्सक, उद्योगपति सभी तो हैं हमारी इस जाति-सम्पदामें । जिधर जाइये, जहां दृष्टि डालिये जाति बन्धु अपनी ओजस्विनी प्रतिभाका प्रकाश फैलानेमें व्यस्त ही मिलेंगे । अतः यह दृष्टि बनाइये कि हम एकसे अनेक बनें, बिन्दुसे सिन्धुको मूर्तिमान् बनाएँ और क्रमशः घर, परिवार, समाज, नगर, प्रान्त, देश तथा विश्वकी सेवामें अग्रसर हो जाएँ ।

आत्म निरीक्षण और समाजका सर्वेक्षण

सज्जन वृन्द ! मैंने कोटा नगरमें आयोजित गत १६वें महाधिवेशनके अवसर पर यह संकेत किया था कि सबसे पहले अपनी त्रुटियोंकी ओर देखें और हमारे समाजका सर्वेक्षण करें। उसी कथनको पुनः बलपूर्वक प्रस्तुत करते हुए कहना चाहता हूं—हम आपसमें लड़ते हैं, एक दूसरेको अपनेसे छोटा-हीन समझकर पारस्परिक कलहवश अपनी चटाई अलग-अलग बिछा बैठते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हम सब उस परमात्माकी सन्तान हैं जिसने **'अमृतस्य पुत्राः'** कहकर हमें सम्बोधित किया है । विशेषतः हम ब्राह्मण-ब्राह्मण और पञ्चगौड़ पञ्चद्रविड़ आदि भेदोंके पचड़ेमें पड़कर एक दूसरेको समझनेमें भूल करते हैं । यह सर्वथा अनुचित हैं। उचित तो यह है कि अपनी अपनी मर्यादामें रहकर एक ही वृक्षकी शाखामें अनेकताकी भांति शरीर एवं आचार-व्यवहारकी विभिन्नताके रहते हुए भी एक ही धड़कन, एक ही धर्म, एक ही राष्ट्र और एक ही उद्देश्यके पोषक हैं। भाषा और देश भेदसे हम दो नहीं, जिस समय और जिस क्षण हम यह निश्चय कर लेंगे और उठ खड़ें होंगे—निर्मत्सर होकर संगठित हो जाएँगे, तो संसारकी कोई शक्ति नहीं जो हमें अपनी उन्नतिसे रोक सके ।

'ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते' इस उद्घोषको ध्यानमें रखकर क्षुद्रतासे ऊपर उठें, क्योंकि विश्वका मंगल करनेके लिए, अन्धकारमें प्रकाश दिखानेके लिए, तप, त्याग, तितिक्षा, प्रेम और सुख शान्ति फैलानेके लिए ब्राह्मण ही आगे रहा है, आगे है और आगे रहेगा । यदि ब्राह्मण ही अनवधान रहा तो तमकी ओर बढ़ता हुआ आजका भौतिक विश्व अपनी ही रस्सीसे अपने विचारों और आविष्कारोंसे ही आत्महत्या कर लेगा । अतः ब्राह्मणको अपने सर्वस्वका बलिदान करके भी विश्वका निर्भ्रान्त पथप्रदर्शक बनकर प्रभुकी सृष्टिको बचाना होगा । यही कार्य आपको हमको और ब्राह्मण मात्रको करना है ।

दूसरी बात यह कि महासभाकी ओरसे समाजका सर्वेक्षण कीजिये । कितने स्वजातीय सज्जन साक्षर हैं, कितने निरक्षर हैं, कौन क्या करता है, कोई भिक्षावृति तो नहीं करता, सामाजिक जीवनमें कितने उच्च स्थान पर हैं और कौन संघर्ष कर रहा है ? इससे प्रत्येक परिवारकी यथार्थ स्थितिका परिचय आपको मिल जायगा । आवश्यकताके समय उसकी सहायता कर सकेंगे । शिक्षा पानेके इच्छुक प्रतिभाशाली छात्रोंको प्रोत्साहन छात्रवृत्ति आदि देकर उच्च शिक्षा दिला सकेंगे । योग्य एवं मेधावी युवकोंको विदेशोंमें शिक्षाके लिए भेज सकेंगे । सभीके दुख सुखमें समान भाग ले सकेंगे और अपने कर्तव्यपालनसे भी वंचित नहीं रहेंगे। इस दिशामें हमारे कुछ बन्धुओंने पूर्व प्रयास किया है, परिचयाङ्क निकाले हैं और डायरेक्ट्री बनानेकी योजना भी कार्यान्वयनकी देहली पर है, यह प्रसन्नताकी बात है ।

स्थायीकोषकी उपयोगिता

सज्जनों ! सभी योजनाएँ द्रव्य या धनके आधार पर ही पनपती हैं, अर्थके बिना समस्त योजनाएँ व्यर्थ हैं, अतः अब आपको सर्व प्रथम महासभाके स्थायीकोषको सुदृढ़ बनाना है । यहां भारतके कोने-कोनेसे सभी प्रान्तोंके प्रतिनिधि पधारे हैं, वे सब प्रण करें कि अपने प्रान्त और नगरोंमें जाकर स्थायीकोषके लिए धन जुटाने का शक्तिभर प्रयत्न करेंगे । हमारे गुर्जरगौड़ समाजकी संख्या बारह लाखसे अधिक बताई जाती है । इतनी बड़ी संख्याके होते हुए भी महासभाका स्थायी कोष रिक्त रहे तो यह हमारे लिए लज्जाकी बात है । हमारे शास्त्रकारोंका मत है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपनी आयमेंसे दशांश पारमार्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक, जातीय कार्यके

लिए देना चाहिए । इस युगमें दशांश न सही, प्रत्येक सम्पन्न परिवार अपनी आयका शतांश भी महासभाको देने लगे तो समाजका कल्याण हो सकता है । शिक्षण फण्डमें जब कुछ होगा ही नहीं तो मेधावी छात्रोंकी सहायता कहांसे होगी ? मानव जीवनके चतुर्विध पुरुषार्थमें धर्मके बाद 'अर्थ' का ही स्थान है और आजके निरे भौतिकवादी समयमें जिसके पास अर्थ है वही सब कार्योंमें समर्थ हो सकता है । इस युगमें ही नहीं प्राचीन कालमें भी अर्थ (धन) की महिमामें लिखा है—

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।
यस्यार्थास्स पुमाँल्लोके यस्यार्था स च पण्डितः ।।

महाकवि माघने तो यहां तक लिख दिया है—

जातिर्यातु रसातलं गुणगणास्तस्याप्यधोगच्छताम्,
शीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः सन्दह्यतां वह्निना ।
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशुनिपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम्,
येनैकेन बिना गुणास्तृणलवाः प्रायः समस्ता इमे ।।

अतः इस पुण्यक्षेत्र पर आपको महासभाके स्थायी कोष निर्माणकी सुदृढ़ योजना बनाकर उसे कार्य रूपमें परिणत करना है, तथा अर्थ प्राप्तिके साधन जुटाकर सुव्यवस्थाका प्रबन्ध करना है । महासभाके लिए प्राप्त द्रव्यका कहीं अपव्यय वा दुरुपयोग न हो इसके लिए भी पूरी सावधानी रखनी होगी । जातिकी आर्थिक व्यवस्थामें महासभाने जो भी स्थावर अथवा चल सम्पत्ति प्राप्त की है उसका भी एक स्थान पर एकीकरण हो, तथा विधिवत् कार्लालय चले जिसमें वेतनभोगी व्यक्ति कार्य करें । हिसाब प्रतिवर्ष आडिट हो, तथा मन्त्री और अध्यक्ष सम्मिलित उत्तरदायित्वका निर्वहण करें तो आज तक की अर्थके माध्यमसे हुई धांधलीका निराकरण सम्भव है ।

पदलोलुपता

भारतमें पदलोलुपता या कुरसी पर चिपके रहनेका रोग भीषण रूपमें व्याप्त है । इसी कारण राष्ट्रमें चारों ओर अशान्ति है । केन्द्र और प्रान्तके हर विधायकको मंत्रीपद पानेकी भूख है । जो इससे वंचित रहता है वह दलबदल, रागद्वेष षड्यंत्रोंमें शक्तिका अपव्यय करता है । यह रोग हमारे समाजमें भी फैलता दिखाई देने लगा है । ब्राह्मणोंको तो पद प्रतिष्ठाके मोहसे सदा अलग रहना चाहिए । मंत्री-पद या सम्मान ब्राह्मणके लिए मीठा विष है । भगवान् मनुने लिखा है—

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेद्विषादिव ।
अवमानस्य चाकांक्षेदमृतस्येव सर्वदा ।।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीने स्वतन्त्र भारतमें कोई भी पद ग्रहण नहीं किया तो क्या उनका महत्व किसीसे कम है ? यही क्यों, हमारी इस संस्थाके जन्मदाता श्रद्धेय स्व० पं० श्री रामानन्दजी तिवारी (कानपुर) ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति महासभाके लिए लगाकर जो अविस्मरणीय सेवाका आदर्श रखा है उसे कौन नहीं जानता ? परन्तु उन्होंने कभी किसी पदकी इच्छा नहीं की । पदसे निर्लिप्त रहकर जो सेवा की जाती है उसका महत्व

अधिक है। केन्द्र और प्रान्तीय मंत्रियोंको तो अर्थ लाभका लोभ है, परन्तु हमारी संस्थाके पदाधिकारियोंको तो अर्थ लाभ नहीं, उन्हें तो अपना अमूल्य समय देकर । "**सेवाधर्मः परम गहनो योगिनामप्यगम्य**':" का आदर्श उपस्थित करना है। गुर्जरगौड़ समाजका प्रत्येक व्यक्ति महासभाका अङ्ग (सदस्य) है—उनमेंसे योग्यताके आधार पर व्यवस्था करनेके लिए मंत्रि-मण्डल और कार्यकारिणी चुनी जाती है। मैं तो यही चाहूँगा कि प्रतिवर्ष निश्चित समय पर महासभाका अधिवेशन हो और उसमें अध्यक्ष मंत्री और कार्यकारिणीका नया चुनाव हो । सेवाभावी नवयुवकोंको प्रोत्साहन देकर महासभाके मंच पर लाना चाहिए। नवयुवकोंका कहना है कि—'साठ वर्षकी आयुके बाद बुढ़ापेमें बुद्धि सठिया जाती है।' प्रिय नवयुवक वर्ग ! मुझे भी यह ६०वां वर्ष चालू है, अतः मेरे जैसे लोगोंको तो बाहर रहकर गतिविधियां देखने दीजिए। सच मानिये, मैं इस पदका बिल्कुल इच्छुक नहीं था, महासभाके कर्णधारोंने बलात् मेरे निर्बल कन्धों पर यह गुरुतर भार डाला है। आप सज्जनोंके सहयोगसे ही कुछ काल तक उत्तरदायित्वको निभानेका प्रयत्न करूंगा।

कुछ तथ्यपूर्ण आवश्यकताएं

युगकी मांग और गतिके आधार पर महासभाके द्वारा चल रहे कार्य कलापोंको बल देते हुए हम उन्हें यथा-शीघ्र सुसम्पन्न बनाएँ और जो मैं सोचता हूँ कि महासभाके घटकों द्वारा ये कार्य भी होने चाहियें उनका संक्षिप्त सूचन इस प्रकार है—

(१) **ज्ञानकी रक्षा**—पूर्वजों और ऋषियोंकी विरासतकी यथा-शक्ति रक्षाके लिए अध्ययनकी प्रवृत्ति को बढ़ाना, देव-वाणी संस्कृतका ज्ञान मुख्य रूपसे बढ़ाना। संस्कृतकी जब तक महिमा है तब तक हमारे अस्तित्व की रक्षा है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमारा कोई भी बालक संस्कृत शिक्षासे वंचित न रहे।

(२) **धर्म प्रचार**—जो जाति आत्मविस्तार नहीं करती वह नष्ट हो जाती है। हमें ब्राह्मण होनेका, हिन्दू धर्मावलम्बी होनेका गर्व है, अभिमान है। इसलिए हमें उठना चाहिए, धर्मके मर्मको समझना चाहिए। ब्राह्मतेज की अभिवृद्धि हेतु स्नान सन्ध्याशील, शौचाचार सम्पन्न तथा वेदमाता गायत्रीकी उपासना करते हुए—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ॥

इस मनुमहाराजकी उक्तिको चारितार्थ करनेके लिए धर्म प्रचार एवं धर्म विस्तार करना चाहिए।

(३) **समाजकी उन्नति**—किसी समाजका उत्थान विद्या, बल, धन और शिल्पके आधार पर ही सम्भव है। यही बात आजकी लेजिस्लेशन, एडमिनिट्रेशन, फाइनेन्स और इण्डस्ट्रीके रूपमें पहचानी जा सकती है। अतः हमः 'पुष्पमूलफलाशनः' और 'वृक्षमूलतिकेतनः' होकर भी समाजकी उन्नतिमें सहयोग दे, एक दूसरेके पूरक बनें और अन्ततः हमारे राष्ट्रको सुखी और समृद्ध बनाएँ।

(४) **जन-सेवा**—आज इस हीन स्थितिमें भी ब्राह्मणका आदर है, उसकी पूजा है, उसके बिना संस्कार हो नहीं सकते। निःसन्देह यह हमारे द्वारा की गई समाज सेवाका ही मधुर परिणाम है। आज पुन आवश्यकता

है कि हम देशमें समाजवादकी स्थापनामें, गरीबी दूर करनेमें, जन जीवनका प्रतिमान ऊँचा उठानेमें, जनमानस का ज्ञान-स्तर उन्नत करनेमें अधिकसे अधिक मात्रामें योग दें।

(५) **व्यापक-संगठन**—महासभाके द्वारा जिन नगरों तथा ग्रामोंमें शाखाएँ स्थापित नहीं हुई हैं वहाँ शाखा स्थापना करना। जहां शाखाएँ तो स्थापित हैं, किन्तु किसी कारणवश गतिरोध हो गया है, अथवा शिथिलता आ गई उन्हें पुनः उज्जीवित करना, प्रान्तीय संगठनोंको बलशाली बनाना तथा अखिल भारतीय इस महासभाको एक व्यापक संगठनके रूपमें स्थिरता देते हुए पल्लवित पुष्पित और फलित करना।

(६) **अतीतका उद्बोधन**—जातीय इतिहासका व्यवस्थित संयोजन करके वर्तमानके समक्ष प्रस्तुत करना। इस दिशामें भी महासभाके मञ्चसे योजना बनी है और सम्भवतः कुछ कार्य भी हुआ है उसे मूर्त्तरूप देना।

(७) **वर्तमानका विश्लेषण**—हमारे प्राचीन इतिहासके आलोकमें उत्तरखण्डके रूपमें वर्तमान जातीय जीवनकी वास्तविकताको पुरस्कृत करना और 'नई दिशा और नये चरण' का निर्धारण करना।

(८) **नवयुवकोंमें नवचेतना**—नवयुवकोंमें पारस्परिक बन्धुत्व-भावना, छात्रोंमें सदाचार, चरित्र-निर्माण, स्वास्थ्य-संवर्द्धन एवं राष्ट्र समाज जाति सेवाकी भावनाका विस्तार करना। प्रतिभासम्पन्न मेधावी सेवाभावी नवयुवकोंको महासभामें उचित सम्मानका स्थान देकर नवचेतना लाना। नवयुवकोंको दहेज टीका आदि लिए बिना विवाहके लिए प्रेरित करना।

(९) **महिला जागरण**—पुरुषोंकी अपेक्षा हमारे महिला समाजमें आज भी शिक्षाकी न्यूनता एवं रूढि-ग्रस्तताका अधिक प्रभाव है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारे लौकिक संस्कारोंके समय अनेक असामयिक अशास्त्रीय आवेगोंका शिकार होना पड़ता है। यद्यपि हमारी अनेक माँ बहनें बहुत समयसे इस ओर जागरूक बन गई हैं और उनके द्वारा चलाये जने वाले संगठनोंमें विकासकी आभा परिलक्षित होने लगी है, फिर भी मातृशक्ति का व्यवस्थित एवं शास्त्र-सम्मत विकास अभी अपेक्षित है। भारत सदा शक्ति पूजक रहा है। महिलाएं शक्तिरूपा हैं 'स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु' कुमारी कन्याएं देवी रूपा हैं। जिस जातिमें ये देवियां और गृहलक्ष्मी महिलाएं दुखी रहती हैं वह जाति कभी समुन्नत नहीं हो सकती। भगवान् मनुने लिखा है—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाक्रियाः॥

हमारे समाजमें विधवाओंकी दशा बड़ी दयनीय है। इनका करुणक्रन्दन मिटानेका प्रयत्न होना आवश्यक है। विधवा ही नहीं, कई दम्पतियोंमें पारस्परिक कौटुम्बिक साधारण कलहमें भयंकर संघर्ष छिड़कर परित्याग (तलाक) तककी स्थिति पहुँच जाती है, जिसमें दोनोंका अहित है। क्रोधके आवेशमें अपना दोष या भूलको समझ नहीं पाते। यदि दूसरा कोई हितैषी वस्तु-स्थितिको समझानेका प्रयत्न करे तो कोई भी अपना दोष स्वीकार नहीं करता, अतः अनेक नवयुवक एवं नवयुवतियोंका गार्हस्थ्य जीवन संकटमय बन जाता है और भावी पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे अवाञ्छनीय तत्व समाजमें पनपने नहीं चाहिएँ।

(१०) **स्मृति केन्द्रोंकी स्थापना**—पुष्कर स्थित महर्षि गौतमके भव्य प्रतिष्ठानकी महिमाके अनुरूप ही यहां महाविद्यालयके संकल्पको साकारता देनेमें अग्रसर होना तथा स्थान-स्थान पर जातीय संगठनों द्वारा

स्थापित शिक्षालयों छात्रावासों, देवनिकेतनों, धर्मशालाओं, पुस्तकालयों आदिको समुन्नत बनानेके साथ जिन जिन महानुभावोंने जातीय जागरणमें अपना तन-मन-धन अर्पण किया उनके स्मृति-मन्दिर विविध रूपोंमें स्थापित करना।

(११) **रीति-नीति-निर्धारण**—सभी कार्य किसी एकके बलबूते पर सफल नहीं हो सकते। अतः सामूहिक चिन्तनके सहारे औचित्यको महत्व देते हुए विभिन्न क्षेत्रोंमें ख्यातिप्राप्त एवं सिद्धहस्त जाति बन्धुओंकी समितियां बनाकर उनकी नीति-रीतिका निर्धारण करना, तदर्थ प्रचार-प्रसार हेतु उत्तमोत्तम प्रकाशन करना, सभाएं, गोष्ठियां तथा साप्ताहिक अथवा द्वित्रिदिवसीय सत्रोंकी योजना करना। यह सब अर्थ-प्रधान कार्य हैं, अतः धन-संग्रह करना और उसकी उचित व्यवस्था करना भी हमारा लक्ष्य है।

उपसंहार

सहृदय सज्जनों! उपर्युक्त एकादश सूत्री योजनाके अतिरिक्त भी बहुत कुछ बच रहता है, जिसके लिए हम समय-समय पर सोचेंगे ही! किन्तु, यह सब तभी सम्भव है जब हम विवादोंके बादलोंको ज्ञानभानुके प्रकाश से छिन्न-भिन्न कर दें। किसी भी विप्लवके कारण अपनी एकताके सूत्रको शिथिल न होने दें। कड़ियां भले ही ढीली पड़ जाएं किन्तु, किसी भी स्थितिमें टूटने न दें। आपसी वैमनस्यको मिलजुलकर सुलझाएं और जगत्के समक्ष अपना उदात्त आदर्श प्रस्तुत करते रहें।

अन्तमें पुनः निवेदन करना चाहूँगा कि महासभाके अधिवेशनसे पहले बृहद् यज्ञ होना चाहिए। चारो वेदोंका पाठ होना चाहिए। इससे वातावरण शुद्ध पवित्र होगा। लक्ष्य हमारे सामने रहेगा। प्राचीन परम्परा भी जीवित रहेगी। तब हम मांग कर सकेंगे और स्वीकार भी करा सकेंगे कि राष्ट्रपति और मंत्रि-मण्डल यज्ञाग्निमें तीन समिधाएं डालनेके बाद शपथ ग्रहण करें। परन्तु यह तभी सम्भव है जब पहले हम करें। ऐसे ही शुभ संकल्पोंकी परिणतिके प्रयासका विश्वास लिये हुए मैं इस पुण्यभूमि एवं वीरभूमि पर आपके सहयोगकी कामना करता हूँ। तथा विनम्र आभार अभिव्यक्त करता हूं।

आदरणीय बन्धुगण!

आपकी आज्ञा पाकर जो कुछ मैंने कहा उसको आपने ध्यान देकर सुना, इसके लिए आपको पुनः धन्यवाद देता हूँ। और माँसे प्रार्थना करता हूँ कि अथर्ववेदकी यह शान्ति प्रार्थना विश्वके लिए सत्य सिद्ध हो—

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तं इदं अन्तरिक्षम्।
शान्ता उदन्वती आपः शान्ता नः सन्तु ओषधयः॥
शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम्।
शान्तं च भूतं च भव्यं च सर्वमेव अस्तु नः॥

जय गौतम! जय जातिजाह्नवी॥



ज्योतिष्मतीकी महत्ता

[ले० —आचार्य पं० श्री गोपीनाथजी गुरु सा. शा. उ. ो. क पु. भूषण, श्रीधाम वृन्दावन]

'ज्योतिष्मती'के विषयमें भौतिक तो बहुत सी गाथायें हैं। जैसे 'ज्योतिष्मती' रूढ़ि शब्द आयुर्वैदिक ग्रन्थोंमें केवलमात्र (मालकांगनी) को ही कहा गया है। भावप्रकाश निघंटु और शार्ङधर संहितामें महर्षि चरक आदिने वैद्यक शास्त्रोंमें इसके नाम गुण और प्रयोग बताये हैं, यह एक रसायन है, जो तैल और चूर्ण आदिके द्वारा प्रयोगमें आते हैं, यह अग्नि-दीपक, तेज बल बुद्धि स्मृति आदि बर्द्धक है। अन्यान्यकोशकारोंने भी 'ज्योतिष्मती' मालकांगनी को ही कहा है।

ज्योतिष्मती स्यात्कटभी ज्योतिष्का कङ्गुनीति च।
पारावतपदी पण्या लता प्रोक्ता ककुन्दनी ॥ १ ॥
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सराककसमीर जित् ।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा बह्निबुद्धिस्मृति प्रदा ॥ २ ॥

यह भावप्रकाश निघण्टुका वाक्य है। बालव्याधि आदि अनेक रोगों पर इसके प्रयोग होते हैं। (पारावतांघ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मतीलता) अमरकोषमें है। इस प्रकार वैद्यक ग्रन्थोंसे 'ज्योतिष्मती' शब्द सिद्ध हो जाता है। किन्तु ज्योतिषके ग्रन्थोंमें 'ज्योतिष्मती' शब्द अभी हमारी दृष्टिमें नहीं आया है। इससे हम लाचार हैं। संभव है किसी ग्रन्थमें किसी विषय पर आया हो। यौगिक अवश्य बन सकता है, जैसे ज्योतिष्मान् सूर्य है अग्नि है और अन्यान्य ग्रहनक्षत्र हैं। स्त्रीलिंगवाची तारा और नक्षत्रों के नाम 'ज्योतिष्मती' हो सकते हैं। आकाश गंगा और अजवीथी स्त्रीलिंग हैं, जिनमें बहुतसे तारोंका समूह है, वे 'ज्योतिष्मती' हैं। 'शिशुमारचक्र' जिसमें सब ही ग्रह नक्षत्र तारे रहकर घूमते हैं, वह ज्योतिष-चक्र है जो नपुंसकलिंग ज्योतिष्मत् हो सकता है। इधरमें ज्योतिषचक्रसे संबंधित त्रैमासिक 'ज्योतिष्मती' नामक पत्रिका है। जिसमें ज्योतिष सम्बन्धी अनेक लेख निकलते रहते हैं। ज्योतियोंकी प्रकाशक और प्रचारक है, रूप गुण नाम कर्म सब ही से सही है, श्लाघनीय प्रशंसनीय है। जिसने ज्योतिषचक्रको बहुत दूर छोड़कर पं० हरदेवजी शास्त्री श्रेष्ठ पुरुष से सम्बन्ध जोड़ लिया है, इससे वह और भी अधिक प्रशंसनीय बन गई हैं, किन्तु ये औषधीवाची तारा नक्षत्रवाची और पत्रिकावाची तीनों ही (ज्योतिष्मती) भौतिक हैं, मायिक हैं सांसारिक जीवोंको बंधनमें ही रखने वाली हैं। परन्तु बन्धनसे मुक्त करने वाली हमारी व्रजवासियोंकी जो आराध्या (ज्योतिष्मती) है, उसके भाव लोगोंको दर्शन कराते हैं।

'संमोहनतंत्र'में कहा गया है '**तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा-राधामाधवरूपकम्**' जो नित्य सत् चित् आनन्दमय अखण्ड ज्योति है, वह व्रजलीलाके निमित्त दो रूपमें प्रकट होकर व्रजवासियोंके बीचमें लीला करने लगी।

परां लीलां कर्तुं व्रजभुवि विहर्तुं समभवत्,
परं द्वेधा ज्योतिः कनकमणिभं नीलमणिभम् ।
गृहे भानोः पूर्वं समजनि परं नन्दसदने ।
गुणागाधा राधा सकल सुखसाधा भवतु मे ॥

परा उत्कृष्ट श्रृंगाररसकी लीला करनेके लिये, और व्रजकी भूमिमें विहार करनेके लिये वह अखण्ड ज्योति कनक (पीत) मणिकी आभाके समान और नीलमणिकी आभाके समान दो रूपमें प्रकट हो गई। जो पहली है वह श्री वृषभानुजीके महलमें और जो दूसरी है वह श्री नंद बाबाके सदनमें प्रकट होकर प्रकाश करने लगी। वह गुणगाधा श्रीराधा हमारी सकल सुखोंकी साधक होवें। ये हैं ज्योतिष्मान् श्री

कृष्ण और 'ज्योतिष्मती' श्रीराधा ! जो समस्त ज्योतियोंकी जनक और प्रकाशक नित्य सत् चित् आनन्दमय अखंड अनंत अजर अमर अविनाशी हैं।

यो ब्रह्म रुद्र शुक नारद भीष्म मुख्यै-
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्त शक्ति
श्रीराधिकाचरणरेणुमहं स्मरामः॥

जो ब्रह्म रुद्र शुक नारद भीष्म सनकादिक व्यास प्रभृति महापुरुषों द्वारा भी सहसा नहीं देखे गये, उस पुरुष (पुरुषोत्तम) श्रीकृष्णके लिये तत्काल ही वशीकरण करने वाले चूर्ण रूप अनन्त शक्तियों वाली श्रीराधिकाजीकी चरणधूलिका मैं स्मरण करता हूँ। उस (ज्योतिष्मती) आयुर्वैदिक रसायन रूप चूर्ण या तैल से सांसारिक किसी किसी मनुष्यका ही कष्ट निवारण हो सकता है। किन्तु इस 'ज्योतिष्मती' श्रीराधिकाकी चरणकमल रज ब्रह्माण्डनायक निर्माता श्रीकृष्णके वशीकरण करने वाली होनेसे समस्त जगत्के जीवोंका कष्ट निवारण करने वाली है। और एक ब्रह्मांडके ग्रह नक्षत्र ताराओंकी ज्योतिका अनंत कोटि ब्रह्मांडोंकी ज्योतियोंकी प्रकाशक श्रीराधिकाजी की चरण नखकी ज्योति हैं, यह हमारी ज्योतिष्मती है। जो मनुष्य इस ज्योतिष्मतीकी शरणमें आ जाता है वह सांसारिक समस्त दुःखोंसे पापोंसे बन्धनोंसे मुक्त होकरके अनंत आनन्दको प्राप्त हो जाता है।

(सवैया)

ज्योतिष्मती वह राधिका है
जाकी अंग छटा कहिबेमें न आवै।
कोटिन ज्योति हू फीकी परैं
नखकी जब ज्योति प्रकाश दिखावै।
कोटि ब्रह्माणी रुद्राणी तथा
कितनी इन्द्राणिन कोहूं लजावै।
गोपिकानाथ रहै वशमें
छवि जाकी अनेकन नाच नचावै॥

जीवनमें सुख और शान्तिके लिए :—

क्रोधसे बचिए

[लेखक :—श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार]

मैंने बहुत पहले कहीं एक दृष्टांत पढ़ा था कि एक विशाल शीशेके महलमें इधरउधरसे भटकता हुआ एक कुत्ता आ गया और हजारों शीशेमें अपने प्रति-बिम्बको देखकर और यह समझकर कि यह सब कुत्ते उसपर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे, वह उनपर भोंकने लगा। ज्यों-ज्यों वह भोंकता त्यों-त्यों उसकी ही आवाजकी प्रतिध्वनि उसके कानोंमें जोर-जोरसे आती। वह और जोरसे भौंका। सब कुत्ते अधिक जोरसे भौंकते हुए दिखाई दिये। आखिर वह क्रोधमें उत्तेजित होकर उनपर झपटा, वे भी उसपर झपटे। बेचारा जोर-जोरसे उछला कूदा, भौंका और चिल्लाया, अन्तमें गश खाकर गिर पड़ा।

उसी महलमें दूसरा कुत्ता आया। हजारों कुत्तोंको देखकर डरा नहीं, उत्तेजित नहीं हुआ। प्यारसे अपनी पूंछ हिलाई। सभी कुत्तोंकी दुम हिलती दिखाई दी। प्रसन्न होकर आगे बढ़ा। सब उसकी ओर प्रसन्नतासे आगे बढ़े। वह उछला-कूदा अपनी ही प्रतिकृतिसे खेला और उस महलसे प्रसन्नताके साथ बाहर चला गया।

संसार अपने के समान

वास्तवमें यह संसार भी कांचके महल जैसा है।

अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों पर क्रोध नहीं करते, आप चिड़चिड़ाते नहीं तो दूसरे मनुष्य भी आपसे ऐसा ही व्यवहार करेंगे और यदि इसके विपरीत आप चिड़-चिड़े हैं, उत्तेजनामें आ जाते हैं तो अन्य लोग भी आपको ऐसे ही करते हुए दिखलाई देंगे।

यही कारण है कि गीतामें कृष्णने कहा :—

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ।

अर्थात् काम, क्रोध तथा लोभ ये तीन नरकके द्वार हैं। इनको छोड़ देना चाहिए।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्रोध मनुष्यमें कैसे उत्पन्न होता है ? गीतामें इसकी भी क्रमपूर्वक व्याख्या की गई है और बताया गया है कि :—

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ।।
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।।

अर्थात् विषयोंका चिन्तन करने वाले पुरुष का इन विषयोंमें संग बढ़ जाता है। फिर इस संगसे यह वासना उत्पन्न होती है कि हमको काम (अर्थात् वह विषय) चाहिए। और (इस कामकी तृप्ति होनेमें विघ्न होनेसे) उस कामसे ही क्रोधकी उत्पत्ति होती है और क्रोधसे संमोह अर्थात् अविवेक होता है, संमोहसे स्मृतिभ्रम और स्मृतिभ्रंशसे बुद्धिका नाश और बुद्धिनाशसे) पुरुष का) सर्वस्व नाश हो जाता है।

क्रोध क्यों पैदा होता है

इसको हम इस प्रकार कह सकते हैं कि क्रोधको उत्पन्न करनेमें कुछ खास बातें सहायक होती हैं। जैसे हम दूसरोंका दृष्टिकोण समझनेकी कोशिश नहीं करते। दूसरोंके विचारोंकी, कामोंकी, भावनाओंकी आलोचना करना अपना धर्म समझते हैं। और जब दूसरोंकी बिना समझे आलोचना करते हैं उस समय हम अनापशनाप कुछका कुछ कहने लगते हैं और इस प्रकार क्रोध हमें बुद्धिच्युत करके नाशकी ओर ले जाता है। अब यदि हम न भी आलोचना करें तो भी दूसरे तो हमारी आलोचनासे बाज न आएंगे। ऐसे समयके लिए यदि हम जरा सी सावधानीसे कार्य लें तो हम क्रोधसे बच सकते हैं। हमारा आलोचक हमारी बुराइयोंको स्पष्ट ही तो कर रहा है। जो हमारी कमजोरियोंको दिखाए उससे क्रोध करनेके स्थान पर हम अपनेको सुधार भी तो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें इस क्रोधसे अपनेको दूर रखकर हमें अपने सुधारनेका प्रयत्न करना चाहिए कबीरने कहा है :—

निन्दक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय ।
बिन साबण पानी बिना निर्मल करे सभाय ।।

दादू दयालने लिखा है :—
निन्दक बाबा बीर हमारा
बिन ही कौड़ी वहे बिचारा !
अपना डूबे औरको तारे,
ऐसा प्रीतम पार उतारे ।

कटु वचनोंका प्रयोग

क्रोधका दूसरा कारण दूसरोंके प्रति कटु वचनों का प्रयोग है। क्रोध एक ऐसा भाव है कि अपने प्रति व्यवहृत होता हुआ वह हममें प्रवेश भी होता है। हमें अपने व्यवहारमें मिठास लाने का प्रयत्न करना चाहिए। वाणीकी और व्यवहारकी मिठासमें हमें एक कौड़ी भी खर्च नहीं करनी पड़ती पर करोड़ों दिलोंको जीता जा सकता है। सभीके दिल हमारे जैसे ही हैं, किसी दूसरे व्यक्तिको कष्ट पहुँचाना, उससे कडुआ बोलना शोभाकी बात नहीं। **'घट-घटमें वह साँई रमता कटुवचन मत बोलरे।'**

वेद में कहा है :—

मधुमतीस्थ मधूमतीं वाचमुदेयम् ।
(अ० १६ । २ । २)

प्रजाजनों ! तुम, मीठे स्वभावसे युक्त हों, मैं मीठा भाषण बोलूं सबको आपसमें मीठा भाषण करना उचित है, क्योंकि उसीसे अहिंसामय शांति सर्वत्र स्थापित होकर मीठे व्यवहारसे जगत् वशमें आ सकता है ।

इमर्सन और गायका बछड़ा

अमेरिकाके प्रसिद्ध लेखक इमर्सनके जीवनकी एक घटना है। उन्हें गाय पालनेका शौक था। इस लिए गाय और नन्हें बछड़े उनके मकानके पास एक कुटीमें रहते थे। एक बार जोरकी बारिश आने वाली थी। सभी गायें तो झोंपड़ीके अन्दर चली गई पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उसका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़ेको पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटीमें चला आये। पर ज्यों-ज्यों उन्होंने जोरसे खींचना शुरू किया त्यों-त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगा कर पीछे हटने लगा। ईमर्सन वड़े परेशान हुए। इतनेमें उनकी बूढ़ी नौकरानी उधरसे निकली, जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अंगूठा बछड़ेके मुँहमें प्यारसे डाल दिया और वह झोंपड़ीमें आरामसे चल दिया। बछड़ा चुपचाप कुटीके अन्दर चला गया। इस प्रकार प्रेम का व्यवहार जानवरोंको भी वशमें कर सकता है तो मनुष्यकी तो बात ही क्या ?

नेवला और बच्चा

इसके अतिरिक्त पीठ पीछे निन्दा, चोरी, असत्य-भाषण आदि अनेक दुर्गुण मनुष्यमें क्रोधसे उत्पन्न होते हैं। जब क्रोध हमारी बुद्धिका ही नाश कर देता है तो दुर्गुणोंके आनेका मार्ग साफ हो जाता है, बचपनमें एक कहानी पढ़ी थी कि एक स्त्रीने एक नेवला पाल रखा था। वह नेवला उसके परिवार के व्यक्तिकी तरह उसके व्यवहारसे बन गया था। एक दिन अपने सोते हुए छोटे बच्चेको उस नेवलेके पास छोड़कर थोड़ी दूर कुंए पर पानी लेने चली गयी। उस समय एक भयंकर गेंडचन सांप बच्चेके पास आया। वह उसे मार ही देता कि इतनेमें नेवलेने उसे पकड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और अपनी स्वामी भक्तिके प्रदर्शनके लिए पानी लेकर लौटती हुई स्त्रीके सामने पंहुचा। उसके लहु-लुहान मुखको देखकर स्त्रीने सोचा कि इसने बच्चेकी ही हत्या कर दी है। उसे क्रोध आया और क्रोधके वशमें वह घड़ा नेवले पर दे मारा। अन्दर आने पर अपने बच्चेको देखकर और सांपको मरा हुआ पाकर उसे अत्यन्त दुःख हुआ।

'मन्यु' आवश्यक है

परन्तु जहां पर क्रोध हानिकारक दुर्गुण है वहां 'मन्यु' जो क्रोधका ही एक रूप है, मानव जीवनके लिए आवश्यक है। यही कारण है यजुर्वेदमें तेज, वीर्य, बल, ओज और सहनशीलताकी प्रार्थनाके साथ साथ 'मन्युसि मन्यु मयिधेहि' में मन्युकी प्रार्थना भी की गई है। यदि मनुष्यमें मन्यु न हो तो संसारमें अनाचारी व्यक्तियोंका साहस बढ़ता जायेगा, दुराचारी व्यक्ति अपने दुराचारोंका खुलकर प्रयोग करेंगे। यह मन्युका भाव ही है जो सुधार और नियंत्रणके लिए, बालकोंके लिए अत्याचारियोंके अत्याचारके दमनके लिए प्रयुक्त होता है। यह मन्युका भाव ही था जिसने रामको बालीके वधके लिए प्रेरित किया। जिसने रामको समुद्र पर पुल बांधनेकी प्रेरणा दी, जिसने राक्षसोंके संहारके लिए रामको हाथमें धनुष धारण करनेका बल दिया। स्वामी दयानन्द महाराजके जीवनमें 'मन्यु' के अनेक उदाहरण मिलते हैं, मन्युके कारण ही उन्होंने कर्णसिंहकी तलवार तोड़ी. मन्युके कारण ही उन्होंने दो गुंडोंको पकड़ पानीमें डुबकियां दिलाई।

माता, पिता और अध्यापक भी अपने बच्चों और शिष्योंके प्रति मन्युका उपयोग करते हैं। यह मन्यु जब क्रोध या प्रतिशोधका रूप धारण कर लेता है तब यह विकृत और हेय हो जाता है। इसलिए अपने जीवनको अपने ध्येयको यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो यह निश्चय कीजिए कि हम अपनी सभी ताकत लगा कर अपने मनसे क्रोधके दुर्गुणको निकाल देंगे और जीवनको मधुरतम बनानेका प्रयत्न करेंगे। क्रोध मनुष्यका शत्रु है। क्रोध रूपी जो आग हम अपने शत्रुके लिए अपने हृदयमें जलाते है वह प्रायः अपने शत्रुसे अधिक आपको जलाएगी।

क्रोधसे मृत्यु

यह भी ध्यान रखनेकी बात है कि क्रोधके विषयमें एक परीक्षा की गई और उसके द्वारा यह सिद्ध हुआ कि क्रोधमें जो श्वास निकलते हैं उनको इकट्ठा करके इंजेक्शन तैयार किए जाएं तो उससे कई सूअरोंकी मृत्यु हो सकती है। सचमुच यह क्रोध ममुष्यको नष्ट करनेके लिए कभी अकेला नहीं आता। शत्रुता बुरा बर्ताव, जलन, घबराहट, मार बैठना, घृणा, कठोरता, परेशानी, उद्वेग ये क्रोधके भाई बन्द हैं। क्रोध निमंत्रण पाकर इनके साथ आता है। एक व्यापारीने उस क्रोधको जिसने उसके व्यापारको नष्ट करनेका संकल्प कर लिया था, क्रोध पर विजय प्राप्त करनेकी कहानी इस प्रकार लिखी है—"मैं अपनी इच्छासे अधिक ईश्वरके आदेशोंसे प्रीति करने लगा, उनका पालन करने लगा, अपने कार्यको शांतिपूर्वक और धैर्यपूर्वक करने लगा। अपने आलोचना, घृणा, स्वार्थ, बदलेकी भावना, घमण्ड, कठोरताको मैंने दूरसे त्याग दिया। मैं शांतिसे रहने और सबके सामने झुक कर चलने लगा। ईश्वरने मेरी सहायता की। उसने क्रोधकी अग्निसे निकालकर शांतिके झरनेके निकट लाकर बिठा दिया। क्रोध दुःख और दरिद्रता कठिनाइयां और परेशानियां पैदा करता है। अतः क्रोधसे बचनेके लिए जब क्रोध आने लगे तो एकसे दस तक गिनती गिनिए। ठण्डा पानी पीजिए। क्रोध क्यों तुमको आ रहा है ? तर्क कीजिए। आप स्वयं शांत होंगे।

"तृतीयः कामः"

[लेखकः—पं० श्री चन्द्रभूषणजी शास्त्री काव्यतीर्थ, चित्तौड़गढ़ राजस्थान]

यः शास्त्र विधिमुत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ॥
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तु मिहार्हसि॥॥

(श्रीमद्भगवद्गीता)

काम और कर्म दोनों ही भिन्न-भिन्न वस्तु हैं। मानव जीवनके मुख्योद्देश्य चार भागोंमें विभाजित हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें चारों ही उतरोत्तर गुरुतम माने गये हैं। धर्म, अर्थ, कामको त्रिवर्ग कहा है—इस त्रिवर्गके सम्पादनके लिये शास्त्रोंमें जगह-जगह आदेश दिये गये हैं, क्योंकि इस त्रिवर्गकी साधना किये बिना मोक्षसिद्धि अत्यन्त कठिन है। "स मोक्षस्तु चतुर्वर्गः" मोक्षको संयुक्त करने पर चतुर्वर्ग बनता हैं। इनकी साधना ही मनुष्य जन्मका मौलिक हेतु है। एतदर्थ ही धर्मशास्त्र, पुराण-महापुराण, इतिहास श्रुति स्मृति वेद वेदान्त उपनिषद् आदिकी रचनायें हुई हैं। विषय नितान्त गूढ़ है जिसका विस्तृत विवेचन आजका विषय नहीं है। वर्तमानमें स्वर्गोपम भारत देशकी दशा दिनोंदिन गिरती जा रही है। इसका एकमात्र मुख्य कारण उक्त चतुर्वर्गके शास्त्रोंका-अध्ययनका अभाव ही कहना

पड़ेगा। न वह आश्रम व्यवस्था है, न वैसी शिक्षाका ही कहीं प्रसंग है। काम विषयको तो मानो चतुर्वर्गसे विच्छिन्न ही कर दिया है। यह निश्चय है कि शास्त्रीय नियन्त्रण नहीं रहनेसे आजका समाज नैतिकतासे पराङ्मुख होकर उच्छृंखलताकी ओर बढ़ता जा रहा है। बहुत वर्षोंसे चतुर्वर्गका सही अध्ययन शास्त्रीय पद्धतिके अनुसार नहीं रहा है और काम शास्त्रके तो ग्रंथ ही धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। हमें—इस वर्गसे घृणा नहीं करनी चाहिए। इसमेंसे सदोष भाग हो तो उसे निकाल देनेमें विरोध नहीं है। भगवान् स्वयं आज्ञा करते हैं।

"धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभः।"
(गीता)

किन्तु बिना शास्त्रीय ज्ञानके कौनसा वर्ग सिद्ध हो सकता है। खेद है कि आज जितने ग्रंथ धर्म-मोक्ष के उपलब्ध हैं उतने काम शास्त्रके नहीं।

मैं कुछ दृष्ट, श्रुत-उपलब्ध व अनुपलब्ध ग्रंथोंकी सूचि नीचे दे रहा हूँ। किसी महानुभावके पास अनुपलब्ध ग्रंथ हों या इस सूचिके अतिरिक्त भी हों तो नाममात्रसे स्थान-समय व लेखकके संकेतके साथ हमें सूचित करनेका अनुग्रह करें।

कामशास्त्रसम्बन्धित ग्रन्थ

१. कामसूत्रम्—वात्स्यायनकृतम्
२. रतिरहस्य—कोक्कोककृत
३. नागरसर्वस्व—बौद्ध पद्मश्रीकृत
४. अनङ्गरङ्ग—कल्याण मल्लकृत
५. पञ्चशायक—ज्योतिरीश्वरकृत
६. शृंगार दीपिका—हरिहरकृत
७. अनङ्ग तिलक—अज्ञात-लेखक
८. अनङ्ग दीपिका ,, ,,
९. अनङ्ग शेखर ,, ,,
१०. रति शास्त्र—नागार्जुनकृत
११. काम समूह—अनन्त कृत
१२. अष्ट नायिकादर्पण—भगवत्कृत
१३. ईश्वर कामितम्—अर्जन देव रचित
१४. कलावाद—गौरीकान्त कृत
१५. कलाविधिः—लेखक अज्ञात
१६. कलाशास्त्रम्—कोक्कोक कृतम्।
१७. काम प्रकाशः—ले० अज्ञात
१८. काम प्रदीपः—गुणाकर कृत
१९. काम प्रबोधः—अनूपदेव रचित
२०. काम रत्न—नित्यनाथ कृत
२१. काम शास्त्र—वामन कृत
२२. कामशास्त्र निरूपण—माधव कृत
२३. कामसारः—कामदेव कृत
२४. कौतुकमञ्जरी—लेखक अज्ञात
२५. कामपद्य मुक्तावली ,, ,,
२६. कन्दर्प चूड़ामणि ,, ,,
२७. रसचन्द्र—धासीरामकृत
२८. मदनसंजीवनी—ले०—अज्ञात
२९. मदनार्णव— ,, ,,
३०. मदनोदयः—दामोदर गुप्त
३१. योग रत्नावली—शार्ङ्गधर कृत
३२. रतिमञ्जरी—जयदेव कृत
३३. रति रहस्य—विद्याधर कृत
३४. शृङ्गारबन्धुदीपिका—हरिहर कृत
३५. रतिरहस्य दीपिका—कांचीनाथ कृत
३६. रतिरहस्य व्याख्यानम्—रामचन्द्रसूरि कृत
३७. रतिविलास—मङ्खककविकृत
३८. रति संग्रह—ले० अज्ञात
३९. रति सर्वस्व— ,, ,,
४०. रतिसारः— ,, ,,
४१. रस चन्द्रिका—विश्वेश्वर रचित
४२. रस विवेक—ले० अज्ञात
४३. वाजीकरण तन्त्र— ,,
४४. वात्स्यायन सूत्रसार—क्षेमेन्द्रकृत
४५. वेश्यांगना कल्प—ले० अज्ञात

४६. वेश्यांगनावृत्तिः— ले० अज्ञात
४७. शृङ्गार पद्धतिः—शारङ्गधरकृत
४८. शृङ्गार मद प्रदीप—ले० अज्ञात
४९. शृंगार मञ्जरी—शाहराज कृत
५०. शृंगार सारिणी—चित्रधर कृत
५१. काम दीपिका—विष्ण्वङ्गिर कृत
५२. सुरतोत्सव—ले० अज्ञात
५३. स्त्री विलास—देवेश्वर कृत
५४. स्मरतत्व प्रकाशिका—रेवणाराध्य कृत
५५. स्मर दीपिका—रुद्रकृता
५६. स्मर दीपिका—गर्गमुनि कृता
५७. रतिरत्नदीपिका—देवराजकृत
५८. जयमङ्गला—जयमंगलकृत
५९. स्मर रहस्य—ले० अज्ञात
६०. कामप्राभृत—केशवकृत
६१. कामानन्द—वरदार्थ कृत
६२. रति चन्द्रिका—हरिहर कृत
६३. रति दर्पण— „ „
६४. कूचिमार तन्त्र—कूचिमार महर्षिप्रणीत
६५. केलिकुतूहल—म०म० मथुरा प्रसाद दीक्षितकृत

यह तो नहीं कहा जा सकता कि इस वर्गमें इतने ही ग्रंथ हैं। इससे कई अधिक भी हो सकते हैं जो प्रकाशमें नहीं आ पाये हैं। चाणक्यके पश्चात् इस विषय पर लोगोंका ध्यान कुछ अधिक गया वह भी १५वीं शताब्दी तक रहा। आगे देशकी स्थिति राष्ट्रिय परिस्थितिवश ग्रस्त व्यस्त सी हो गई और इस विषयमें जड़ता सी आ गई। विष-कन्याके प्रसंग प्रयोग हरण आदि महत्वशाली स्कन्ध इस विषयके बहुत ही उपादेय रहे हैं।

पातिव्रत्य व एकपत्नीत्व इसी शास्त्रके अध्ययनके फल हैं। विचार दृष्टिसे देखा जाय तो समाजके सुरूपका निखार इसी विषय पर अवलम्बित है। अन्यथा—
"किं सौरभेयी शतमध्यवर्तीवृषोऽपि संभोगसुखं न भुंक्ते"

ईश्वर एवं कर्म—एक विचार

[लेखक.—श्री श्यामबिहारीलाल श्रीवास्तव एम.एस-सी.]

मेरे एक मित्र जो नास्तिक विचारधाराके थे मुझसे कई बार ईश्वरके बारेमें विचार विमर्श करते थे और अपने तर्कों द्वारा मुझे यह समझानेका प्रयास करते कि ईश्वरका कोई अस्तित्व नहीं है और जन्म एवं मरणमें उसका कोई हाथ नहीं, तथा यह तो भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है जो जीवाणुओंकी क्रियासे सम्बन्ध रखता है। उनके तर्क इतने अकाट्य होते थे कि किसीका आध्यात्मिक ज्ञान, संस्कार तथा अनुभव विवेकपूर्ण नहीं हो तो वह वास्तवमें ईश्वर को केवल कल्पनामात्र ही मान ले।

मैंने काफी विचार किया इस प्रश्न पर कि क्या ईश्वरका कोई अस्तित्व नहीं। मैंने उसे देखा भी नहीं और न ही किसीसे यह सुना कि उसने ईश्वरको देखा है, किन्तु जब मैं अपने जीवनके कितने ही रहस्यमय, नाजुक तथा घटनात्मक क्षणोंको याद करता हूं तो मुझे ऐसा ज्ञात हुआ है कि कोई अदृष्ट शक्ति बीचमें खड़ी हो गई है, कोई महान् शक्ति मार्ग-दर्शन कर रही है। कोई गुप्त शक्ति जीवन पथको मोड़ रही है और अनायास ही एक घटना क्रममें जीवन की दिशा मुड़ जाती है। उस शक्तिका प्रभाव जीवन के प्रायः हर क्षेत्रमें मुझे अनुभव करनेको मिला है। प्रयत्न करने या प्रयत्न न करनेकी दशामें उस शक्तिका आभास मिलता ही गया है जिसने मेरी इच्छाके अनुकूल या प्रतिकूल वातावरण उत्पन्न कर कुछ

घटना घटित कर दी । मेरे चाहने या न चाहनेके बावजूद ऐसी घटनायें घटीं जिसमें मेरा बहुत कम परिश्रम या झुकाव था। मैं समझता हूं इस प्रकार की घटनायें प्रायः सभीके जीवनमें आती हैं जो महत्व-पूर्ण हैं और वहां दैवी-शक्तिके चमत्कारका आभास होता है। जीवनके ऐसे क्षण मेरी आंखोंके सामने चमक उठे। मैंने सोचा अवश्य ही कोई शक्ति विद्यमान है जिसने जीवनमें अनेक अवसरों पर अपना चम-त्कारिक प्रभाव दिखाकर जीवनके सुखदुखमें, उन्नति अवनतिमें, जीवन निर्माणमें तथा संकटके समय अपना प्रभाव दिखाया है। वह शक्ति अगोचर है, अदृष्य है किन्तु अनुभवशील है । उस शक्तिके अस्तित्वको कैसे इन्कार किया जा सकता है? उस शक्तिका आभास उन लोगोंको अधिक होता है जिनका हृदय स्वच्छ है, कर्म शुद्ध है और आत्मा स्वच्छ है। स्वच्छ आत्माके पट पर उस शक्तिका परावर्तन अधिक होता है।

विज्ञान कहता है कि संसार दो चीजोंसे बना है वह पदार्थ (Matter) और शक्ति (Energy) पदार्थ तो हम देख सकते हैं किन्तु शक्ति या एनर्जी हम नहीं देख सकते। उसे हम केवल अनुभव द्वारा ही ज्ञात कर सकते हैं, जैसे ताप, विद्युत्, चुम्बकत्व इत्यादि । किन्तु शक्ति महान् है और पदार्थ भी शक्तिमें परिवर्तित हो जाता है । ईश्वर सभी शक्तियोंका स्रोत है।

यदि ईश्वरको हम एक विशाल विद्युत् भण्डार (Power House) मान लें जहांसे विद्युत्धारा जगह-जगह दूर दूर तक जा रही हो, विभिन्न प्रकारके बल्व जल रहे हों। शून्य वाट, दस वाट, पचास वाट, सौ वाट, हजार वाट के बल्व जलकर प्रकाश उत्पन्न कर रहे हों। इसी प्रकार असीम अनन्त ईश्वरके महान् स्रोतसे विभिन्न बल्वरूपी प्राणी अपनी अपनी आत्माके अनुसार प्रकाशित होते हैं । बल्वके भीतर जो चमकने वाला तार होता है उसकी रोधक क्षमता (Resistence Capacity) के अनुसार ही उस बल्वकी शक्ति होती है। जिसमें जितनी अधिक रोधक क्षमता होती है वह बल्व उतना ही अधिक वाटका होता है। इसी प्रकार जिस आत्माका जितना ही तप होता है उतना ही उस आत्माका प्रकाश होता है। बल्व फूट जानेके बाद बिजली चली जाती है यानी पुनः उसी धारामें मिल जाती है जहांसे आती है। अधिक प्रकाश वाला बल्व कम प्रकाश वाले बल्व को निस्तेज कर देता है । यानी सौ वाटके बल्वके आगे पांच वाटके बल्वका प्रकाश नगण्य होता है। इसी प्रकार तपस्वी महापुरुष या महात्माके आगे साधारण मनुष्यकी चमक नहीं रहती। एक ही प्रकार की विद्युत् धारा सभी बल्वोंमें बहते रहने पर भी जिस बल्वकी रोधक क्षमता अधिक होगी यानी जो प्राणी तपोबलमें अधिक होगा वह अधिक प्रकाशित होगा। तपोबलसे आत्मबल प्राप्त होता है और जिसमें अधिक आत्मबल होगा वह अधिक महात्मा या उत्तम पुरुष होगा और जिसमें आत्मबल कम होगा या आत्मा ढकी होगी वह निम्न श्रेणीका व्यक्ति होगा। तप, ब्रह्मचर्य तथा शुभकर्मसे आत्मबल प्राप्त होता है। इसीलिये प्रायः सभी धर्मोंमें शुभ कर्म, ब्रह्मचर्य तथा तप पर बल दिया गया है, ताकि मानवकी आत्मा का उत्तरोत्तर विकाश (Evolution of soul) हो सके और उत्तरोतर उसके अन्दर अधिक प्रकाश आ सके। जिस प्रकार बल्वके धूल, मैल आदिसे ढके रहने पर भी उसका प्रकाश अवरुद्ध हो जाता है उसी प्रकार आत्माके ऊपर बाह्य कलुषताका आवरण भी उसके प्रकाशमें बाधक होता है। अतः आत्माको अधिक प्रकाशमय बनानेके लिए तप, शुभकर्मको बढ़ाकर बाह्य कलुषताको दूर कर आत्माका उत्तरोत्तर विकाश अनिवार्य है । जिस प्रकार विज्ञान जीवके क्रमिक विकाशका सिद्धान्त मानता है (Evolution-of life) उसी प्रकार आत्माका भी क्रमिक विकाश

(Evolution of soul) होता हैं जो एक जीवन से दूसरे जीवनमें होता रहता है। जीवनके अनेकों जन्म मरणकी कड़ीमें आत्माका भी उत्तरोत्तर विकाश या ह्रास होता रहता है। भौतिक शरीरके अन्दर अवस्थित आत्मा भौतिक शरीर द्वारा किये कर्मोंके अनुसार अपना विकाश करती है, क्योंकि भौतिक शरीरके अन्दर आत्माके आत्मा वा मन तथा विवेक का भी विशेष स्थान है मनसे कर्म उत्पन्न होता है जिसका संचालन विवेक करता है और आत्मा द्वारा मार्ग दर्शन मिलता है, किन्तु यदि मन अधिक बलवान् हो जाता है और विवेक अपना संचालन बन्द कर देता है तो आत्माका मार्गदर्शन लुप्त हो जाता है और प्राणी मनके नियंत्रणमें चलकर कुमार्ग पर अग्रसर हो जाता है और इस प्रकार आत्माका प्रकाश कम हो जाता है। यहां आत्माका ह्रास होता है। किन्तु इसके विपरीत जब मन विवेक और आत्मा द्वारा नियंत्रित रहता है तब आत्माकी प्रबलता बढती है और आत्माका बहाव परमात्माकी तरफ बढ़ने लगता है, जो कि उसका वास्तविक मार्ग है। तो आत्माका विकास होता है ओर अन्ततः जीवात्माका परमात्मामें मिलना ही मुक्ति है।

मैंने अभी आत्माके क्रमिक विकासके बारेमें जो बात कही उसका और स्पष्टीकरण करना अनिवार्य है। आत्माका उत्थान (Upgradation) कैसे किया जाये यह एक प्रश्न है। यहींसे कर्मका क्षेत्र प्रारंभ होता है। गीतामें कहा है कि "फल प्राप्तिकी इच्छा न रख कर्म कर"। गीतामें निष्काम कर्मकी बात कही गई हैं ओर कर्मकी प्रधानता पर बल दिया गया है, क्योंकि कर्मसे ही आत्माका विकास सभव है। आत्माका उत्थान कर्मोंके द्वारा ही हो सकता है। कर्मके तीन प्रकार महर्षियोंने बतलायें हैं और वे हैं संचित, प्रारब्ध, और क्रियमाण। संचित कर्म वह कर्म है जो जीव जन्म जन्मांतरोंमें अर्जित कर इकठ्ठा कर सकता है। यानि आत्माका विभिन्न रूपोंमें अनेकों योनियोंमें भ्रमणके उपरान्त जो कुछ भी कर्मोंके फलका संचय कर पाया है वह सब संचित कर्म है।

प्रारब्ध कर्म वह है जो संचित कर्ममेंसे एक भाग लेकर आत्माके साथ जीवको किसी एक जीवनमें भोगनेके लिये प्राप्त होता है। जब जीव पैदा होता है तो उसके साथ संचितमेंसे भोगनेके लिये कर्मोंका एक हिस्सा आता है जिसका भोग उसके उस जीवन कालमें उसे भोगना पड़ता है।

क्रियमाण कर्म वह है जो जीव अपने जीवनकालमें मन एवं इन्द्रियों द्वारा प्रेरित हो कर करता है। चूंकि जीवात्माका संपूर्ण कार्य प्रारब्ध पर ही निर्भर नहीं रहता, क्योंकि उसके साथ मन, इन्द्रिय और विवेक का भी साथ है, इसलिये वह कुछ अशोंमें प्रारब्ध द्वारा निर्धारित कर्मोंके अतिरिक्त भी कुछ कर्म करनेमें स्वतंत्र है। अतएव इस प्रकारके क्रियमाण कर्म द्वारा उसके प्रारब्ध कर्ममें घटा-बढ़ी होती रहती है और इस प्रकार संचित कर्मके अंदर भी कुछ कमी वेशीका होना संभव हो सकता है। अतः क्रियमाण कर्म द्वारा प्रारब्धमें कमी वेशी होना और अन्तमें संचित कर्ममें भी कमी वेशी होना कुछ अंशोंमें संभव है। अतएव शनैः शनैः आत्माका विकास अथवा ह्रास संभव हो जाता है। इसलिये कहा गया है कि अच्छे वा बुरे कर्मोंके द्वारा आत्माका उत्थान तथा पतन धीरे धीरे किया जा सकता है। किन्तु प्रारब्धकी महत्ता इतनी ही है कि वह जीवात्माके उत्थानकी एक सीमा निर्धारित कर देता है। थोड़ी बहुत कमी वेशी क्रियमाण कर्म द्वारा अवश्य हो जाती है, किन्तु सीमासे अधिक खिंचाव नहीं हो सकता। उदाहरणके लिये एक रबड़का टुकड़ा लीजिये जिसको अगर खींचा जावे तो वह उस हद तक ही बढ़ सकता है जितनी कि उसकी सीमा है। उससे अधिक खींचने पर वह नहीं बढ़ेगा और टूट जायगा। इसी प्रकार एक मानव जीवन भी प्रारब्ध द्वारा सीमाबद्ध है जो क्रियमाण

कर्म द्वारा थोड़ा बहुत घटाया बढ़ाया जा सकता है। मेरी स्वयंकी मान्यता है कि जीवन पथका नियंत्रण लगभग ७०% प्रारब्ध द्वारा होता है और बाकी ३०% कर्म तथा फल प्राप्तिके लिये वह स्वतंत्र है जो यदि उचित दिशामें किया गया तो जीवात्माको उत्थानकी तरफ ले जायेगा और यदि अनुचित दिशामें उसका मार्गदर्शन हुआ तो वह शनैः शनैः पतनकी ओर ले जायेगा। इस प्रकार आत्माका उत्थान व पतन संभव है। यही कारण है कि समस्त धर्मगुरुओं ने शुभ कर्मकी महानताको बार-बार दुहराया है ताकि आत्मा उत्तरोत्तर विकसित हो परमात्मासे मिल सके।

अब प्रश्न यह आता है कि शुभ व अशुभ कर्म क्या हैं। कभी कभी शुभ व अशुभ कर्मोंमें भेद करना काफी कठिन होता है किन्तु यदि सूक्ष्म निरीक्षण एवं विचार किया जाये तो यह भेद स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। कोई कार्य या कार्य करनेका उद्देश्य यदि मानवताकी सेवा, कष्ट निवारण, संकट हरणकी भावनासे किया जाये तो वह शुभ कर्म है। रोगियोंकी सेवा, निर्धनता निवारण, अपंगोंकी सेवा, दान कर्म इत्यादि शुभ हैं। सत्य, अहिंसा. ईमानदारी, वफादारी, कर्त्तव्य परायणता, अपरिग्रह, दूसरोंके हितके लिये कुर्बानी, न्याय इत्यादि शुभ कर्म हैं। इसके अतिरिक्त कोई भी कर्म या उद्देश्य जिसमें मानव एवं जीवमात्रकी सेवाका भाव निहित है शुभ कर्म है। दुष्ट एवं दोषीको सजा देना भी शुभ कर्म है। इसके अतिरिक्त ईश्वरकी आराधना जप, ध्यान, तपस्या यज्ञ इत्यादि और भी उच्च कोटि के शुभ कर्म हैं।

प्रारब्धको भी तीन हिस्सोंमें विभक्त किया जा सकता है। यानी प्रारब्ध तीन प्रकारका होता है। तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम। तीव्र कम प्रभावशाली होता है और प्रयत्नों द्वारा विफल किया जा सकता है। अपने दैनिक जीवनमें देखते हैं कि छोटी मोटी बिमारियां, समस्यायें, आपत्तियां अचानक ही आ जाती हैं और प्रयास एव उपचार करने पर उसकी निवृत्ति हो जाती है। यह तीव्र प्रारब्ध है। तीव्रतर प्रारब्ध वह है जो काफी प्रयत्न, पूजा पाठ और कठिनाईके बाद दूर किया जा सकता है। आसानीसे जिसका निराकरण होना सम्भव नहीं है। कभी कभी इसका निराकरण नहीं हो पाता और भोगना भी पड़ता है। तीव्रतम प्रारब्ध वह है जो किसी भी तरीकेसे निराकरण नहीं किया जा सकता। उसका भोगना अनिवार्य है। यहां प्रारब्धका पूर्ण प्रभाव दिखाई देता है। मृत्यु, भयंकर रोग, विवाह, स्वजनोंका वियोग इत्यादि इसी प्रकारके तीव्रतम प्रारब्ध हैं। इनका भोग अवश्यमेव भोगना पड़ेगा।

उपरोक्त पंक्तियोंमें मैंने अपने अनुभव एवं विचारों का जो कुछ भी संक्षिप्त विवरण दिया है आशा है दार्शनिक एवं वैज्ञानिक इस पर मनन कर अपने अनुभवोंसे अवगत करायेंगे।

राहु और केतु

[लेखक—श्री ओंकारलाल मेहता एम.ए. बीकाम बी.एड्. बिजौलिया राज.]

राहु और केतु किसी योगकारक ग्रहसे सम्बन्धित नहीं होने पर भी केवल शुभ स्थानोंमें अर्थात् केन्द्र और त्रिकोण स्थानमेंसे किसी भी स्थानमें बैठनेसे अन्तरदशानुसार योग कारक होते हैं। राहु और केतु केन्द्रत्रिकोणमें स्थित होने पर उत्तम है और योग कारक ग्रहकी अन्तरदशामें श्रेष्ठ फल प्रदान करते है। तथा अशुभ ग्रहोंकी अन्तरदशामें अशुभ फल ही प्रदान करेंगे। फलदीपिकाके अनुसार :—

यदि केन्द्रेत्रिकोणे वा निवसेत्तां तमोग्रहौ ।
नाथेनान्यतरस्यैव सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥
तमो ग्रहौ शुभाढ्यौ च सम्बन्धो येन केन चित् ।
अन्तर्दशानुरूपेण भवेतां योगकारकौ ।।

राहु केतु यदि केन्द्रत्रिकोण तथा द्वितीय एवं एकादशभावमें स्थित होते हैं तो अपनी महादशामें जातकको शुभ फल प्रदान करते हैं । लेकिन यदि राहु केतु किसी भावमें सूर्यसे ग्रसित या उसके विपरीत भावमें स्थित हो तो भी अपनी दशा-अन्तरदशा कालमें जातकको अशुभफल प्रदान करते हैं ।

यदि राहु केतु ६,८ या १२ वें भावमें स्थित हो तो जातकको अपनी महादशामें विपरीत (अशुभ) फल प्रदान करते हैं और यदि ६,८ और १२वें भावके मालिक भी जातककी कुण्डलीमें राहु केतुके साथ उसी भावमें स्थित हों तो अपनी महादशामें राहु केतु जातकको शुभफल प्रदान करते हैं ।

राहु और केतु जिस भावमें बैठते हैं उस भावका ही शुभ अशुभफल अपनी महादशा—अन्तरदशामें प्रदान करते हैं ।

येन ग्रहेण सहितो भजगाधिनाथ—
स्तत्खेटजात गुणदोष फलानि कुर्यात् ।
सर्पान्वितः स तु खगः शुभदोपि कष्टं
दुखं दशान्त्यसमये कुरुते विशेषात् ॥

राहु महादशा—अन्तरदशा फल

राहुमें राहु (२ वर्ष–८ मास–१२दिन)

इस अन्तरदशामें जातकको मानसिक चिन्ता, सम्बन्धियोंसे कलह, किसी आत्मीयजनकी मृत्यु, विष-भय, झूठ अपवाद, माता पितासे झगड़ा, रोगोंमें वृद्धि, दुष्ट लोगोंसे हानि, स्थानान्तर, धन हानि, दूर देशोंकी यात्रा एवं स्त्री पीड़ा होती है ।

राहुमें गुरु (२-४-२४) :- इस अन्तरदशामें जातक द्वारा पवित्र जीवन व्यतीत करना, शास्त्रों का अध्ययन, देव दर्शन तथा भगवत् भजन, धन लाभ, पुत्र प्राप्ति, घरमें मांगलिक कार्योंका होना तथा राज्यसे लाभ प्राप्त करता है ।

राहुमें शनि (२ १०-६) : —जातक इस समयमें मानसिक विकार, वात एवं वायु रोगोंसे पीड़ा, घरेलु झगड़ोंमें वृद्धि, व्यापारमें हानि, पदावनति, तथा गलत धारणाओंका शिकार होता है ।

राहुमें बुध (२-६-१८) : जातक इस अन्तर-दशामें पुत्र एवं धनकी प्राप्ति,शत्रुओंमें वृद्धि,व्यापारमें लाभ, कलामें दक्षता , आमोद प्रमोद तथा वाहन सुख प्राप्त करता है ।

राहुमें केतु (१-०-१८) :—इस अन्तरदशामें जातकको रोग शत्रु,अग्नि एवं शस्त्र भय, चर्मरोगोंसे पीड़ित, मान सम्मान धन एवं जनकी हानि, सिर दर्द तथा मित्रोंसे मन मुटाव होता है ।

राहुमें शुक्र (३-०-०) —इस समयमें जातक जमीन जायदाद, चौपाये, वाहनादिसे आर्थिक लाभ स्त्री सुख, शुभकार्यमें योग तथा कभी कभी पित्त सम्बन्धी रोगोंका शिकार होता है ।

राहुमें सूर्य (०-१०-२४) :—नेत्र पीड़ा, शत्रुओंसे भय पारिवारिक क्लेश, रोगोंमें वृद्धि, स्थान परिवर्तन, मानसिक चिन्ता, तथा पुण्य कार्योंमें रुचि एवं सम्मानमें वृद्धि होती है ।

राहुमें चन्द्र (१-६-०): — इस अन्तरदशामें जातक मानसिक क्लेश , पत्नी सम्बन्धी चिन्ताओंसे ग्रसित, जलसे भय, धनलाभ, पुत्रकी प्राप्ति तथा व्यापारिक केन्द्रों तथा तीर्थस्थानोंकी यात्रा करता है ।

राहुमें मंगल (१—०—१८): — इस अन्तरदशामें जातक राज्यसे भय, आग, चोर, एवं शस्त्र भयसे पीडित,

मुकदमोंमें विफलता, चहुँ दिश असफलता, मानसिक कमजोरी तथा रोगोंमें वृद्धि प्राप्त करता है।

केतुमहादशा—अन्तरदशा फल

केतुमें केतु (०-४-२७) :—जातक इस अन्तरदशामें आत्मीयजनकी मृत्यु, मित्रोंसे कलह, मानसिक पीड़ा, धन हानि, जेल यात्राका भय, भूमि सम्बन्धी झगड़े, शरीरमें जलन तथा ज्वर पीड़ाका शिकार होता है।

केतुमें शुक्र (१-२-०) इस अन्तरदशामें जातकको धन एवं सन्तान प्राप्ति, उच्चवर्गके लोगोंसे कलह, मित्र एवं स्वजनकी हानि, पुत्र एवं पत्नी सम्बन्धी चिन्ता, ज्वर एवं संग्रहणी रोगसे पीडित होता है।

केतुमें सूर्य (०-४-६): — इस समयमें जातकके शरीर में दर्द, निराशावादी भावनाओंमें वृद्धि, सम्बन्धियोंसे मन मुटाव, शिकायतन स्थानान्तर, राज्यसे भूमि सम्बन्धी झगड़ा, कफ एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगोंसे पीडित, व्यापारसे हानि, पत्नीके स्वास्थकी चिन्ता, परिवारके सदस्योंकी बिमारीसे चिन्तित, दूर स्थानोंकी यात्रा, एवं ज्ञानमें वृद्धि होती है।

केतुमें चन्द्र ०-७-० :—इस कालमें जातक आर्थिक लाभ, सन्तान प्राप्ति, स्त्रीसम्बन्धी झगडे, मानसिक सन्ताप शीत रोगसे पीडित तथा कठिनाईयों एवं विवादोका सामना करता है।

केतुमें मंगल ०-४-२७ : —इस अन्तरदशामें परिवार के सदस्योंसे झगडा, स्वजनकी मृत्यु, रोगोंसे पीडित, उन्नतिमें अडचन, शत्रुओंमें वृद्धि, कलह एवं प्रतिद्वन्दतामें वृद्धि, शासकों एवं शत्रुओंसे भय तथा चिन्ता, शस्य चिकित्साके अवसर, ज्वर एवं जेनेन्द्रिय सम्बन्धी रोगोंसे पीडित तथा जेल यात्राके अवसर प्राप्त करता है।

केतुमें राहु (१-०-१८) :—जातक इस दशरमें भूमि हानि, मित्र कलह, व्यपारमें हानि, मान सम्मान को ठेस, नीच संगति एवं राज्य भयका शिकार होता है।

केतुमें गुरु (०—११-६) :—इस अन्तरदशामें जातक को पुत्र, भूमि एवं धनकी प्राप्ति, राज्यसे सम्मान तथा बडोंके सम्पर्कसे लाभ, व्यापारमें लाभ, लाभप्रद सौदोंमें रुचि उत्पन्न होना तथा पूंजीका उनमें नियोजन करना तथा घरमें मानसिक बार्य होते हैं।

केतुमें शनि (१-१-८:—) इस समयमें जातक स्त्री, धन, भूमि एवं जायदाद सम्बन्धी हानि, सम्मानको ठेस स्थानान्तर, अजीर्ण हृदय रोग, वात रोग तथा शरीर सम्बन्धी रोगोंसे पीडिप होता है।

केतुमें बुध ०-११-२७ :—इस अन्तरदशामें जातक पुत्र प्राप्ति, भूमि लाभ, नियोजित व्यापारमें लाभ ज्ञानमें वृद्धि, शत्रु भय, खेती एवं चौपायोंकी हानि होती है।

कालसर्प योगके बारेमें आगामी अंकमें देखें। (क्रमशः)

हाथकी रेखाएं विज्ञानकी कसौटी पर

[लेखिका—श्रीमती चंचला बिड़ला सामुद्रिक आचार्या]

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेष केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।

सम्पूर्ण सौर मंडलमें अपनी अपनी निश्चित गतिके साथ घूमते हुए विभिन्न ग्रह उपग्रह (सूर्य चन्द्रादि) ज्योतिष विज्ञानकी प्रामाणिकताकी स्वयंमेव पुष्टि करते हैं। अतः यदि कहा जाय कि ज्योतिष शास्त्रकी प्राचीनताके परीक्षणमें अन्य अनेक बातोंको छोड़कर केवल ग्रहोंके ज्ञानसे ही यदि वर्षोंकी गणना की जाय तो सूर्यके उच्चसे श्री रामव्यास

ज्यौतिषी अध्यक्ष ज्योतिष विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके मतानुसार -

अज वृषभ मृगाङ्गनाकुलीरा
झष वणिजौ च दिवाकरादि तुङ्गा :
दश शिखिमनुयुक् तिथीन्द्रियांशै-
स्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्त नीचाः ।

अर्थात् भारतमें व्यावहारिक ज्योतिष गणनाके प्रयत्नकी न्यूनतम सत्ता आजसे २१८०२६६ वर्ष पूर्व सिद्ध होती है, जो आधुनिक संसारके लोगोंके लिये विशेषकर पाश्चात्य विज्ञान विशारदोंके लिये बड़े आश्चर्यकी सामग्री है।

प्रमुख रूपसे ज्योतिषको तीन भागोंमें बांटा गया है—सिद्धांत संहिता और होरा। फलित ज्यौतिष होराके अन्तर्गत आता है। 'सामुद्रिक' फलित ज्यौतिष का एक प्रकार है जिसका नामकरण इस विद्याके प्रथम भारतीय शोधकर्ता 'समुद्र' के नाम पर हुआ है।

हस्त रेखा विज्ञान सामुद्रिक शास्त्रका महत्वपूर्ण अङ्ग है, जिसमें हाथकी रेखाओंकी मूक भाषा, मनुष्यकी व्यक्तित्व अभिव्यक्तिकी दिशा, चारित्रिक गुण दोष स्वभाव, संभावित दुर्घटनायें रोग और किसी भी मनुष्यके जीवनके भूत वर्तमान व भविष्यके विस्तृत विवरणको सामने रखते हुये उसके अन्तस्तलमें छिपी हुई प्रच्छन्न शक्तियोंको प्रकाशमें लाकर मनुष्यको समृद्धि-पूर्ण सफल जीवनकी ओर अग्रसर करती है।

सृष्टिके विकासके साथ साथ इस विज्ञानका प्रसार देश देशान्तरोंमें हुआ, उन्होंने इस विज्ञानकी वैज्ञानिताकी मुक्त कंठसे प्रशंसा की और इसे अपनाया। आर्वाचीन धर्मग्रन्थ ओरिजनल हिब्रयूके उद्धरणसे सामुद्रिककी प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

... ... God Greated signs and seals on the hands of all the sons of men, so that the sons of man might know their works.

(The Book of Job, Chap. 38 ver 7.)

अन्य धर्म ग्रन्थ बाइबिलमें स्पष्ट लिखा है—

Length of days in her right hand, and honour in her left.

(Bible Proverb III 16)

What evil is in mine hands ?

भारतीय मनीषियोंकी बात जाने दीजिये—विश्वके सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विचारक अरिस्टोटलके मतानुसार—

"Nature has made the hand of men the principal organ and instrument of man's body."

वैसे भी हम देखते हैं प्रसिद्ध रिकुश समरवेत्ता, नैपोलियन हिटलर और अलैक्जेन्डर अपने युद्धके दौरान सदैव अपने साथ सामुद्रिक वेत्ता सलाहकारके रूपमें रक्खा करते थे। अलैक्जैण्डरके शब्दोंमें।

The study is worth the while of an cleuating and inquiring mind. It is through palmistry that one can observe the vast ponarama of a human persanality. One can acquire a penetrating discernament hobby that will lead you deep into the intimate lives of people around you .

कहनेका अभिप्राय यह है कि सामुद्रिक विज्ञान कोई नया विषय नहीं है आजसे शताब्दी या दशाब्दियां ही नहीं बल्कि इससे भी पूर्व विद्वान् पुरुषों द्वारा इस विज्ञानका प्रयोग बराबर होता आ रहा है।

वैज्ञानिक आधार :—

हाथ मनुष्यके मस्तिष्कका प्रमुख सेवक है, जैसा

कि हम देखते हैं मनमें आये हुए किसी भी विचारकी अभिव्यक्ति प्रधानतया हाथ द्वारा ही होती है। क्रोधकी स्थितिमें प्रायः मुट्ठियां कस जाती हैं। प्यारकी स्थिति में शनैः शनैः अङ्गको सहलाया जाता है, इसका प्रधान कारण है मस्तिष्कके ज्ञान तन्तुओंका हमारे हाथकी शिराओंसे सर्वाधिक सम्बन्ध है। मस्तिष्क जैसा कि मनोवैज्ञानिकोंका मत है दो प्रकारका होता है, चेतन व अवचेतन। प्रत्यक्ष रूपसे दिखाई पड़ने वाले नाना प्रकारके कार्य कलाप चेतन मनसे संचालित होते हैं और अचेतन मस्तिष्क गुप्त रूपसे पिछले कर्मोंके फलानुसार स्वप्नोंके रूपमें या अपनी अन्य गुप्त प्रक्रियाके रूपमें चेतन मनको संदेश प्रसारित करता रहता है और जैसा कि अध्यात्मवेत्ताओंका मत है कि इसी अचेतन मस्तिष्कमें अखिल ब्रह्माण्डको नियत्रण करनेकी पूर्ण सामर्थ्य है। इसे भूत, वर्तमान व भविष्य आदिका पूर्ण ज्ञान होता है। इन्हीं अदृश्य शक्तियोंकी सहायतासे योगीजन समाधिकी प्रक्रिया द्वारा नाना प्रकारको चमत्कार पूर्ण बातें किया करते हैं। सम्मोहन कर्ता (hyonopisp) भी व्यक्तिको सम्मोहित करके उसके विगत जीवनकी स्मृति कराकर नाना प्रकारकी समस्याओंका समाधान किया करते हैं और जैसा कि नित्य सुननेको मिलता है कि अमुक बच्चा अपने पिछले जीवनकी बातें ठीक बता रहा है। वहां उसके मस्तिष्कका यही अवचेतन भाग अन्य व्यक्तियोंकी अपेक्षा अधिक विकसित होता है और उसे सारी बातें स्मरण रहती हैं।

संक्षेपमें इस प्रकारकी अदृश्य शक्तियोंसे युक्त मानव-मस्तिष्कके ज्ञान तन्तु हाथ व पैरको अपनी विशिष्ट शिराओं द्वारा संदेश भेजते रहते हैं और ये शिरायें मनुष्यके हाथोंमें रेखाओं व चिह्नोंके द्वारा अपनी मूक भाषामें शारीरिक व मानसिक क्षमताओंका रहस्योद्घाटन करती रहती हैं। इस प्रकारके रहस्योंसे युक्त ज्ञानका नाम 'हस्त रेखा विज्ञान' के अन्तर्गत आता है। रेखायें बदलती रहती हैं। संसारमें किन्हीं भी दो व्यक्तियोंके विचार शत-प्रतिशत समान नहीं हो सकते। इसलिये किन्हीं भी दो व्यक्तियोंकी हथेली की रेखाओंका समान होना भी सम्भव नहीं।

परिस्थितियोंके उतार चढ़ावके साथ साथ विचारों में भी परिवर्तन होता रहता है। इसलिये रेखाओंमें भी परिवर्तन होता रहना स्वाभाविक ही है।

रेखायें बदलती रहती हैं अवश्य, किन्तु ठीक उस नियामक सर्वोच्च सत्ताके परिवर्तनशील सिद्धांतोंके आधार पर जिनके कारण सूर्य व चन्द्रकी परिक्रमा की दिशा और फलानुसार ऋतुएँ बदलती रहती हैं। आप भी अपने चेतन व अचेतन मस्तिष्कको नियंत्रित कर एक सुनिर्दिष्ट दिशाकी ओर अपनी योजनओंको बदल कर अपने हाथकी रेखाओंको बदल सकते हैं।

किन्तु, वह दिशा कौन सी हो ? कब हो ? आदि बातें जाननेके लिये आइये आपकी हाथकी बोलती रेखायें आप की प्रतीक्षा कर रही हैं। ये आपके समूचे भूत मर्तमान और भविष्यको आपके जीवनकी सही दिशाको अपनेमें समेटे हुये आपके स्वर्णिम भविष्यको इंगित कर रही हैं।

प्रसिद्ध सामुद्रिक लेखक प्रकाश दीक्षितके शब्दोंमें— 'जीवन समय और शक्ति आपके साथ है, इसका कोई भी अंश अपव्यय न हो सके क्योंकि नैसर्गिक रूपसे ये आपके हिस्सेमें सीमित ही हो आई हैं। प्रकृति अपने पुत्रोंके साथ सौतेला व्यवहार नहीं करती। इतना ही जीवन, समय और शक्ति ईसा बुद्ध व गांधीको मिला था। इतना ही शैक्सपीयर-कालिदास व गौर्किको, इतना ही लेनिन व मार्क्सको।

"........आप कुपुत्र हैं या सुपुत्र खुद निर्णय कर लीजिये। ऐसा न हो कि कालकी अदालतमें आपके ऊपर निकम्मेपनका आरोप लगाया जाय और आप हथेली फैलाकर रेखाओंका सबूत देना चाहें और आपके विचारोंके अनुसार उनकी परिवर्तन शीलता आपका

पक्ष कमजोर कर दे। सुबहकी रौशनी अपने स्नायुओंमें भरकर चल पड़िये, लेकिन समयका चक्र कभी नहीं ठहरता। चलना इसका धर्म है।

हस्तरेखा विज्ञान किसी धर्म जाति, वर्ग या वर्ण-विशेषकी बपौती नहीं। कोई भी व्यक्ति जो सुव्यवस्थित मानसिकतासे धैर्य पूर्वक, बिना अंधश्रद्धाके किन्तु विशेष तार्किक भावके साथ इस विज्ञानकी गहराईमें उतरना चाहता है, इसके अध्ययनमें सफलता प्राप्त कर सकता है, इसमें रंच मात्र भी सदेह नहीं।

समय आ गया है। सामुद्रिक विज्ञानको हम केवल भाग्य फल बतानेकी ही सीमाओंमें नहीं बांधें। ज्योतिषके अतिरिक्त सामाजिक विज्ञानके रूपमें भी ग्रहण करें। हाथकी बोलती रेखायें समाजके विभन्न क्षेत्रोंमें काम करने वाले व्यक्तियोंके लिये समान रूपसे उपयोगी है। ऐसा कौनसा क्षेत्र है जिसका प्रतिनिधित्व यह विज्ञान न करता हो? आत्म-स्वरूप का बोध करानेका तो यह विज्ञान सर्वोत्तम साधन है।

पिछले दिनों सामुद्रिकके विषयमें जापानके डाक्टरोंका मत समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हुआ था उनके मतानुसार यदि व्यक्तियोंके हाथ व पैरोंकी रेखाओंका बारीकीसे अध्ययन किया जाय तो कई हस्त रेखाओंकी मूक भाषा-कतिपय संभावित बिमारियोंके अतिरिक्त जीवनका विशद विवेचन हमारे सम्मुख प्रस्तुत करती है। व्यक्तिका व्यक्तित्व उसकी अभिव्यक्तिका उपयुक्त क्षेत्र उसकी सूक्ष्म प्रवृत्तियाँ, गुण व दुर्गुण संभावित दुर्घटनायें, संभावना, उपर्युक्त जीवन साथीका चुनाव आदि बातें हस्त रेखा विज्ञानके अन्तर्गत आती हैं। अतः सामुद्रिक शास्त्र और उसके अन्तर्गत आने वाली आपकी हाथकी बोलती रेखाओं का विज्ञान मानव जीवनके स्वस्थ विकासमें कितना उपयोगी सिद्ध हो सकता है यह स्वयं सिद्ध है।

विवाह समय विचार

[ले० — श्री परमानन्द शर्मा 'नन्द' बी.ए, आयुर्वेदाचार्य, लाडनूं (राज०)]

भारतीय समाजमें विद्याध्ययनके बाद विवाह कर व्यक्ति गृहस्थाश्रममें प्रवेश लेता है, जो जीवनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण आश्रम है। कृपालु पाठकोंके आग्रह पर प्रस्तुत लेखमें विवाह समय पर विवेचन किया जायेगा। वर्तमान समयमें विषम सामाजिक बातावरण के कारण कन्याओंके पिता विवाह समय जाननेके लिए विषेश चिन्तित रहते हैं।

(१) सप्तमेश शुभग्रहकी राशिमें हो एवं शुक्र अपनी उच्चराशिमें गया हो तो ६वर्षकी अवस्थामें ही विवाह होता है। [आधुनिक युगमें यह योग घटित नहीं होगा —सम्पादक]

(२) जन्मलग्नमें शुक्र स्थित हो और लग्नेश १०-११ वीं राशिमें हो तो ११ वर्षकी आयुमें विवाह समझना चाहिये।

(३) शुक्र धन स्थान (द्वितीय भाव) में हो एवं सप्तमेश ग्यारहवें भावमें गया हो तो १० या १६ वर्षकी आयुमें विवाह होता है।

(४) केन्द्र स्थानमें शुक्र हो और शुक्रसे सातवें शनि बैठा हो तो ११ या १८ वर्षकी अवस्थामें विवाह कहना चाहिये।

(५) द्वितीयेश ग्यारहवें भावमें हो और एकादशेश द्वितीय भावमें गया हो तो १३वर्ष की आयुमें विवाह होगा, ऐसा समझना चाहिये।

(६) शुक्रसे सातवें भावमें शनि स्थित हो और लग्नसे सप्तम भावमें चंद्रमा बैठा हो तो १८ वर्षकी आयुमें विवाह होता है ।

(७) शुक्र द्वितीय स्थानमें हो और द्वितीयेश तथा मंगलका योग हो तो २७ वर्षकी आयुमें विवाह होता है। मतान्तरमें इस योगसे विवाहकी आयु २२ या २३ वर्षकी भी है।

(८) पंचम भावमें शुक्र हो और चतुर्थ भावमें राहु स्थित हो तो जातकका विवाह ३१या ३३ वर्षकी आयुमें होता है।

(९) यदि तृतीय भावमें शुक्र हो और साथ ही नवें भावमें सप्तमेश गया हो तो २७ या ३० वर्षकी आयुमें विवाह होता है।

(१०) सामान्यतया लग्नेशसे शुक्र जितना नजदीक हो उतनी ही जल्दी विवाह होता है।

(११) यदि जातककी कुण्डलीमें शुक्र और चंद्रमा दोनों बलवान् हों तो बाल्यावस्थामें ही विवाह होता है।

(१२) बलवान् बृहस्पति यदि सप्तममें हो तो बाल्यावस्थामें ही विवाह कराता है।

(१३) लग्न, द्वितीय और सप्तममें शुभग्रह हो या इन स्थानों पर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो छोटी अवस्थामें ही विवाह होता है।

(१४) सूर्य तीसरे, छठे, ग्यारहवें भावमें हो तो देरीसे विवाह होता है। [यह योग सर्वत्र लागू नहीं होगा, मेरी स्वयंकी जन्म कुण्डलीमें सूर्य ३रे है, विवाह १२ वें वर्षमें होगया था।—सम्पादक]

(१५) शुक्र और बुध सातवें स्थानमें हो तो विवाह देरसे होता है।

(१६) बृहस्पति और शनिकी राशियां (९-१२-१०-११ सातवें भावमें हो तो विवाह देरसे होता है

(१७) शुक्रकी स्थिति जिस राशिमें हो, उस राशिकी दशामें विवाह होता है।

(१८) सप्तम भावमें जो राशि हो उसमें आठ और जोड़ देनेसे विवाहकी वर्ष आयु आ जाती है। यह एक साधारण नियम है।

(१९) शुक्र, लग्न और चंद्रमासे सप्तमाधिपतिकी संख्या जोड़नेसे विवाहकी आयु प्राप्त होती है।

२०) शुक्र और चंद्रमा इन दोनोंमेंसे जो ग्रह बली हो, उसकी महादशा अन्तर्दशामें विवाह होता है।

(२१) यदि सप्तमेश शुक्रके साथ हो तो सप्तमेश की अन्तर्दशामें विवाह कहना चाहिये।

(२२) नवमेश, दशमेश और सप्तमस्थ ग्रहकी अन्तर्दशामें विवाह होता है।

(२३) लग्नेश और सप्तमेशके स्फुटोंको जोड़ने पर जो राशि आवे, उस राशिमें गोचरके गुरु जाने पर विवाह योग आता है।

(२४) जन्म राशिके स्वामी और अष्टमेशके स्फुटों को जोड़ने पर -जो राशि प्राप्त हो उसमें गोचरका बृहस्पति आने पर विवाह होता है।

(२५) जब लग्नेश गोचरानुसार सप्तमस्थ राशिमें जाता है अथवा जब गोचरका शुक्र या सप्तमेश लग्नेशकी राशि या नवांशसे त्रिकोणमें जाता है तब विवाह संभव होता है।

(२६) सप्तमस्थग्रह या सप्तम पर दृष्टि डालने वाले ग्रहकी दशामें विवाह होता है।

(२७) द्वितीयेश जिस राशिमें बैठा हो उस राशिके स्वामीकी दशा- अन्तरदशामें विवाह संभव होता है अथवा दशमेश और नवमेशकी दशा अंतर्दशामें भी विवाह होता है।

(२८) शुक्र, चंद्रमा और लग्नसे सप्तमाधिपतिकी दशामें विवाह संभव है।

(२९) यदि सप्तमेश पाप ग्रहके साथ होकर त्रिकोणगत हो, शुक्र भी पाप ग्रहके साथ हो और द्वितीयेश दशमभावगत हो तो विवाह अधिक उम्रमें होता है।

समस्त कृपालु पाठकोंसे आग्रह है कि वे अपने विचार समय-समय पर सम्पादक और लेखक को लिखते रहें ताकि 'ज्योतिष्मती' अधिकाधिक उपयोगी बन सके शुभम्।

मांगा

[श्री नित्यानन्द 'नित्य'

और तो माँगा नहीं कुछ, मौत का उपहार मांगा।
देहको करके सर्मपित, आपका अधिकार मांगा।

(१)

कृष्णकी अनुरागिनी, बन, स्वप्न राधाने सँजोये।
किन्तु प्यासी ही रही वो, होंठ आंसूसे भिगोये ॥
सूख जब आशा गई तो, हार कर पतझार मांगा ॥

(२)

अग्नि से सीता - परीक्षा, हो चुकी थी राम द्वारा।
किन्तु फिर भी उस सतीको वन पड़ा जाना दुबारा ॥
देख कर परित्याग उसने भूमि गत आधार मांगा ॥

(६)

छोड़ कर वैभव सभी तो, खोगई हो कर अधीरा।
पर वियोगिन ही बनी, फिरती रही हर द्वार मीरां ॥
देखकर सर्वत्र क्रन्दन ! जोगिया श्रृंगार मांगा।

(४)

फूल माँगे थे कभी पर, पंखुड़ी भी मिल सकी ना।
गन्ध कैसे माँगती मैं, जब कली ही खिल सकी ना ॥
सोच कर मैंने विवश हो, कंटकोंका हार माँगा ॥

(५)

माँगकी थी माँग केवल और मेरी माँग क्या थी।
माँगकी उस कालिमामें लालिमाकी चाहना थी ॥
माँग कर सौभाग्य मैंने आपको हर बार माँगा ॥

(६)

माँग जिसको ढूँढती है, माँग वो ही मांगती है।
माँग झुकती है चरणतक, माँग करती आरती है ॥
भेंट करक सुख स्वयंका, आपका हर भार माँगा ॥

ज्योतिष और उसका विज्ञान

[श्री बालगोविन्द जायसवाल, एम.एस.सी]

आपने अक्सर बाजारों, फुटपाथों व मोटरस्टेंडके पास, सिर पर चन्दनका एक बड़ा तिलक लगाये, कुछ किताबें व एक पंचाङ्ग लिये तथा अपने सामने, "आपका भविष्य" की एक तख्ती रखे कुछ लोगोंको बैठे हुए देखा होगा। ऐसे तथाकथित ज्योतिषी जिनकी फीस लगभग पच्चीस नये पैसे होती है, जो मुश्किलसे तीसरी या चौथी कक्षा तक पढ़े होते हैं, जो गणित का कुछ भी नहीं जानते और आपके भविष्यमें कुछ भी आधारहीन बातें—जो आपका पहिनावा व मुख मुद्रा देखकर उनके मस्तिष्कमें आ जाती है, कह देते हैं, ऐसे लोग ही ज्योतिष जैसे वास्तविक, गणितपूर्ण प्रयोगात्मक एवं उपयोगी ज्ञानको 'अटकल' या 'धोखा' तक कहलाने के जिम्मेदार हैं। यहाँ मैं आपको सरल शब्दोंमें यह बताऊँगा कि 'ज्योतिष' के सम्बन्धमें मेरे क्या विचार है।

ज्योतिषकी इमारत इन चार आधारों पर खड़ी है—(१) राशि चक्र, (२)ग्रह (३) गणित और (४) वे नियम जो ग्रहोंकी चालको होनेवाली घटनाओंसे सम्बन्द्ध करते हैं।

ज्योतिषमें तनिक भी अटकल या कल्पना नहीं है। सब कुछ वास्तविक है। ज्योतिष व्यवस्थाकी तुलना एक घड़ीकी व्यवस्थासे की जा सकती है। इसे वास्तवमें विश्व-घड़ी कहा जा सकता है। जैसे घड़ीमें एक गोलाकार स्थिर डायल होता है, जिस पर एक दूसरेसे तीस-तीस डिग्रीकी दूरी पर बारह चिन्ह लगे रहते हैं, ठीक उसी प्रकार आकाशमें स्थिर "राशि-चक्र" का एक गोलाकार डायल है, जिसपर तीस तीस डिग्री तक फैले हुए बारह तारोंके समूह या "राशियां" स्थित हैं। भाग्यवश इन तारा समूहों (जिन्हें ज्योतिषमें 'राशि' कहते हैं) में से प्रत्येक किसी जानवर या मनुष्यकी शक्लसे मिलता जुलता है। सुभीतेको ध्यानमें रखते हुए इन राशियोंका नाम करण उन्हीं शक्लोंके आधार पर किया गया है। उदाहरणार्थ, जिस तारा समूहकी शक्ल शेरसे मिलती जुलती है उसे 'सिंह', जिसकी शक्ल बिच्छू से मिलती जुलती है उसे 'वृश्चिक' और जिसकी कन्यासे मिलती जुलती है उसे 'कन्या' राशि कहा गया है। इसी प्रकार अन्य राशियोंके भी नाम हैं।

हमारी घड़ियोंमें तीन कांटे होते हैं। सबसे मंदा घंटेका कांटा, उससे तेज मिनिट का कांटा और सबसे तेज सेकंडका कांटा, जिनके सिरे बारहों अंकों पर घूमते रहते हैं। परन्तु 'विश्व-घड़ीमें कमसे कम सात ग्रह हैं जोकि विश्व-घड़ीके डायल पर अर्थात् "राशिचक्र" पर अर्थात् एकके बाद एक बारह राशियों पर अपनी अपनी चालसे घूमते-रहते हैं। ये हैं—(१) सूर्य, (२)चन्द्रमा, (३)मंगल, (४) बुध, (५) बृहस्पति (६) शुक्र, (७) शनि।

इनमें से सूर्य और चन्द्रको हममेंसे हरेक यहां तक कि बच्चे भी भली भांति जानते हैं। बाकी पांच सौर-मण्डलके वे ग्रह हैं जो भूगोलमें पढ़ाये जाते हैं। इनमेंसे प्रत्येककी चाल जो पृथ्वी परसे दिखाई देती है, उसके अनुसार चन्द्रमा सबसे तेज है। वह बारहों राशियोंका अर्थात् विश्व-घड़ीके पूरे डायलका चक्र केवल २७ दिनमें लगा लेता है। इसे एक चांद्र मास कहते हैं। ग्रहोंकी चाल वे किस दिशामें जा रहे हैं इस आधार पर प्रत्येक ग्रहकी रोजाना की स्थिति याने वह किस दिन किस राशिमें किस स्थान पर है, यह पंचांगोंमें वर्षों पहिलेसे गणित करके लिखा रहता है। अतः पंचांगके आधारसे चन्द्रमा व दूसरे ग्रहोंकी स्थिति जानकर, उन्हें किसी तारों भरी

रातमें आकाशमें देखनेमें तथा उनके सहारे राशियोंको भी ढूँढ लेनेमें अवर्णनीय आनन्द तथा महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है।

सूर्य राशि-चक्रका चक्कर एक सौर वर्ष अर्थात् ३६५.२५ दिनमें पूरा करता है। शनि इन सब ग्रहोंकी अपेक्षा मन्दी चालसे चलता है और बारहों राशियों का चक्कर तीस वर्षमें पूरा करता है। कुछ दिनों पूर्व ही प्लूटो, नेप्चून व यूरेनस आदि नये ग्रह खोज निकाले गये हैं जो इस परिक्रमामें और अधिक समय लेते हैं, परन्तु उनके विषयमें मैं यहाँ कुछ नहीं लिख रहा हूँ। यह ज्योतिषका गणित-पक्ष है, जिसका अच्छा ज्ञान प्रत्येक ज्योतिषीको होना चाहिये।

अब यह प्रश्न उठता है कि "आकाशमें घूमते हुए ग्रह किस भाँति प्राणियोंकी रुचियों कार्य व स्वभावों आदतों आदि पर असर डालते हैं ?" इस सम्बन्धमें विभिन्न सिद्धांतोंकी बारीकियोंमें जाये बगैर मैं इतना कहना चाहता हूँ कि हममें से प्रत्येक दो ग्रहों—सूर्य व चन्द्र—के प्रभावसे परिचित हैं। इनका प्रभाव पृथ्वी, उसकी उपज एव उसके निवासियों पर पड़ता है। सूर्यकी गर्मी व प्रकाश फसलों को पकाने व मनुष्यों को रंग देने तथा उनकी आदतोको ढालनेमें बहुत अधिक भाग लेते हैं। विषुवत् प्रदेशकी उपज तथा वहांके लोगोंका रहन सहन एक योरोपियन रहन सहन तथा वहांकी उपजसे इसी कारण बिलकुल ही भिन्न होती है। चन्द्र भावनाओं पर प्रभाव डालता और फिर आकाशमें घूम रहे पिण्ड विभिन्न राशियों में उनकी स्थितिके अनुसार, मनुष्योंके चरित्र स्वभाव तथा कार्यों पर एक विशेष प्रकारसे प्रभाव डालते हैं, यह बात विभिन्न कालोंमें असंख्य व्यक्तियोंके सम्बन्धमें देखी तथा सही पायी गई है।

विश्व-विख्यात अंग्रेज ज्योतिषी कीरो (Cheiro) ने इसी प्रश्नका उतर इन शब्दोंमें दिया है, "इस काल में सूर्य एक नई राशिमें प्रवेश करता है इसलिए ग्रहों व राशियोंकी विद्युतीय ज्योतियों (Electric Radiations) में अन्तर हो जाता है, यही कारण है कि वर्षके विभिन्न महिनोंमें पैदा हुए व्यक्तियोंके चरित्र, स्वभाव व कर्मों इत्यादिका स्वरूप भी भिन्न होता है।"

कीरोने सौर वर्षको बारह बराबर बराबर कालोंमें बांटा है जो प्रत्येक अंग्रेजी महीनेकी इक्कीसवीं तारीख से प्रारम्भ होता है और अगले महीनेकी बीसवीं तारीख को समाप्त होता है। यह एक महीनेका समय वह समय है जितना सूर्यको एक राशि पार करनेमें लगता है।

वैसे तो भारतीयों ने सभी ग्रहोंके प्रभावोंको ध्यानमें रखा है, परन्तु चन्द्रके प्रभावको अधिक महत्व दिया है। तर्क यह है कि मनुष्योंके कार्य व क्रियाशीलता (Activty) उनकी भावनाओं(Emotions) से ही परिचालित होते है और चन्द्र ही मनुष्यके मन पर या भावनाओं पर सबसे अधिक असर डालता है। अतः उन सब व्यक्तियोंके चरित्र, स्वभाव, कर्म व पराक्रम इत्यादि मोटे तौर पर समान होगें, जो उसी समय में पैदा हुए हैं जबकी चन्द्रमा कोई एक ही राशि पर भ्रमण कर रहा हो। हां,उनमें भी इसी कारण अन्तर रहेगा कि उसी राशिमें भी चन्द्रमा अलग अलग समयों पर अलग अलग अंशों पर रहेगा व दूसरे ग्रहों की स्थितियोंमें भी अन्तर रहेगा, परन्तु ये सब सूक्ष्मताएं हैं।

जैसे आप अपना प्रत्येक कार्य, स्नान, नाश्ता, भोजन, चाय, सिनेमा, पर्यटन, शयन इत्यादि अपनी घड़ी द्वारा बतलाये निश्चित समय पर करते हैं, उसी प्रकार विश्वकी घटनाएँ भी विश्व-घड़ी द्वारा बतलाये गये निश्चित समयों पर ही होती हैं। आपको ज्ञात होगा कि संसारमें विभिन्न समयों पर विशेष विशेषताओंके काल-विशेष आते रहे हैं। उदाहरणार्थ महाराजा पृथ्वीराज चौहानके समय भारतका वीरता काल था। उसी समय हम आल्हा, ऊदल, जयचन्द, लाखन, कान्ह, कैमास इत्यादि अद्वितीय वीरोंकी कतार

पाते हैं। इसी भांति जब भारतमें अकबर का साम्राज्य था उसी समय इंगलेंड में महारानी एलिजाबेथ का राज्य था, तथा इसी युगमें भारतमें भक्त कवि सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास मीरांबाई व इंगलेंड में शेक्सपीयर हुये थे।

संसारमें, किसी देशमें या किसी व्यक्तिके जीवनमें आनेवाली विशेष घटनाओंका विवरण व सही समय ज्योतिषकी गहराई व बारीकीमें जाकर पहलेसे बतलाया जा सकता है। परन्तु है यह टेढ़ी खीर, और कीरो जैसे वास्तविक विद्वान्का हो कार्य है। कीरोकी World Prediction—एक प्रसिद्ध पुस्तक है। इस पुस्तकमें कीरोने द्वितीय विश्वयुद्ध, भारतकी स्वतन्त्रता व विभाजन जैसी महत्वपूर्ण घटनाएँ कई सर्व पहिलेसे लिख दी थी। इसी प्रकार उन्होंने कई बड़े बड़े आदमिययोंके जीवनकी महत्वपूर्ण घटनाओंकी भविष्य वाणियाँ की थी, जैसे रूसके शक्तिशाली जारकी मृत्यु बड़ी निर्दयता पूर्वक होगी तथा लार्ड किचनरकी मृत्यु समुद्री लड़ाईमें होगी। यह सब अक्षरशः सही निकला।

भारत में प्राचीन कालमें भी बहुतसे प्रसिद्ध ज्योतिषी हो गये हैं व आजकल भी हैं। भारतीय ज्योतिष की चरमोन्नति सन् ५०१ ईस्वी से १००० ईस्वी तक के कालमें हो चुकी थी। इस सन्दर्भमें यदि मैं आपसे इस कालके प्रथम प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी "वराहमिहिर आचार्य" के बारेमें कुछ न कहूँ तो यह निबन्ध अधूरा रह जायेगा। उन्होंने ज्ञानकी इस शाखाको संगठित किया एवं उसमें अपना अमूल्य साहित्य जोड़ा। उनका जन्म सन् ५०५ ईस्वीमें कालपी में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष अपने पितासे सीखा था तथा उसके बाद उज्जैन आकर बस गये थे। वे उज्जैनके किसी विक्रमादित्यकी सभाके नवरत्नोंमेसे थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "पञ्चसिद्धान्तिका" में उनसे पूर्व प्रचलित ज्योतिषके सिद्धान्तोंका विवेचन किया है। उन्होंने बृहत्संहिता, बृहज्जातक, लघु-जातक, विवाह-पटल, योगमात्रा व समास-मात्रा नामक पुस्तकें भी लिखी हैं।उनका साहित्य व्यापक, गम्भीर एवं तर्कपूर्ण है। उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणोंसे विचार किया है। बृहज्जातक ग्रन्थ उज्जियिनीमें ही लिखा गया था। भारतीय ज्योतिष साहित्यमें कई संहिताएं उपलब्ध हैं परन्तु वराह-मिहिरकी "बृहत्संहिता" अद्वितीय है। Dr. Kern ने इसकी बहुत प्रशंसा की हैं।

सच कहा जाय तो आचार्य वराह मिहिरसे अच्छा भविष्यत् वक्ता कोई हुआ ही नहीं। उनका ज्ञान बहुत गम्भीर व रहस्यमय था। उनके जीवनकी एक घटना अत्यन्त उल्लेखनीय है। ऐसा कहा जाता है कि एक बार उनके प्रतिद्वन्द्वी एक बड़ी संख्यामें उनका पीछा इस उद्देश्यसे कर रहे थे कि उन्हें समाप्त कर अपने रास्तेकी सबसे बड़ी अड़चनको सदाके लिये हटा दें। अतः वराहमिहिरको भागना पड़ा। उनके प्रतिद्वन्द्वी भी वास्तवमें उनके प्रतिद्वन्द्वी थे। उन्होंने गणितके सहारे उस छोटेसे गाँवका पता लगा लिया जहाँ वराहमिहिर छिपे थे। और उसे घेर लिया अब वह उस घर-विशेषकी शक्ल व पहिचानके लिये गणित करने लगे। वराहमिहिरको इसका पता लगा। उन्होंने बुद्धिको दौड़ाकर एक युक्ति ठहराई वह एक चक्की लाकर उस पर बैठ गए व उस के पाटमें अपने चारों ओर पानी भर लिया। उनके प्रतिद्वन्दियोंको गणित करने पर पता लगा कि वह चारों ओर पानीसे घिरा है, अतः उन्होंने यह नतीजा निकाला कि वह इसी बीचमें भागकर पासके द्वीपमें चले गये हैं। अतः वे सब उस द्वीपकी ओर चले गये। तब वराहमिहिर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच सके। इस तरह उन्होंने वास्तवमें ज्योतिषके ज्ञान व उसके उपयोगमें अपने प्रतिद्वन्द्वियोंसे अपनी उच्चता सिद्ध कर दी।

किसी व्यक्तिका भविष्य कहनेके लिये उसका सही जन्म समय ज्ञात होना चाहिये । यदि यह समय गलत होगा तो भविष्य गलत हो जायेगा । इस विशाल एवं अन्तहीन संसारमें प्रत्येक व्यक्ति एक थोड़े समयका मेहमान है, जो कि इस संसारमें उसके जन्मके साथ प्रवेश करता है तथा जिस भांति हम अपने मेहमानका आतिथ्य जैसे समयमें वह आता है, उस हिसाबसे करते हैं । यदि नाश्तेका समय हो तो उसको नाश्ता मिलता है, भोजनके समय आने पर भोजन तथा रात के समय सो जाने पर आने पर कोई दरवाजा भी नहीं खोलता । ठीक उसी प्रकार दुनियाँ भी किसी व्यक्तिके प्रति उसके जीवनमें वैसा ही व्यवहार करती है, जैसे समय वह (दुनियाका मेहमान) दुनियामें आता है । वह समय अच्छा है या बुरा इसका पता जन्म-कुण्डलीसे लगता है, जिसमें जन्मके समय विभिन्न राशियों एवं ग्रहोंकी स्थिति दी रहती है । यदि समय अशुभ रहा तो वह प्राणी जीवन भर दुःखी रहेगा । हां, मेहनत करके अपने दुःख कम अवश्य कर सकता है । यदि वह शुभ समय पैदा हुआ है तो वह जीवनमें सफल रहेगा ! जब कोई व्यक्ति किसी ज्योतिषीसे कोई प्रश्न पूछता है, तब ज्योतिषी उस प्रश्नके समयकी कुण्डली बनाता है और उसमें ग्रहों व राशियोंकी स्थितिके अनुसार उत्तर देता है

ज्योतिष-विज्ञान आज भी जीवित है और पश्चिमी देशोमें इसमें खोज (Research) की जा रही है । जर्मनीमें हेम्बर्ग नगरकी (Kepler Circle) नामक संस्थाके प्रधान ब्रेन्डलर प्राट (Brandler-Pracht) तथा उनके साथी अलफ्रेड विटे (Alfred Witte) द्वारा लिखे ज्योतिषके सम्पूर्ण साहित्य "Astrological Library' का उल्लेख इस सम्बन्धमें उपयुक्त है । इसमें प्रस्तुत मुख्य विषय जन्मकुण्डली बनानेकी सौर चाप विधि (Solar Arc Method of Progression of Horos cope) है । सोरचापको उन्होंने वह चाप बतलाया है जो किसी व्यक्तिके उन्नत सूर्य एवं जन्मकालके सूर्यके देशान्तरोंमें बनता है । यह विधि बहुत ही अधिक कार्य क्षमता वाली है और पुरानी त्रिकोणमिति द्वारा मौलिक दिशाओंके गणित करनेकी आवश्यकताको मिटा रही है, जिससे समय व श्रम बचाया जा सकता है । इसके आधार पर उद्घोषित भावी घटना-क्रममें बहुत अधिक साम्य माना जाता है ।

('आकाशवाणी 'इन्दौरके सौजन्य से)

हिटलरका मित्र और ज्योतिषी

[श्री सू० ना० व्यास]

डा० ओटोगिर्कीसे अचानक मेरी मित्रता हो गई थी, वे आस्ट्रियाके प्रमुख चिकित्सक थे, बात यों हुई कि १९३७ में जब मैं मार्सेलीजसे होता हुआ आस्ट्रियाके सबसे उंचे पहाड़ी पर बसे हुए सुन्दर नगर बड़गेस्टाईम पहुँचा तो मालूम हुआ कि वहां नहानेके लिए डाक्टरी इजाज़त लेना जरूरी है। मेरे एक साथी अनायास डॉ० गिर्कीके दवाखानेमें ले गए, दवाखानेमें लम्बी कतार लगी हुई थी । प्रायः सभी स्नानगृहके लिए डॉक्टरी प्रमाण पत्र लेने आए थे, जब थोड़ी देर बाद मेरा नम्बर आया तो डाक्टरने सरसरी तोर पर जाँच पड़ताल कर कह दिया कि-"आप स्वस्थ हैं. नहानेकी जरूरत नहीं"

इसपर मुझे थोड़ी हँसी आ गई, डॉक्टरने देखा, और हँसीका कारण पूछा तो मैंने गंभीर होकर बतलाया कि-"डाक्टर, मैं भारतसे चलनेके पूर्व एनिमिया का मरीज़ रहा हूं । ४८ पौंड घट गया हूं । मेरी हँसी का कारण यही था कि समुद्र यात्रासे यहाँ पहुंचते ही स्वस्थ कैसे हो गया ?

डॉक्टरने सावधानी पूर्वक मेरी आँखें, नाखून

आदि देखे, और कहा कि आप कुछ समय ठहर सकें तो मैं खूनकी जांचकर और निर्णय कर लूंगा।

मैंने रुकनेकी स्वीकृति दे दी और डाक्टरने मेरे खूनके जांचकी व्यवस्था कर दूसरे मरीजोंको निपटाना शुरू कर दिया। १।।-२ घ०टे बाद डॅाक्टरने सभी मरीजोंको निपटा दिया, और पुनः मुझे बुलवाया इतनेमें खूनकी जांच रिपोर्ट भी आ गई थी, अब कुछ जांच पड़तालके बाद डाक्टरने कहा कि-आप भाग्यवान् हैं। एनिमियाके जर्म्स नहीं मिले, अब नहानेकी जरूरत नहीं रही। तब मैंने डाक्टरसे कहा, चाहे बीमारीके लिए न सही, मैं बिना नहाए नहीं रह सकूंगा, इस लिए धार्मिक दृष्टिसे ही मुझे नहानेकी स्वीकृति दे दीजिये। डाक्टर मुसकराया, और परमिशन १५ मिनिट नहानेकी देनेको राजी हो गया, जब प्रमाण पत्र लिखने लगा तो मेरे धन्देकी बात पूछी. मेंने हँसकर कहा कि आपकी तरह ही मेरा भी धंदा है ज्योतिषका कार्य!

प्रमाण-पत्र लिख कर डाक्टर गिर्कीने कहा-'अगर हर्ज न हो तो-हम लोग चेम्बरमें थोड़ा बैठें, चाय लीजिये, और बादमें प्रमाणपत्र भी।' लगभग एक घंटा हम लोग उनके चेम्बरमें गप् शप् के साथ चाय पीते रहे। डॅाक्टर भी ज्योतिषका अनुराग ही नहीं रखते थे—स्वयं गणितकी भी गति रखते थे, इसलिए बातोंमें बहुत मजा आया। मेरे साथीने जब डाक्टरको यह बतलाया कि मुझे साहित्य और इतिहासमें भी रुचि है, तब तो और भी आकर्षित हुआ। डाक्टरने कहा कि मेरे एक बहुत बड़े साहित्यिक मित्र मि० स्टीफन ज्विग भी इसी नगरमें कुछ दूरी पर रहते है। आपको उनसे भी मिलवाउंगा। आज उनसे शामको मिलनेका समय ले लूंगा, कल आप जरूर आइये। बातों-बातोंमें यह भी कहा कि हिटलर से भी मेरी मित्रता है। वह ज्योतिषमें बहुत विश्वास रखता है। कल उसके सम्बन्धमें चर्चा करूंगा।

इस तरह सहसा ड० गिर्कीकी भेंट आकस्मिक स्नेह में परिणत हो गई, मैं अपने प्रवासस्थल (होटल)में वापिस आ गया

दूसरे दिन सूचित समयके अनुसार ही डा० ओटोगिर्कीके पास पहुंचा, मेरी प्रतीक्षा में ही थे। सर्वप्रथम डाक्टरने बतलाया कि महान् साहित्यकार स्टिफिन ज्विग आज शामको आपसे मिलनेको उत्सुक हैं। समय ले आया हूं, आप यहाँ आजाइये, साथ चलेंगे। यह जानकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई। स्टिफिन ज्विग विश्व-विख्यात लेखक उपन्यासकार, नाटककार चरित्र लेखक अनेक ग्रन्थोंके प्रणेता थे। विश्वकी अनेकों भाषाओंमें उनकी रचना का विपुल प्रसार हुआ। ऐसे पुरुषसे मिलना वास्तवमें सौभाग्य ही था। निश्चित समयनुसार डा० गिर्कीके साथ मैं मिला था, जो आत्मीयता सरलता देखनेको मिली मैं बहुत प्रभावित हुआ था। इस मिलनका वर्णन विस्तारसे वर्षोंपूर्व अपने मासिक-पत्र 'विक्रम' में कर चुका हूं, वह कई पत्रोंमें उद्वृत भी हुआ है। और पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदीने 'अपरिचिता स्त्रीके पत्र' पुस्तक (ज्विगकी पुस्तक 'आन्नोन वुमन्स लेटर'के अनुवाद) में मेरे संस्मरणके अंश छापे भी हैं।

स्टिफिन ज्विगकी सूचनाके बाद डाक्टर गिर्की ने अपनी जीवनी, और उसके भावीकी जानकारी की चर्चा की। लगभग दो घण्टे हम लोगोंकी बहुत रसमय बातें होती रही। इसके बाद हिटलरकी पत्रिका पर चर्चा छिड़ गई। उस समय तक आस्ट्रिया पर हिटलर का कब्जा नहीं हुआ था, परन्तु हिटलर स्वयं आस्ट्रियाका होनेके कारण आस्ट्रियाकी जनता हिटलरके साथ रहनेमें प्रसन्न थी। इसका विस्तृत वर्णन मेरी पुस्तक 'सागरप्रवास' में यथास्थान हुआ है।

डाक्टर गिर्कीने बतलाया कि हिटलरकी ज्योति-विज्ञान पर संपूर्ण आस्था है। डा० गिर्की हिटलरसे निकट सबन्ध भी रखते हैं। हम लोग हिटलरके भावी पर ग्रहोंके लिहाजसे विवेचना करते रहे। डा० गिर्की मेरे विचारोंसे सहमत थे। यद्यपि उनका दृष्टिकोण पाश्चात्य गणित पर आधारित रहा। हमारा एक जगह मत-भेद हो रहा था, नीचके शनिको लेकर। डाक्टर गिर्की आजीवन हिटलरके उत्थानकी आगाही करते थे। जबकि प्राच्य पद्धतिके अनुसार मेरा यह मत था कि नीचके शनिमें आरम्भमें आकस्मिक-उत्थान होता है। और अंतमें आकस्मिक अंत भी।

मैं एक सप्ताहके पश्चात् जर्मनीकी यात्रामें जाने वाला था। डा० गिर्की चाहते थे कि हिटलर से भी मिला जाए। परन्तु मैं अपने देशकी स्थिति को जानते हुए इस चक्करमें नहीं पड़ना चाहता था। मैंने विवशता बतलाकर क्षमा चाही, डा. गिर्कीने सुझाया था कि हिटलरके अत्यन्त विश्वस्त ज्योतिषी मि० अवस्तेज् को वे पत्र लिख देते, अवस्तेज् का ज्ञान बहुत उन्नत था। वह गोचर-ग्रहोंके साथ पत्रिकाका समन्वय साधकर दिनचर्याका मार्मिक विवरण प्रस्तुत करता था और हिटलर उसीके संकेत पर रुकता-बढता था। हिटलरने इसी अवस्तेजके लिए अपने पहाड़ी-निवासमें एक ऐसा कक्ष बनवा रखा था जिसके द्वारा किसी भी समय ग्रहोंकी गतिविधिको ठीक तरह देखा जा सकता था, और अवस्तेज उसीसे अपनी गणना कर हिटलरका मार्गदर्शन करता रहता था, बहुत अंश तक वह सही होता था। डा० गिर्कीने अवस्तेजकी गणना और सफलताकी बहुत प्रशंसा की थी। अवस्तेज जर्मन नहीं था, विदेशी था, किन्तु हिटलरको उसपर गहरा विश्वास था, उसे समस्त सुविधाएँ उपलब्ध थी। बाहर जाने आनेका अवसर नहीं दिया जाता था। प्रायः हिटलरके पहाड़ी-निवास पर ही रहता था—जहाँबाहरकी किसी चिड़ियाका पंख नहीं पहुँच पाता था, जहां हिटलरके विश्वस्त अंगरक्षक-सैनिक या बंगलेके सेवकोंका भी प्रवेश वर्जित था—वहाँ मि० अवस्तेजकी निर्बाध प्रवृत्तियाँ चलती थी। वह हिटलरसे वयमें थोड़ा ही कम था, जिस समय हिटलरने रशिया पर हमला करनेका निर्णय लिया अवस्तेजने सुना है-अपनी सम्मति नहीं दी थी, हिटलरने अपनी विजयके उन्मादमें उसके परामर्शकी परवाह नहीं की, यही हिटलरके पतनका आकस्मिक कारण बन गया था।

डाक्टर गिर्की बतला रहे थे कि अवस्तेजका परिचय देना वर्जित है। मेरे स्नेहके कारण मिलनेका कोई मार्ग निकल सकता है। किन्तु वह प्रच्छन्न रूपमें ही। अवस्तेज केवल फलाहारी है। अन्न भी नहीं लेता, तारोंकी गति विधि - छानबीन ही उसका एक मात्र शौक है। दुनियांदारीमें उसे कोई रस नहीं, रुचि नहीं, वह घण्टों ग्रह—नक्षत्रोंमें खोया रहता है। पता नहीं इस कम उम्रमें ही उसने यह सब कैसे प्राप्त किया, और कहाँ सीखा है। आज तो न हिटलर है, न वह खगोल एव उससे भावीका सफलदृष्टा अवस्तेज ही। हिटलरके समाप्त हो जानेके बाद यह पता आज तक नहीं चल पाया कि ग्रहोंकी गति विधिका सफल-दृष्टा वह अवस्तेज कहाँ चला गया? जब मैं जर्मनी गया वहाँ हिटलर का इतना आतंक था कि कोई उस सम्बन्धकी चर्चा करनेका साहस नहीं कर पाता था, मेंने हिटलर और मुसोलिनीको एक साथ बर्लिनमें अवश्य देखा है। मेरे बर्लिन जानेके दूसरे दिन ही मुसोलिनी बर्लिनमें आने वाला था, बर्लिन वैसे ही बहुत सुन्दर स्वच्छ नगर था (युद्धके पूर्व) किन्तु मुसोलिनी के आगमनके कारण सारा नगर नववधूकी तरह सुसज्जित हो गया था, दूसरे दिन हमने नगर-मध्य स्थित होटलसे इन दोनोंका सैनिक सम्मानके साथ जलूस निकलता देखा था, उनकी गर्जना सुनी थी, और दो दिनोंके पश्चात् ही बर्लिन नगर पर हवाई हमलेका पूर्वाभ्यास भी देखा था, और उस आतङ्क पूर्णस्थितिके अन्तिम परिणामका अनुभव किया। अब न वह मुसोलिनी रहा न धूमकेतुकी तरह उदित हुआ हिटलर ही रहा। और उस अवस्तेज का भावी किस अन्धकारमें विलीन हो गया कोई नहीं जानता।

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन, पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड शास्त्री, मैनपुरी (उ०प्र०)]

कार्तिक मास

कार्तिक मासमें ५ रविवार होनेसे दुर्भिक्ष (तेजी) होगी। २६ अक्टोबर सन् ६९ को सायं ६-३० बजे मकरे भौम होते ही (गुरुसे पच्चमस्थ अतः) घोर तेजी। शनिसे राशि परिवर्तन योग साथ ही सूर्य-शनि—भौमका पारस्परिक केन्द्रयोग बनेगा। ३ सितम्बर सन् ३९ को भी शनि मेष राशिमें तथा मङ्गल मकर राशिमें होनेसे साथ ही इसी केन्द्र-योगमें सूर्य-राहु-केतु भी-सम्मिलित हो जानेके फल स्वरूप ब्रटेन-जर्मनी-रूस-जापानमें युद्ध कर चुका है। यहाँ इस केन्द्रयोगमें शनिका नीचत्व भङ्ग हो जानेसे किसी देशमें युद्ध तो कहीं राष्ट्रपतिका शासन नेताओंका पतन वा अवसान, हड़ताल आन्दोलन भूकम्प अग्निकाण्ड-हिंसाकाड नये कानूनसे जनता को कष्ट, यान दुर्घटना, नेताओं पर घोर सङ्कट चोर डाकू ब्लैक मार्केटर्स पर विपत्ति। मार्केट में भी जबर्दस्त तेजी मन्दा चल पड़ेगा। अपने देश पर युद्ध आने पर घोर मन्दा तो दूसरे देशोंमें युद्ध होने पर तेजी होगी—रातको बुध कन्या राशिमें डेढ़ मासको अस्त होगा। जो घोर मन्दीकी सूचना देता है। सभी क्रूर पाप ग्रहों द्वारा जब केन्द्रयोग प्रतियुति-युति होती है तो युद्धादि उपर्युक्त काण्ड अवश्य ही होते हैं। यहाँ राहु-केतु इस योगमें सम्मिलित नहीं हैं। २६ अगस्त सन् १९५९ को सूर्य सिंह राशिमें होनेसे अलग था, केवल कन्या राशिमें मंगल-राहु योग धनुः राशिमें शनिसे मंगल-शनिसे पारस्परिक दृश्टि योग था, केतु मीन राशिमें था तो चीनने तिब्बत पर अपनी फौजें लगा दी थी, मार्केटमें भयङ्कर मन्दा चला था। २० अक्टोबर सन् १९६२ को तुला राशिमें सूर्य-मकर राशिमें शनि-केतु तथा कर्क राशिमें मंगल-राहु वहाँ सभी क्रूर पाप ग्रहों द्वारा योगयुति-प्रतियुति केन्द्रयोग अंशात्मक -हो जानेसे चीनने भारत पर आक्रमण किया था। उपर्युक्त केन्द्रयोग-प्रतियोग २७ जनवरी सन्६३ को मकरराशिमें सूर्य-शनि-केतु तथा कर्क राशिमें मंगल-राहु सभी क्रूर पाप ग्रहोंके फलस्वरूप बगदाद में विप्लव—श्री कासिम प्रधान मन्त्री समेत ८ अङ्ग रक्षकोंकी हत्या की गई थी। श्री बी०एन० दातार तथा श्री राजेन्द्रप्रसाद जी राष्ट्रपति महोदयका देहावासन १ मार्च सन् ६३को हुआ था फिर २४ अप्रैल सन् ६२ को मेष राशिमें सूर्य तथा कर्क राशिमें मंगल-राहु-योग तथा मकर राशिमें शनि-केतु योग बना तो पूर्वी पाकिस्तानमें तूफान-जलप्रलय-भूकम्प आदिसे भयङ्कर विनाश हुआ था। यहाँ पर सन् १९३९ की भाँति मेषमें शनि मकर राशिमें मंगल आ जानेसे सन् १९४० में गुड़की मन्दीका रिकार्ड सामने आया था तब गुड़ १) रु० का ३६ सेर बिका था जोकि सन् ७०में ३६ छटाँक (सवा दो सेर) अब तो किलो का तोलसे रिटेलमें ५० पैसा किलो बिक जानेकी आशा है। चीनी कण्ट्रोल रेटसे सस्ती खुले मार्केट में बिक जाए तो आश्चर्य नहीं। २६ अक्टोबर सन् ६८ से भी बढ़कर परिपूर्ण केन्द्रयोग-प्रतियोग-युति प्रतियुति १मई सन् १९७१ को सामने आवेगी, उसका फल इससे भी अधिक भयङ्कर होगा। यहाँ इस केन्द्रका समर्थन अन्य कुयोग भी कर रहे हैं।

दीपावलीको स्वाति नक्षत्रमें दीपक जलेंगे, विशाखा नक्षत्रमें इस वर्ष गोवर्धन पूजा होगी जो उत्पन्न होने वाली शाखा (फसल)को पहले ही नवदुर्गामें अतिवृष्टिसे नष्ट कर देगी। राजा लोग तो बहुत से हाथी लेकर (अधुनिक शस्त्रास्त्र टैंक तोप आदि युद्धके लिए चढ़ेंगे। यह कुयोग पहले भी संवत् २००२।२००७ ८ ९।१२।१३।१५

१६ से उपज नाश व अन्य उत्पातों को करता हुआ खरा उतरा है । और भी ।

कार्तिक मावस देखौ जोसी ।
शनि रवि भौमवार जो होसी ॥
स्वाति नखत अरु आयुष योगा ।
काल परै अरु नासै लोगा ॥

दीपावलीको रविवारमें स्वाति नक्षत्र आयुष्मान् योग होनेसे किसी नामी इमारत मीनार या पर्वत स्मारक गिरनेसे भयङ्कर क्षति होगी । मनुष्योंका विनाश और दुर्भिक्षकारी है । यथा

शनि भौमार्क वारेषु दर्श आयुष्म संयुता ।
स्वातियुक्तस्तदा चैव दुर्भिक्षं रौरवं भवेत् ॥
अमावस्यां तुले चन्द्र मकरे चेत् मङ्गलः ।
विना चक्रं मही चूर्ण वाणिज्यं निष्फलं भवेत् ॥

दीपावलीकी अमावसको तुलाका चन्द्रमा मकर का मङ्गल है जो बिना युद्धके पृथ्वीको नष्ट भ्रष्ट करेगा । साथ ही व्यापार भी निष्फल होगा । शीत कालीन रोगोंका उपद्रव अवश्य ही दीखेगा । संवत् १९६४ व संवत् २०११ में योग बना था तो मन्दी हुई यह योग घोरमन्दी कारक प्रतीत होता है । ११ नवम्बरकोभौम-शनि का अंशात्मक केन्द्र योग देश में या विश्व में ऐतिहासिक महान् दुष्काण्ड प्रस्तुत करेगा । रुई रेशम पाट बोरी नॉइलौन टैरेलीन ऊन डैकोरीन सूत कपड़ा चांदी सोना सर्व धातुमें तेजी चमकेगी । गुड़ खांडमें विशेष मन्दा होगा ।

आगे केवल यही योग संवत् २०२८ की दीपावली को पुन: बनेगा । १२ नवम्बरको गुरु तुला राशिमें पहुँचकर शुक्रसे योग शनि से प्रतियोग करेगा । गुरु-शनि प्रतियोग का फल —

यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः ।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चा-नपरिक्षयः ॥

अर्थात् प्रजा का नाश और अन्नादिका नाश होने से तेजी होगी । गुरु शुक्र योगका फल :—

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् ।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः ॥

अर्थात् अकाल (बिना अवसर)में वर्षा तथा युद्ध होता है । शुकला ५ शुक्रवारी तीसरे चौथे मासमें अच्छी मन्दी सभी खाद्य वस्तुओंमे-लावेगी । ता० १६ को सूर्योदय से पूर्व (भूखी अवस्था)श्री सूर्यदेव वृश्चिक राशिस्थ होगें जो तेजीका ही समर्थन करते हैं । कार्तिकी पूर्णिमाको कृत्तिका नक्षत्र एक सप्ताह में मन्दीका झटका देगा । ६ दिसम्बरको गुरुसे पञ्चमस्थ शीघ्री मंगल कुम्भ राशिमें आकर राहु से योग तथा शनिसे राशि परिवर्तन योग करेगा । सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल रांगा सीसा एलम्युनियम स्टैनलैस स्टीलके संग्रहसे लाभ देगा, सूत कपड़ा मिल शेयर्समें मन्दा होगा ।

मार्गशीर्ष मास

९ दिसम्बरको "शनि अङ्गारक योग' महान् औत्पातिक हैं जो १५ जुलाई सन ६९ को बना तो ऋतुमें विचित्रताके साथ श्री मुरारजी देसाईने त्यागपत्र दिया, बैंकोंका राष्ट्रीयकरण हुआ । अपोलो ११ के यात्री अन्तरिक्षमें चन्द्रमा पर गये । डाकुओंका सर्वनाश हुआ । यहाँ भी नेताओंका पतन वा अवसान, भूकम्प यान दुर्घटना, नेताओंके अवसानसे तत्स्वभावानुसार भयङ्कर तेजी या मन्दीका दौर चलेगा, कहीं रष्ट्रपतिका शासन, रोग व चौरोपद्रव, हिंसाकाण्ड-अग्निकाण्ड कारखानोंमें धड़ाका हड़ताल, आन्दोलन आदिसे त्राहि-त्राहि होगी । यही योग मार्गशीर्ष पूर्णिमाको भी पुनः बनेगा । तुलामें गुरुके प्रभावसे मार्गशीर्ष-पौषमें संगृहीत खाद्य वस्तुयें चैत्र मासमें लाभ देंगी । १० दिसम्बरको बुधोदय पश्चिममें भयङ्कर तेजी-मन्दीसे व्यापारियोंको हैरान कर देगा । मार्गशीर्ष शुक्ला ३ का क्षय देशी घी मूंग दाल अन्न

के संग्रहसे अच्छा लाभ होगा । ता० १५ को सायं धनु: संक्रान्ति मन्दीका स्पष्ट संकेत करती हैं। २३ दिसम्बर को गुरु-शुक्रका राशि परिवर्तन योग मार्केटमें तूफानी उलट फेर प्रस्तुत करेगी।

पौष मास

३० दिसम्बरको दैत्याचार्य शुक्र महोदय सूर्य देवसे अस्त होकर परास्त होनेसे सभी वस्तुओंमें भयङ्कर मन्दी आनेकी आशङ्का है। शुक्र अस्त हो जाने पर भी सूर्योदय समय पूर्व दिशामें सूर्यके पास दिखाई देता रहे तो आगे भी महान् उत्पात "शनि अङ्गारक योग" के समान होते रहेंगे। आज ही प्लूटो वक्री तथा वक्री शनिसे गुरुकी अंशात्मक प्रतियुति होगी जो व्यापारिक एवं सांसारिक समस्याओंको जटिल बनावेगी। पौष कृष्णा वा शुक्ला ६।११ को प्रातः पूर्वमें मेघ गर्जना या बिना वर्षाके पश्चिमी वायु जोरसे उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० इन क्षेत्रों में चले तो संवत् २०१०।२०१८ की भांति तेजी होगी। दक्षिणी वायु इस मासमें उपर्युक्त क्षेत्रमें चले तो घोर वर्षा और मन्दीका सूत्रपात होता है। सन् १६७० का प्रारम्भ बुधवारको होनेसे गुड़ खांडमें तूफानी मन्दा होगा, सम्भव है कि गुड़ गेहूं से भी सस्ता बिक जाय। ४ जनवरीको शनि मार्गी, मार्केटकी चलती लायन को बदल देगा। ता० ४ को मध्यान्ह पश्चात् बुध वक्री बादल वर्षा वायुवेग शीत वृद्धि सभी मार्केट्समें खलबली मचा देगा। ता० ५ मंगल-राहुकी युति महान् दुष्काण्ड दिनाङ्क ११ नवम्बर सन १६६६ के समान करेगा। सभी वस्तुयें एकदम मन्दी हो जानेकी आशङ्का है। पौष कृष्णा ३० बुधवारी मूल-पूर्वाषाढ़ा युक्त आगे उपजको निश्चित रूपसे श्रेष्ठ बनायेगी। आज ही बुध पश्चिम दिशामें अस्त होगा जो बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि करेगा, मार्केटमें भी खलबली होगी। शुक्ला ४ पश्चात् पंचमी रविवारी तेजीकारक, शततारा संयोगी चारों ओरकी वायु जोरसे चलावे तो अच्छी तेजी आवेगी। ता० १३ को १२।१५ बजे हर्षल वक्री मार्केटमें जबर्दस्त तेजी या मन्दा करेगा। ता० १४ को मकर संक्रान्ति तेजीकारक है। शुक्ला ७ को रेवती अन्नादि संग्रहकी राय नहीं देती। शुक्ला ११ को कृत्तिका नक्षत्र सोना लाल वस्तुओं के संग्रहसे होली तक अथवा आगे आषाढ़ मासमें अच्छा लाभ होगा। ता० १६ को प्रातः शीघ्री मीने भौम जो इस राशिमें आनेसे गुरुको देखता है अतः चांदी सोना रुई रेशम पाट बोरी सर्वधातुमें तेजी सम्भव है। यदि उपर्युक्त क्षेत्रोंमें बादल वर्षा हो तो मन्दा अन्यथा वर्षा न हो तो तेजी होगी। आज ही मकरे शुक्र होत ही सूर्य+शुक्र वायुवेग और तेजीकारक है। चांदी सोना सर्वधातुमें अच्छी तेजीकी आशा है। ता० १६ को पौष मासमें पूर्वोदयी बुध वायुवेग ओला-पात या शीत वृद्धि सभी वस्तुओंमें तेजी लावेगा। शुक्ला १३ एक चरण मंगलवारी वर्षा न हो तो सभी वस्तुयें तेज होंगी। पौषी पूर्णिमाको पुष्यसे सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, बादल या वर्षा हो तो निश्चित मन्दा, किन्तु रुई रेशम पाट बोरी तेज ही होंगे। लाभ हानि का पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता-महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थिति और अपनी शक्तिको तौलकर ही कार्य करें।

कृष्णमूर्ति-पद्धतिः—२

[लेखक :—ज्योतिर्पण्डित हीरालाल शर्मा, बनजार, जिला कुल्लू (हि०प्र०)]

पूर्व इसके कि मैं प्रस्तुत लेखसे ही कृष्णमूर्ति पद्धतिःके सिद्धान्तानुसार जातककी जन्मकुण्डली बनानेकी प्रक्रिया व्यक्त करू, मैं उचित समझता हूँ कि सर्वप्रथम पाठोंके लाभार्थ 'कृष्णमूर्तिपद्धति'के आधारभूत तथ्योंका स्पष्टीकरण करू । यह विषय सर्वविदित ही है कि ज्योतिषविद्याका प्रादुर्भाव भारतवर्षकी भूमि पर अनादिकाल से हुआ है । कालान्तरमें महर्षियोंके अनुसन्धानोंके फलस्वरूप इस विद्याकी भारी उन्नति हुई भारतीय ज्योतिष शास्त्रकी सबसे प्राचीन व्याख्या जो अथर्व वेदमें दी है, उसमें राशि शब्दका कहीं भी उल्लेख नहीं है। राशिशब्दसे भली भांति अवगत होते हुए भी, पूर्वाचार्योंने नक्षत्रोंको अधिक महत्त्व दिया है । उन्होंने सम्पूर्ण भचक्रको २७ भागोंमें विभक्त किया है और प्रत्येक भागका मान १३ अंश २० कला निश्चित किया । प्रत्येक भागको अलग-अलग नामसे सम्बोधित किया, जो कि नक्षत्रके नामसे प्रसिद्ध है । ये अश्विनीसे क्रममें रेवती तक (अभिजित अलग नक्षत्र नहीं है) २७ ही हैं । वर्तमान भारतोय ज्योतिष शास्त्र जो हमारे सामने उपस्थित है, वह विदेशी आक्रमणों के फलस्वरूप भारतमें आये विदेशी विद्वानोंकी अपनी अपनी कृतियोंका संमिश्रण है, यद्यपि भारतीय विशुद्ध ज्योतिष सिद्धान्तकी महानता मिश्रित अवस्थामें भी सर्वोपरि है, यह निर्विवाद सिद्ध है । देखिए श्री बालकृष्ण दीक्षित कृत 'भारतीय ज्योतिष-शास्त्र' ।

राशि शब्दका अर्थ संस्कृतमें 'स्थूल काय वस्तु' ढ़ेर आदि हैं । स्थूल रूपसे जो भचक्र (राशिमण्डल) के १२ भाग किये गये हैं, जो कि क्रमसे मेष आदि मीन पर्यन्त नामोंसे प्रसिद्ध हैं, राशि शब्दसे बोधित हैं, यह उपयुक्त ही लगता है । प्रत्येक भाग अर्थात् राशिका मान पूरे ३० अंश हैं, जबकि नक्षत्र का मान १३ अंश २० कला है । राशिने भचक्रके १२ भाग किए और नक्षत्र द्वारा भचक्रके २७ भाग हुए अर्थात् नक्षत्र द्वारा हम भचक्र की सूक्ष्मतामें गए ।

कृष्णमूर्तिजीने अपनी पद्धतिमें इसी प्राचीन भारतीय सिद्धान्तका प्रतिपादन किया है । उन्होंने राशियोंको स्थूल मानकर नक्षत्रोंको महत्त्व दिया है । यदि नक्षत्रोंका मूल्य कम होता तो महर्षि पराशरजी विंशोत्तरी दशाका आधार नक्षत्र ही को क्योंकर मानते । उनकी विंशोत्तरी दशा कलियुगमें यथार्थ फलादेश बतानेमें रामबाण है । पाश्चात्य ज्योतिर्विद समाज भी, भविष्यफल कथनमें विंशोत्तरी दशाके सामने हार मान चुका है । जिस प्रकार मेषादि मीन पर्यन्त द्वादश राशियोंके स्वामी क्रमसे भौम, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, भौम, बृहस्पति, शनि, शनि, बृहस्पति ग्रह माने गये हैं उसी प्रकार अश्विनी आदि रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रोंके विंशोत्तरी दशानुसार २७ हो स्वामी हैं । जिस प्रकार साधारण भाषामें किसी बालकका जन्म अश्विनी नक्षत्रमें हुआ हो तो उसकी जन्मकालीन विंशोत्तरी दशा केतुकी होगी । इस प्रकार केतु ग्रह अश्विनी नक्षत्रका स्वामी हुआ । इसी प्रकार सभी नक्षत्रोंके स्वामी समझें । बाल बोधार्थ चक्र निम्नलिखित है—

विंशोत्तरी मानसे नक्षत्राधिपति बोधक चक्र

नक्षत्रस्वामी	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	भौम	राहु	बृह०	शनि	बुध
नक्षत्राणि	अश्विनी मघा मूला	भरणी पू.फा. पू.षा.	कृत्तिका उ-फा. उ.षा.	रोहिणी हस्त श्रवण	मृग. चित्रा धनिष्ठा	आर्द्रा स्वाती शतभिषा	पुनर्वसु विशाखा पू.भा.	पुष्य अनुराधा उ.भा.	आश्लेo ज्येष्ठा रेवती

अब किस ग्रहके ऊपर किस नक्षत्रका प्रभाव कैसे समझा जाए। देखिए, आसानीके लिए राशि मालाकी प्रथम राशि मेषको लो। इसके सम्पूर्ण ३०° हैं। भचक्रमें इसकी स्थिति ०अंशसे लेकर ३० अंश तक है। कोई ग्रह इस स्थितिके मध्यमें हो तो साधारण दैवज्ञकी दृष्टिमें हम कहेंगे कि अमुक ग्रह मेष राशिमें स्थित है और मेषके स्वामी भौमके अधीन है। परन्तु हम जानते हैं कि "अश्विनी भरणी कृत्तिका पादो मेषः" अर्थात् अश्विनी नक्षत्रके चारों चरण ; भरणीके चारों चरण और कृत्तिकाका एक चरण—मिलकर पूरी मेष राशि बनाते हैं। नक्षत्रके एक चरणका मान ३ अंश २० कला होता है और नक्षत्रके चारों चरणोंका (४×३°.२०′=१३°.२०′) १३ अंश २० कला हुआ। अर्थात् अंशादिके रूपमें मेष राशिमें नक्षत्रोंकी स्थिति इस प्रकार हुई—

(i) ० अंश से लेकर १३°-२०′ तक अश्विनी नक्षत्र। मेष राशिके इस क्षेत्र में अश्विनी न० का प्रभाव है।
(ii) १३ अंश २० कलासे लेकर २६°-४०′ तक भरणी नक्षत्र (,, ,, भरणी ,, ,,)
(iii) २६ अंश ४० कला ,, ३० अंश तक कृत्तिका नक्षत्रका एक चरण (,, कृत्तिका........ ,, ,,)

अब कल्पना कीजिए कि किसी जातककी जन्म कुण्डलीमें बृहस्पति मेष राशिके ११ अंश पर है। राशिके अनुसार यह ग्रह मेषके क्षेत्रमें हुआ। नक्षत्रके अनुसार वही ग्रह अश्विनी नक्षत्रके क्षेत्रमें पड़ा। अश्विनीका स्वामी कौन ? केतु है। अतः बृहस्पति ग्रहके ऊपर दो ग्रहोंका प्रभाव होगा। एक तो सामान्यतः मेष राशिके स्वामी भौमका दूसरे जो अधिक प्रभावशाली हैं वह है अश्विनी नक्षत्रके स्वामी केतु ग्रहका प्रभाव। यदि यही बृहस्पति ग्रह मेष राशिके २१° पर समझा जाए तो इस पर मेषके स्वामी भौमका प्रभाव और १३°-२०′ और २६°-४०′ के मध्यमें होनेसे भरणी नक्षत्रके क्षेत्रमें पड़नेसे भरणीके स्वामी शुक्र ग्रहका भी प्रभाव पड़ेगा। यदि यही बृहस्पति ग्रह मेषके २६°-४०′ से ३०°के बीच हो तो इस प्रकार भौम ग्रहका प्रभाव तो होगा ही परन्तु नक्षत्र कृत्तिकाके क्षेत्रमें पड़नेके कारण कृत्तिकाके स्वामी सूर्यके प्रभावाधीन होगा। इसी प्रकार कुण्डलीके सम्पूर्ण नव ग्रहोंकी अवस्था १२ राशियों और २७ नक्षत्रोंके अन्तर्गत जानें।

स्पष्ट बोधके लिए सम्पूर्ण राशिमाला और नक्षत्रादिकी सारिणी अगले अंकमें दी जायेगी। परन्तु कृष्णमूर्ति पद्धतिने जिस रहस्यका उद्घाटन किया वह इस उपरोक्त नक्षत्र क्षेत्रसे भी सूक्ष्मतर है। आदरणीय गुरु श्री के. एस. कृष्णमूर्तिजीने प्रत्येक नक्षत्रके मान १३ अंश और २० कलाको अपने बुद्धिबलसे फिर नवग्रहोंके बीच उन ग्रहोंके विंशोत्तरी महादशा वर्षोंके अनुपातमें विभक्त किया। अर्थात् विंशोत्तरी दशामानसे सूर्यकी महादशा ६ वर्षोंकी है और शुक्रकी २० वर्षोंकी। अतः नक्षत्रके मानका सबसे कम भाग सूर्यको मिलेगा और सबसे अधिक भाग शुक्र ग्रहको। इस नक्षत्रके विभाजनकी प्रक्रिया आज तक ज्योतिष संसारमें कोई व्भवित न कर पाया, वस्तुतः नक्षत्रका यही विभाजन श्री कृष्णमूर्ति जीकी संसारको अपूर्व भेंट है। और यही कृष्णमूर्ति पद्धति का प्रधान अंग है। इस विभाजनकी विस्तृत व्याख्या उदाहरण व सारिणी सहित अगले अंकमें देखिए।

(क्रमशः)

संजीवनी बूटी

[लेखक—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्यविशारद, खोरी—गुडगांव]

सच्ची घटना

"मुझे तो कुछ आशा नहीं है वैद्य जी !"

"बेशक रोगमें तो कुछ कसर नहीं है परन्तु फिर भी घबरानेकी कोई बात नहीं" आशा बँधाते हुए वैद्य जीने कहा।

"आज तो सुबहसे इसने पानी भी नहीं मांगा।"

पानी कहाँसे माँगे इसे होश तो है ही नहीं, महा-घोर सन्निपात हो रहा है" वैद्यजीने कहा।

"यह घोर सन्निपात किसी प्रकार मिट भी सकता है ? मुझसे तो इसकी दशा देखी नहीं जाती"

"यदि इसका जीवन शेष होगा और ईश्वर कृपा होगी तो आराम हो जावेगा, तुम घबराओ मत, भगवान् पर भरोसा रखो। भगवत्-विश्वासके आगे घोर सन्निपात क्या वस्तु है जो ठहर सके" ? कहते हुए वैद्य जीने कुछ आशा बंधाई।

एक नौ-दस वर्षीय बालिका सन्निपात ज्वरमें ग्रसित होकर रोग शय्या पर पड़ी है। घर वाले उसके आस पास उदास भावसे बैठे हैं। आज जबकि वैद्य जी रोगिणीको देखनेके लिए आये हैं तब यह बातें हो रही है।

बालिका अपनी फूफी (पिताकी बहिन) के यहां आई हुई है। फूफीके कोई सन्तान नहीं है। इस कारण इसको अपने घर ला रखा है। और अपनी सन्तानसे भी अधिक प्रेमसे इसको पाला है। अब असाध्यरोग होनेके कारण फूफी व फूफा दोनोंको महान् चिन्ता हो रही है कि कहीं बालिकाको कुछ हो गया तो काला मुंह हो जायेगा। ईश्वर खैर करे। रोग शान्तिके अनेक उपचार किये जा रहे हैं। वैद्य ज्योतिषी स्याने ओझे सभी अपने अपने जौहर दिखा चुके हैं, परन्तु "मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की" वाली कहावतके अनुसार रोग बढ़ता गया है। दम्पतिकी निराशा बढ़ती जाती है। भाई बन्धु भी परेशान हैं। वैद्यजी भी आशा भरे वचन कह कह कर चिकित्सासे अपना पीछा छुटाना चाहते हैं। क्योंकि वह समझते हैं कि रोगिणीका बचना कठिन है। तीन दिनसे तो दशा बहुत बिगड़ गई है।

(२)

अगले दिन वैद्यजीने देखा दशा भयानक है। कमजोरी बहुत बढ़ गई है। नाड़ी हाथ न लगी। बहुत देर तक नाड़ी टटोलने पर कुछ हरकत मालूम दी, वैद्यजीका मुँह उतरा हुआ देखकर घर वाले समझ गये कि हालत खराब है, घबराकर पूछा-"वैद्यजी क्या हाल है ?"-कोई विशेष लाभ नहीं हुआ, कल वाली हालत है। दवा कुछ असर ही नहीं करती आज कुछ नाड़ी मध्यम पड़ गई है" सिरका पसीना पोंछते हुये वैद्यजीने कहा।

दम्पतिका हृदय धड़कने लगा, घबराके बोले "तो फिर ! अब क्या किया जाए ? वैद्यजी कोई ऐसी दवा दीजिए जिससे इसको आराम हो जाये" दम्पति की आँखोंमें आँसू थे"दवा तो कितनी ही दी जा चुकी है और भी दी जायेगी, परन्तु हमने तो गुरुओं के मुखसे यही सुना है कि रोगकी असाध्य दशामें भगवन्नामसे बढ़ कर कोई दवा नहीं। भगवान्‌का नाम जपनेमें ही जीवका परम कल्याण है। कहते हुये वैद्य जी खड़े हो गये और चलने लगे।

रोगिणीकी फूफीने पतिको सम्बोधन करते हुये, कहा, मुझे तो अब कुछ आशा नहीं रही है। परन्तु,

वैद्यजीसे यह पूछो कि यह लड़की दो-चार घण्टे भी पकड़ सकती है कि नहीं ?

वैद्यजीने रोगिणीकी नाड़ी पर पुनः हाथ रखते हुये कहा, नाड़ी हाथ नहीं लगती, बेहोशीका कुछ ठिकाना नहीं, हालत तो खराब है। परन्तु दो चार घण्टेकी कौन कहे ईश्वरकी माया कुछ जानी नहीं जाती, परन्तु तुम घबराओ नहीं भगवान् पर भरोसा रक्खो, भगवान् भला करेंगे।

"वैद्यजी ! घबरानेसे तो क्या होता है और होगा तो वही जो भगवान् करेंगे । परन्तु हमें तो एक बात की चिन्ता है" ।

"किस बातकी ?" वैद्यजीने पूछा ।
वैद्यजी ! पासमें जो रामलीला हो रही है, उसमें विघ्न पड़ जायेगा । रोते हुए दम्पतिने कहा ।

"देखना ! यदि दैवयोगसे कोई ऐसी-वैसी बात हो जाये तो घर वालोंसे कह दो कि जब तक रामलीला होती रहे सन्तोषपूर्वक शान्त रहें। रोने धोने का ख्याल तक न करें । यदि कोई रो पड़ा तो जो दर्शकगणोंकी भीड़ सामने बैठी हुई है—सारी एक दम उठ जाएगी और वास्तवमें रामलीलामें विघ्न पड़ जायेगा।

(३)

रोगिणी के घरके पास ही धर्मशालाके आगे रामलीला हो रही है। अपार जन समूह एकत्र है, स्त्री-पुरुष बालक बूढ़े सभी लीलाका आनन्द ले रहे हैं। और रोगिणीके घर तक बैठे हैं। दैवयोगसे आज लक्ष्मणशक्तिकी लीला हो रही है। मेघनाद और लक्ष्मणकी लड़ाई देखकर लोग दंग रह गये-" सिया वर रामचन्द्रकी जय" और लक्ष्मणजतीकी जय" पुकारने लगे । देखते देखते मेघनाद द्वारा लक्ष्मणपर शक्ति प्रयोग हुआ और लक्ष्मणजी धराशायी हो गये दर्शकोंका मुँह उत्तर गया।

रामचन्द्रजीके विलाप तथा प्रलापको सुनकर दर्शकोंकी आँखोंमें आँसू छलक आये । सब निस्तब्ध होकर आंसू बहाते हुये भगवान्की ओर देखने लगे।

रोगिणीकी शय्याके पास उसकी फूफी और फूफा उदास बैठे हैं। भगवान्का विलाप सुनकर वे भी हिचकियां लेकर धीरे-धीरे रोने लग गये ।

उधर हनुमान्जी संजीवनी बूटी लाये हैं। दर्शक गण देखते ही पुकार उठे "बजरंग बलीकी जय" और उल्लास भरे नेत्रोंसे लीलाको देखने लगे। तत्काल सुखेन वैद्य द्वारा लक्ष्मणजीको बूटी दी गयी और वे उठ बैठे । दर्शकगण आनन्दसे जय जयकार करने लगे। चारों ओर आनन्द छा गया।

स्त्री ने अपने पतिसे कहा-बालिकाके बचनेकी तो कोई आशा नहीं है। घण्टे आध घण्टेमें उसके प्राणपखेरू उड़ जायेंगे। परन्तु मेरे मनमें एक बात उपजी है।

"क्या ?" आँसू पोंछते हुये पतिने कहा ।
"आप रामलीला मण्डपमें जाकर थोड़ीसी संजीवनी-बूटी ले आओ"

बावली हुई है' वहाँ कैसी संजीवनी बूटी है ? वह तो लीला करके दिखाई जा रही है। लीला वालोंने नीमकी डालियाँ एकत्र करके पहाड़ बनाया है। और हमारे पड़ौसमें जो नीम खड़ा है—इसकी ही डालियां तोड़ी है। नीमके पत्ते ही संजीवनी बूटी है। उपेक्षा और निराशा दिखाते हुये पतिने कहा।
"कुछ भी हो मुझे भगवान् पर पूर्ण विश्वास है। वह नीमकी पत्तियाँ नहीं, संजीवनी बूटी है । तुम लाओ तो सही।"

स्त्रीके बहुत आग्रह करने पर पति रामलीला मण्डपमें गया और चुपकेसे उस बनावटी पर्वतसे नीम के दो चार पत्ते—नहीं नहीं संजीवनी बूटी—तोड़

लाया। स्त्रीने पानीमें पीसकर बालिकाके मुँहमें वह पानी डाल दिया।

रामलीला समाप्त होने पर सब लोग अपने-अपने घरोंको चले गये। रोगिणीके घरके पास जहां अपार जन समूह बैठा था वहां रात्रिकी निस्तब्धता छा गई। वैद्यजीको उसी निस्तब्धतामें बुला कर रोगिणीको फिर दिखाया गया। वैद्यजी नाड़ी पर हाथ रखते ही बोल उठे हालत बहुत अच्छी है। बुखार नार्मल हो गया है। नाड़ीमें बल आ गया है। देखते देखते बालिकाने करवट बदली, थोड़ी देर वैद्यजी बैठे रहे। बालिकाके मुँहसे निकला 'पा नी' वैद्यजी चकित रह गये। यह अघटन घटना ! बालिकाको इतनी जल्दी चेत कैसे हुआ ? हम तो चलते समय कुछ दवा नहीं दे गये थे। विस्मित भावसे पूछने लगे—"क्या इसको कोई औषधी दी है ?"

"नहीं, हमने तो कुछ नहीं दिया" पतिने कहा। परन्तु पत्नीके कहने पर उसने पुनः जीवनी बूटी का वर्णन सुना दिया।

"वैद्यजी सुनकर स्तब्ध रह गये और मुखसे निकल गया-"भगवान् तेरी माया"

"महाराज ! बूटी देनेके चार मिनट बाद ही इसकी नाड़ी ठिकाने पर आ गई थी और श्वास में भी कुछ परिवर्तन हो गया था, परन्तु हम रोग की दशा नहीं समझ सके, इसी कारण आपको रातको कष्ट दिया गया है।"

वैद्यजीने प्रसन्न होते हुये कहा—यह भगवान् की ही लीला है, जो नीमकी पत्तियोंमें संजीवनी बूटीका गुण हो गया। नहीं तो वैद्यक मतानुसार सन्निपातकी शीतांग दशामें निम्बपत्र देना रोगीको तत्काल मारना है। अब आप चिन्ता छोड़िये। भगवान् राम की कृपासे बालिका पुनः जीवित हो गई है। अब इसे कोई औषधी न दो, मैं भी उस बची हुई नीमकी पत्तियोंको (नहीं नहीं सजीवनी बूटीको) ले जाऊंगा और अपने रोगियोंका भला करूंगा।

वैद्यजी रामायणकी इस अर्धालीको गुन-गुनाते चले गये "सुजन संजीवनी भूरि सुहाई"

आर्य जाति आत्म-विनाशको रोके और आत्म-रक्षाके लिए कटिबद्ध हो

[ले०—श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालङ्कार]

"न आर्यस्य दास्य भावः।"

यह आचार्य चाणक्यका कथन है। मगधके प्रधान अमात्यका कथन आज भी सत्य है। इसका अर्थ है कि आर्य कभी दास नहीं बनाया जा सकता। आर्य पराधीनता एवं दासताको कभी स्वीकार नहीं करता। वह कभी पराजय नहीं मानता। निरन्तर और सतत संघर्ष करना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। आर्य जाति अजर अमर है। आर्य जातिको कभी बुढ़ापा नहीं आता। सृष्टि सम्वत्का आज तक इस देशमें व्यवहार हो रहा है। यह इसी सत्यको घोषित कर रहा है कि आर्य जाति चिर युवा है और कभी ईश्वरको छोड़कर और किसीके आगे नत मस्तक नहीं होती।

आर्य जातिका भारत देश है। यह केवल आर्योंका देश है, अनार्यों और म्लेच्छोंका नहीं। जो लोग आर्य जातिमें दूधमें पानीके समान या गंगामें यमुना के समान विलीन हो गए हैं, उन आर्योंका यह देश है। आर्य जाति ही एकमात्र ऐसी जाति है, जिसका धर्म राष्ट्र-धर्म है। और जो भूमिको माता कहती है और अपनेको पृथ्वी-पुत्र कहती है।

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या'

इस कारण आर्य जातिका परम धर्म स्वतंत्रता और स्वाधीनताकी पूजा करना है और राष्ट्रकी स्वाधीनता की रक्षा करना अपना पुण्य कार्य है। आर्य जाति मृत्युसे नहीं डरती। वह पुनर्जन्ममें विश्वास करती है। मृत्यु उसके लिए पुराने वस्त्रोंका त्याग करके नवीन वस्त्र पहननेके समान है। भारत राष्ट्रके अमर राष्ट्र कवि कालिदासने इसी सत्यको इस रीतिसे प्रकट किया।

'मरणं प्रकृति शरीरिणाम्—
जिवितमुच्यते बुधैः॥"

अर्थात् बुद्धिमान् लोग मृत्युको जीवन कहते हैं। अतः आर्य जाति निर्भय, अभय और निडर है। इसी कारणसे वह रणसे संग्रामसे और संघर्षसे पराङ्मुख नहीं होती, वह युद्धका स्वागत करती है, रण-क्षेत्रसे पलायन करना उसने नहीं सीखा।

इन गुणोंसे शून्य व्यक्तिको आर्य होनेका अधिकार नहीं है। आजकी हिन्दू जाति इस दृष्टिसे आर्यत्व शून्य है।

'नामका कोई महत्व नहीं है' यह कहने वाले भारी भूल करते हैं। आर्य-जातिने जबसे विदेशियोंका दिया नाम 'हिन्दू' ग्रहण कर लिया है तभीसे वह आर्यत्व शून्य हो गई है। अब उसको दासता एवं पराधीनतामें भी स्वराज्य दिखाई देता है। अपना मूल देश और अपने देशका नाम खोकर भी और अपनी भाषा छोड़ कर भी इसी कारणसे वह अपनेको स्वतंत्र मानती है, आर्य जातिके पतनका मूल रारण यही है कि वह आर्यत्वको, अपने आत्म-गौरवको विस्मृत कर चुकी है।

आर्य जातिने 'हिन्दू' नाम कब ग्रहण किया यह इतिहास नहीं बताता। १६ वीं-१७वीं शती तक आर्य जातिने अपनेको हिन्दू कहना स्वीकार नहीं किया था। पण्डितराज जगन्नाथ तकने कहीं भी हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं किया है। सूर, तुलसीने भी हिन्दू शब्दका व्यवहार नहीं किया है। तुलसीने तो 'राम स। विजयी हैं" यह लिखकर घोषित किया है कि

आर्यत्व कभी पराजित नहीं होता। सम्भवतः भूषणने मराठोंके संसर्गमें रहनेके कारण सर्वप्रथम 'शिवा बावनी' में 'हिन्दू' शब्दका व्यवहार किया है। तुर्क लोग आर्य जातिके प्रति तिरस्कार और घृणा प्रकट करनेके लिए 'हिन्दू' शब्दका व्यवहार करते थे।

हिन्दू नाम अपनानेसे आर्य जातिकी राष्ट्रीय जीवन की धारा टूट गई। क्योंकि उसने अपना इतिहास खो दिया। सौभाग्यसे उसने कष्ट सहकर भी प्राणपनसे अपनी संस्कृति, साहित्य और सभ्यताके स्रोत 'वेदों' की रक्षा की, अतः आर्य जाति आज भी विद्यमान है और निस्तेज नहीं हुई है। कारण है कि इस जातिके विनाश करनेका संकल्प इतर जातियाँ और धर्मोंने कर रखा है। आर्य कुलके नष्ट होनेके कारणसे हिन्दू जातिकी प्रतिरोध शक्ति का ह्रास होने लगा। किन्नर, राजपूत, जाट, गूजर, तगा, भूमिहार सदृश वर्ग व समुदाय विधर्मी हो गए। अन्योंने पलायनवादी प्रवृत्तिका आश्रय लिया। कुछ वर्गोंने एवं समुदायोंने तलवारको सदाके वास्ते नमस्कार कर दिया, जैसे खत्री, अरोड़े, अग्रवाल, रस्तोगी प्रभृतिने तुला पकड़ ली और यहूदियोंके समान इस मन्त्र का जप करने लगे—

"टका धर्म टका कर्म टका हि परमं पदम्"

इसने संग्रामको, सतत संघर्षको अपना धर्म नहीं माना। इसने श्मशानकी शान्तिको परम-शान्ति माना और उसीको अपना धर्म माना।

परन्तु, यह सब होने पर भी आर्य व हिन्दू जातिने अपनी अक्षय राष्ट्रीय निधि 'वेदों' का स्वप्न में भी त्याग नहीं किया। विधर्मी हुए लोग भी इसका अभिमान करनेमें अपना गौरव मानते रहे। आर्य जातिके राष्ट्रीय जीवनका प्रवाह मन्द तो हुआ, परन्तु सूखा नहीं। इससे आर्यजातिका समूलोन्मूलन करने वालोंको भारी निराशा हुई। उन्होंने आर्य जातिकी प्रबल प्रतिरोध शक्तिको पहचाना। १८१८ई० में भारतकी जनसंख्या 'मराठाहिस्ट्री' के लेखक एलफिंस्टनके अनुसार १८ करोड़ थी। इसमें अनार्य या मुसलमान केवल एक करोड़ थे। ब्रिटिश शासनने इस सत्यको माना कि तलवारसे आर्य जातिको पराजित करना सम्भव नहीं। अतः उसने शल्य मार्ग चुना। 'हिन्दू' का नाम तक मिटा देनेका संकल्प किया और इस देशमें बसे लोगोंको 'मुस्लिम' और 'नान-मुस्लिम' कहना प्रारम्भ किया। जन-गणना की रिपोर्टोंको छोड़कर अन्यत्र कहीं भी उसने हिन्दू शब्द का भूलकर भी व्यवहार नहीं किया। हां, हिन्दू जातिको सताने के लिए दंगा-फसाद होने पर, दंगा करने वालोंकी रक्षा करनेके उद्देश्योंसे बड़ी संख्यामें पकड़े और बन्दी बनानेके लिए अवश्य उसने हिन्दूका नाम लिया, अन्यथा नहीं।

हिन्दू जातिको निःशस्त्र कर दिया। घुड़सवार वीर पूर्वियोंको सईस बना देनेपर गर्व किया। हिन्दुओं को सैनिक सेवासे यथाशक्ति दूर ही दूर रखा। परन्तु, ब्रिटिश शासन चकित रह गया, जब उसने देखा कि सीमा-प्रान्त, पंजाब और सिन्ध तकमें मुस्लिम बहुसंख्यक नहीं हैं, अतः उसने १८८०में सिक्खों को हिन्दुओंसे पृथक् करनेकी नीति ग्रहण की। इसके अभावमें मुस्लिम, नान-मुस्लिमका भेद कोई आर्य नहीं रखता था। अफगानिस्तानमें हिन्दू अभी तक विद्यमान हैं। अतः मुस्लिमका बल बढ़ाने और आर्योंको इस्लामिस्तानमें परिणत करने के लिए ईसाई धर्मने इस्लामसे मैत्री की। १८८०में पहले-पहल ब्रिटिश पादरी भारतमें आने दिये गए। उर्दूको अदालतमें चलने दिया गया। आजीविकाके लिए पंजाब के हिन्दूने अपनी भाषा भी गोड़ दी। इस प्रकार वह मनसे विधर्मी हो गया। किन्तु शेष भारतमें इससे हिन्दू जातिकी शक्ति क्षय नहीं हुई। अतः उसने हिन्दूकी शक्तिको नष्ट करनेके लिए ब्राह्मण, नान-ब्राह्मणका भेद उत्पन्न किया। जहां यह सम्भव नहीं हुआ वहां उसने घोर प्रान्तिकता उत्पन्न की। यही कारण है कि भारत

भरमें हिन्दुत्वका अस्तित्व एक समान नहीं रहा। हिन्दू जाति आज अखिल भारतीय ईकाई तक नहीं है, यद्यपि संख्याकी दृष्टिसे आज भी सर्वाधिक है। इसका यह बल तोड़नेके लिए ही हरिजन और परिगणित व अनुसूचित वर्ग उत्पन्न किये गए हैं और उनको दृढ़ किया गया है। यह नीति सफल हुई है। १९४७में भारतका विभाजन हुआ और इस्लाम की पहली ठोकर खाकर पश्चिमी पंजाब, सीमा प्रान्त और सिन्ध हिन्दू विहीन हो गया। क्योंकि ये लोग तलवार छोड़नेके साथ अपनी भाषा भी छोड़ चुके थे। फिर उनको मातृभूमिसे क्या प्रेम हो सकता था, भक्तिकी तो बात ही दूर रही। देशद्रोह पर पर्दा डालनेके लिए भले ही यह दावा किया जाए कि उन्होंने भारतीय स्वराजके लिए त्याग किया है। इसके लिए उनका पुरस्कार मांगना और पाना ही बताता है कि यह वर्ग राष्ट्र भक्तिसे शून्य है।

पूर्वी बंगालके हिन्दुओंको क्या कम कष्ट दिये गए हैं ? क्या वहां कत्ले-आम नहीं हुए ? जिसका वृतांत तक बाहर नहीं जाने दिया गया। भारतसे सहायता न मिलने पर भी वह लोग जीविका खोकर भी वहां डटे हुए हैं, इनकी तुलना जरा पंजाब छोड़ कर भागे लोगोंसे कीजिए। स्वभाषाका त्याग कितना बड़ा राष्ट्रीय पाप है, यह सत्य तुरन्त समझमें आ जायगा।

कांग्रेस शासनका उद्देश्य आर्य जातिका नाम तक मिटाना है, इस सत्यको एक मात्र स्वामी दयानन्दने पहचाना। अतः इस ऋषिने अपना महान् ग्रन्थ आर्य भाषा (हिन्दी)में रचा। हिन्दुओंको अपना नाम बदल कर पुनः आर्य कहनेके लिए प्रेरणा दी। पीरों, फकीरों, मकबरोंकी पूजा छुड़ानेकेलिए मूर्ति-पूजाका खण्डन किया। क्योंकि सामान्य जनके निकट शिव, विष्णुकी पूजा और मकबरे पर शिरनी चढ़ानेमें कोई अन्तर नहीं था। सलाम बन्दगी, की जगह नमस्कार और अभि-वादनके लिए वैदिक शब्द नमस्तेको प्रचलित किया। 'नमस्ते' तो चल गया, किन्तु हिन्दू जातिने अपना पुराना और प्राचीन नाम आर्य, पुनः ग्रहण नहीं किया। फलतः भारतको यदि शेष संसार 'इण्डिया' कहे और इससे कोई आपत्ति न करे। मार्ग-भ्रष्ट जन शीघ्र ही सत्पथ आर्य-पथका परित्याग कर देते हैं। शासनकी अन्य राष्ट्रों और देशों द्वारा हिन्दू जातिका नाम तक मिटानेकी प्रक्रिया आज भी चालू है। इसकी गति तीव्र करनेके लिए अनेक उपाय बरते गए हैं। जैसे—

१. हिन्दीको राष्ट्र भाषा नहीं माना गया।

२. संघात्मक शासन व्यवस्था अपनाई गई। क्योंकि आजका शासन यह सत्य स्वीकार करनेको उद्यत नहीं है कि भारत एक देश है, एक राष्ट्र है और इसकी राष्ट्र भाषा एक मात्र हिन्दी है।

३. नकली भाषा उर्दूको बढ़ावा दिया है।

४. इस्लामको प्रोत्साहन देनेके लिए मुस्लिम शिक्षणालयोंमें उर्दूका जानना अनिवार्य रखना इसने स्वीकार किया है।

५. ब्रिटिश विधि-विधानोंको चालू रखा है और उच्च न्यायालयोंमें अंग्रेजी चलने दी है।

यदि फ्रेंच राज्यका संरक्षक नेपोलियन रोमन ला को बिस्केकी खाड़ीमें फेंक सकता था और नूतन फ्रेंच रोड बना सकता था तो क्या मनु, बृहस्पति, नारद, पराशरकी स्मृतियोंके जन्म देने वाला देश ब्रिटिश विधि विधानोंको समुद्रमें प्रवाहित करके नवीन भारत विधि संहिताका निर्माण नहीं कर सकता था ? परन्तु ऐसा करनेसे क्या विश्व-विजयी आर्य जातिका उदय होना रोका जा सकता था ?

भारतकी सैनिक शक्तिका निर्माण नहीं किया गया और न भारतको सशस्त्र किया गया। क्योंकि क्षात्र शक्तिका उदय होने पर आर्य जाति पुनः अपना

सार्वभौम चक्रवर्ती विश्व-साम्राज्य स्थापित करनेका प्रयास करती । यह क्या आजके शासकों, या रूस, अमेरिकाको कभी स्वीकार होगा । ऋषि दयानन्दकी यह विरासत पूरी न करनेके लिए ही भारतके पराजित होने पर भी सेना नहीं बढ़ाई गई । सेना बढ़ानेका अर्थ है, हिन्दूको शक्तिशाली बनाना और भारतको समृद्ध बनाना । यह क्या आजके शासकोंको स्वप्नमें भी सूझ सकता है ? आर्यजातिका अभिमान नष्ट करने और इसको गौरव-विहीन बनानेके लिए ईस्वी सवत् लालू रखा गया है । यही नहीं आर्य जातिका अपमान करनेके लिए विक्रम संवत् को अपनानेके बदले ईसासे ५७ साल बादका शाका संवत् स्वीकार किया गया है, जो आर्य-विजयका सूचक नहीं है ।

आर्य (हिन्दू) जातिके विनाशकी इस प्रक्रियाको रोकनेका प्रयत्न करना आवश्यक है । १९७२ में लोक-सभाका निर्वाचन संग्राम होगा । इस संग्रामको लड़ने और इसमें विजय लाभ करनेके लिए आर्य जाति प्रयत्न करे । भारतमें ही सगर्व और साभिमान छाती खोलकर साहसके साथ उच्च स्वरसे अपनेको हिन्दू कहने वाले मुठ्ठी भर भी लोग नहीं हैं । हिन्दू तिरष्कृत ही नहीं उपेक्षित भी है । भारतीय और विदेशी तत्व एवं अनार्य और यवनतत्त्व सम्मानित हैं और उनका ही आज देश पर प्रभुत्व है । १९७२में वर्तमान शासक वर्ग और शासक मण्डलको हटाकर इनके प्रभुत्वका अन्त करके आर्य जातिकी रक्षा की जा सकती है । और पुनः भारतके विश्व-विजयकी पताकाको ऊंचा उठाया जा सकता है । नागरी अंकोंका बहिष्कार करने वालों और पंजाबसे हिन्दीको बहिष्कृत करने वालोंसे हिन्दु जाति किसी प्रकारकी आशा नहीं कर सकती । अतः वह संकल्प करे कि १९७२ के चुनावमें वर्तमान राजनीतिक दलोंमेंसे किसीको भी वह अपना मत न देगी ।

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्य फल

[सेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद, गुप्त खोरी, जिला गुड़गांवा]

कार्तिक मास

वदी १ को कन्या राशिगत बुध पूर्वमें अस्त होगा। दाख, पीपल, कालीमिर्च, जायफल सुपारी, हल्दी, धनिया, जीरा, लौंग, नारियल आदि किरानेकी वस्तुएँ तेज होंगी। उत्तम वर्षाका योग है। ता० २७ अक्टूबर को रुई, कपासमें अच्छी मन्दीकी आशा है। २८ को तुलायां बुध: वर्षाकारक हैं। प्रजामें उपद्रव होगा। गुड़ खाण्ड तेज। बदी ५ आर्द्रायुक्ता है चाराका स्टाक करनेकी राय देती है। अन्यथा अल्प वर्षाके कारण पशुओंको कष्ट होगा। यहां गुरु शुक्र युति तेजीकी लाइन बनायेगी। साथ ही सूर्य-शनि-मंगलका केन्द्रयोग नाना प्रकारके उपद्रव खड़े करेगा। अग्निकाण्ड रेल-मोटर-यान दुर्घटना, युद्ध, रोग, दुर्भिक्ष, हिंसाकाण्ड आन्दोलन आदिसे राजा प्रजाको कष्ट होगा। ता० ३१ को चित्रायां शुक्रः बम्बई गुजरात काठियावाड़में वर्षाका जोर होगा। रुई कपास मन्दी। ता० १ नवम्बरको स्वात्यां बुध: रुईमें मन्दीको स्पोर्ट देगा। आज तिलहन तेलमें तेजी रहेगी। बदी ८ को पुष्य नक्षत्र रुई तेज करेगा। ता० ४ को गुरु शुक्र-युति तेजीकी प्रतीक है। ५ ता० को विशाखायां रवि: सोना, चांदी, गुड़ खाण्ड, रुई कपास, सूत, और शेयर्सका भाव बढ़ेगा। दक्षिणी देशमें हुल्लड़बाजी। तुलाका शुक्र रुई मन्दी करेगा। परन्तु सूर्य-बुध-शुक्र तेजीकारक योग है विशेष तेजी Oil Seed तिलहन में होगी। बदी १४ का क्षय मन्दीकारक है। ता० ६ नवम्बर अमावस्या रविवारी है। आज श्रीमहालक्ष्मीजी का पूजन वृष लग्न (पौने छै से पौने आठ बजे) में होगा। परन्तु स्वाति नक्षत्र और आयुष्मान् योग होनेसे घोर दुर्भिक्षकी संभावना है। श्रवणे भौम सोना चांदी गेहूँ तेज करेगा। सुदी १ को विशाखा है आज गौवर्धन पूजा होगी। इस योगसे युद्धके बादल मंडरायेंगे, तथा फसलमें हानि होगी। फलस्वरूप अनाज एवं खाद्य पदार्थोंमें एकतर्फा तेजी होगी। संसारमें नाना प्रकारके उपद्रव होंगे। प्रजामें रोगोंका प्रकोप होगा। ता० ११ अतिगण्ड क्षय होनेसे घी तेल में तेजी होगी। आज ही गुरु का तुला राशि पर प्रवेश होगा। रुई-सोना नारियल सुपारीमें तेजी तथा अलसी सरसों लोहा घी तेलमें धीरे-धीरे जनरल लाइन मन्दीकी चल पड़ेगी। १२ को रुई, कपास, सोना चांदी तिल तेल गेहूँका भाव मन्दा रहेगा। वृश्चिक संक्रांति शनिवारी तेजी करेगी। खेतीमें हानि। किसी आचार्यका मत है कि वृश्चिक संक्रांति शनिवारमें होनेसे गल्ला, सोना चांदी और किराना मन्दा होता है। बुध-सूर्य युति वायदा तेज करेगी। ता० १६ को बुधका वृश्चिकमें गमन घी तेल और अनाजमें मन्दीका योग है। परन्तु बुधास्त होनेके कारण इसका विपरीत फल (तेजी) भी हो सकता है। सुदी १० की क्षय "यन्मासे दशमी क्षयस्तदा घृत महार्घता" घी का भाव तेज होगा। १६ नवम्बर अनुराधायां रवि: अनाज शेयर्स तथा गुड़में तेजी होगी। २१ को रूई चांदी चावल मन्दा। किसी नामी फर्म (जो सट्टाका काम करती हो) का दिवाला निकलेगा। शनिवारी पूनम तेजी करेगी। आज एक सप्ताहकी तेजी लगावें। जिन क्षेत्रोंमें आज रातको बादल हो वहाँ व्यापारियों को अनाजका संग्रह करना चाहिए।

नोट—इस मासके कृष्ण पक्षमें मन्दी रह सकती है। शुक्लपक्षमें अधिक योग तेजी के हैं। साथ ही—

"एक जगह गुरु शुक्र हों बने युद्ध आसार।
अन्नावृष्टि अति वृष्टिसे दुख पावे ससार।।"

मार्गशीर्ष मास

वदि १ को चांदी रुई कपास खुलते बाजार मन्दी रहेगी बादमें तेजी होगी। वदि २ की वृद्धि, तीन दिनके अन्तर्गत प्रत्येक वस्तुमें तेजीका झटका लायेगी। २७ नवम्बरको धनिष्ठाका मंगल सुभिक्ष सुख कारक है। गुड़ खांड शक्कर और अन्नका भाव मन्दा होगा। सोना चांदी आदि धातुएँ तेज। २८ को वृश्चिकका शुक्र भी सुख शांति कारक है। गल्ला मन्दा होगा। वदी ६ रविवारी गल्ला तथा रस पदार्थ तेज करेगी। २ दिसम्बर ज्येष्ठायां रवि-सोना, चांदी रुई सूत कपड़ा गुड़ चावल सरसों में तेजी होगी। ता०५ को मूलाधनुषि बुध इन्हीं वस्तुओंमें मन्दी कारक है। परन्तु बुध अस्त है। ता० ६ दिसम्बर कुम्भे भौम सर्वधान्यके साथ साथ और वस्तुएँ भी तेज होंगी। यहाँ भौम राहुकी राशियुति कांसी पीतलके बर्तन आगे तेज करेगी परन्तु गुरुकी दृष्टि तेजीको बढ़ने नहीं देगी। किसी आचार्यका कथन है कि मंगल राहुकी युति मन्दी कारक होती है। बाजारका रुख देखें। ता. ७ को विशाखाका क्षन तेजीका झटका लायेगा। आज बुधका उदय सुख शान्तिकारक है। हींग गोला- उर्द में तेजी होगी। मार्गशीर्षमें बुध का उदय रुई, चांदी, सोना सूत सन गुड़ और गेहूँमें तेजी लाता है। यहाँ बुध डेढ़ मासमें उदय हो रहा हैं। अस्तकालके प्रथम तीन सप्ताहमें जो लाइन चलेगी वह दूसरे तीन सप्ताहोंमें बदल जायेगी। इस अमावस्या को घोर तेजी कारक खर्परयोग भी बनता है। सुदी १ बुधवारी है, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षमें गल्ला गुड़ खाण्ड घी तेल आलू अदरक शाक सब्जी सभी खाद्य पदार्थ तेज होंगे। **"प्रतिपत्सर्वमासेषु बधे दुर्भिक्षकारिणी"** परन्तु आज मूल नक्षत्र मन्दीका रियेक्शन लाएगा। सुदी ३ का क्षय—

किसी मासमें तीज या शुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी, बिक्रेता नट जाय॥

मूंग उर्द और घीका भाव इस पक्षमें तेज रहेगा। ता० १२ को ज्येष्ठाका शुक्र चांदी, सोना, रुई खाण्ड चावल सूत मन्दा और तिलहन तेज करेगा। ता०१३ को भी यही लायन रहेगी। रविवारी षष्ठि गल्ला और रस पदार्थोंमें तेजी कारक है। १५ दिसम्बर सोमवारको धनुः संक्रांति है। घी तेल कपास सूत में तेजी सोनेमें लाभ हो, सरदी बढ़ेगी, फसलमें हानि हो। मंगसिरमें धनुः संक्रांति दुर्भिक्षकारक होती है। गल्ला बहुत तेज हो जाता है। सं०२०२२,२३-२४ में भी यह संक्रांति मंगसिरमें थी। ता० १७ स्वात्यां गुरुः रुईमें मन्दी का चांस है। **"मार्गे नवम्यां रेवत्यां बुधो दुर्भिक्ष कारकः।"** मंगसिर में बुधवारी नौमी रेवती युक्त दुर्भिक्ष कारिणी होतीहैं। पूर्णिमा मंगलवारी तेजी करेगी। मृगशिर नक्षत्र आगे मन्दीका प्रतीक है। धनुः पर शुक्रका गमन गेहूं की फसलमें हानि करेगा। बाजारमें मालकी आमद रुकनेसे तेजी होगी। प्रजामें संगठन शक्तिको बल मिलेगा।

पौषमास

बदी एकम बुधवार होनेसे मंगसिर शुक्ल पक्षकी भांति इस पक्षमें भी खाद्य पदार्थ तेज रहेंगे। २५ दिसम्बर को अखबारी खबरोंके कारण रुईमें तेजी होगी, सोना चांदी तेज, २६ को ऐन्द्रयोगकी वृद्धि घी तेल मन्दा करेगी। २७ को बदी ३ और २८ को अश्लेषा वृद्धि होनेसे बाजारमें काफी घट बढ़ चलेगी। पूषायां रविः तिल तेल गुड़ चांदी सोना सन हलदी लाख चपड़ा ऊनी वस्त्रोंमें तेजी करेगा। सर्दी बढ़ेगी। ता० ३० को पूर्वमें शुक्रास्त होगा। पौषमें शुक्रका अस्त छत्र भंगकारी होता है। किसी राज्यमें मंत्रिमण्डल भंग अथवा परिवर्तित होगा। भद्रबाहु संहिताकार पौषमें शुक्रास्त श्रेष्ठ मानते हैं। धन धान्यकी वृद्धि होती हैं। चोरोंका भय बढ़ेगा। पंचम मंडलमें होनेसे गल्ला का नुकसान। मनुष्य गणमें होनेसे हरियाणा पंजाब दिल्ली राजस्थान विन्ध्यप्रदेशमें सुभिक्ष धान्य

भाव मन्दा रहेगा। साथ ही राजनैतिक संघर्ष और रोग भय रहेगा । बंगाल विहार उड़ीसा आसामके लिये शुभ कारक है । उपज श्रेष्ठ धान्य भाव मन्दा। ता०१ जनवरी सन् १९७० गुरुवार हस्तन८में गेहूँ जौं चना मूंग मटर सोना चांदी मन्दा, तिलहन साधारण तेज । २ जनवरीको बाजार मन्दीमें खुलेगा । पू०फा० का भौम सरसों अलसी मूंगफली खोपरा सोना चांदी तांवा तेज करेगा। दक्षिण भारतमें अन्न भी तेज होगा। ३ जनवरीको तिलहन गुड़ खाण्ड गल्ला तेज रहेगा। ता० ४को बुध वक्री होगा, मकरस्थ बुधवक्री होकर तिलहन तेज और गल्ला मन्दा करता है। सोना चांदी रुई गुड़ खण्डमें भी तेजी का उछाला आएगा। आज ही शनि मार्गी होगा। बाजारकी लाइन पलट जायेगी। तिलहनके अतिरिक्त सभी वस्तुएँ मन्दी होंगी। रुईमें अच्छी मन्दी हो सकती है। अरबदेश में भयंकर दुर्भिक्षका योग है। ६ जनवरीको बाजार मन्दीमें खुलेगा । बादमें तेजीका रुख बनेगा। १३ मंगलवारी होनेसे घी तथा गेहूँका स्टाक करना चाहिये, आगे लाभ होगा। ता०७ जनवरी अमावस्या को मूल नक्षत्र ८।३८ है। संवत् का पाया कमजोर हो गया। थोड़ा संवत् होगा। आज पश्चिममें बुध अस्त होगा। वक्री बुध अस्त होकर गल्ला तेज करता है। सोना चांदी रुईमें भी तेजी आती है। जनवरी को उ०षा० क्षय रस पदार्थ तेज करेगा। सोना चांदी रुई सूत सन किराना मन्दा । ९ जनवरी बज्रयोग का क्षय घी तेल तेज। १० को उषायां रविः तिल तेल गुड़ चांदी सोना सन हलदी कपड़ा ऊनी बस्त्रोंमें तेजी होगी। स्वातिके दूसरे चरण पर गुरु प्रवेश खेतीमें वृद्धि होगी। १२को वक्री बुध धनुः पर आवेगा फल फ्रूट और मेवाका भाव तेज होगा। बाजारमें अन्य पदार्थ मन्दा १३ को मकर संक्राति है। घी, तेल तैज होगा, गल्ला मन्दा। मंगलवार होनेसे रोग पीड़ा, सन नमक घी तेल सरसों तेज लालरंगके पदार्थ सरसों केशर मसूर अलसी गेहूँ तेज। उ०षा०का शुक्र रोग कारक है, रुई मन्दी होगी। ता०१५ जनवरी मकरे शुक्र सर्दीका जोर बढ़ेगा। सोना, चांदी सूत सनमें घट बढ़से तेजी, गुड़ खाण्ड घी तेल तेज। मीने भौम तृण (घास चारा) काष्ठ (लकड़ी) पशु तेज होंगे। व्यापारियोंको प्रथम ही संग्रह करना चाहिये। मीनका मंगल भारतमें सुखशान्ति, परन्तु जापानके लिए अनिष्टकारक होता है। वहां मंत्रिमंडलमें परिवर्तन, खाद्यकी कमी और अर्थ संकट उपस्थित होगा। जर्मनीके लिए श्रेष्ठ है। मीनस्थ भौम अनाजकी पैदावार बढ़ाता है परन्तु खनिज पदार्थोंमें कमी करता है। कोयला पत्थर सीमेण्ट चूनाके भाव तेज होंगे। १७ जनवरीको एकादशीमें कृत्तिका होनेसे आगे लालरंगकी बस्तुएँ और सोना तेज होगा। १७ को पूर्वमें बुधका उदयबादलवर्षा वायुका जोर होगा, रुई-कपास सोना चांदी गुड़गेहूँमें तेजी होगी, कई देशों एवं राष्ट्रोंमें संघर्ष होगा। राजस्थान मध्यप्रदेश और सौराष्ट्रके लिए हानिकारक है। २० जनवरीको अभिजित्का सूर्य भारतमें कहीं दगा फसाद करेगा। चांदी तेज, गुड़की फसलमें कमी। पूर्णिमा गुरुवारी सुभिक्षकारक है। पुष्य नक्षत्र आगे मन्दीका प्रतीक है।

नोट कृष्णपक्षमें तेजी और शुक्ल पक्षमें मन्दीका वातावरण रहेगा।

ज्योतिष गणितकी सारणियां

जो दैवज्ञ दिन भरमें एक जन्मपत्रीका कार्य सम्पादन करते थे इन सारणियोंसे दिन भरमें ४-५ जन्म पत्रियोंका कार्य सम्पादन कर रहे हैं।

(१) विंशोतरी दशा निकालनेकी सारिणी १।) रु०
(२) योगिनी दशा निकालनेकी सारिणी १) रुपया
(३) सप्तक वर्ग लगानेकी सारिणी १) रुपया
(४) अन्तर प्रत्यन्तर सूक्ष्मान्तर प्राणदशा १।) रु०
(५) चन्द्र स्पष्टीकरण सारिणी ७५ नये पैसे
(६) मास स्पष्टीकरण सारिणी मूल्य ६२ नये पैसे

राधेश्याम शर्मा राजज्योतिषी, किशनगढ़
(राजस्थान)

सन्ततिनियमन या गर्भनिरोधके कुछ योग

[लेखक :—श्री गणेशदत्तजी इन्द्र' शान्तिकुटीर, आगर म०प्र०]

[विश्वकी बढ़ती जनसंख्याको देखकर सभी चिन्तित हैं। भारत सरकारने भी परिवार-नियोजन-केन्द्रों-द्वारा आन्दोलन चला रक्खा है। शल्यचिकित्सा (अप्रेशन) लूप आदिका प्रयोग हो रहा है, फिर भी अभी पूर्ण सफलता नहीं मिल पाई है। गर्भनिरोधक सर्वोत्तम उपाय तो ब्रह्मचर्य या संयम व्रत पालन है। किन्तु इस भोग प्रधान वासनामय युगमें यह सबके लिए सम्भव नहीं, अतः विद्वान् लेखकने यहां भारतीय जड़ी बूटीके कुछ सरल सुलभ प्रयोग सन्ततिनिरोधक लिए दिये हैं लूप और शल्यक्रियाके झंझटसे बचने वाले इन प्रयोगोंसे लाभ उठा सकते हैं।

—सम्पादक]

आप इन निम्नांकित प्रयोगोंसे निश्चय ही अपनी मुराद पूरी कर पायेंगे।

(१) पुरुषको नियमित, नित्य अधिक देर तक लगभग एक घण्टे सिद्धासन लगाना चाहिए। सिद्धासन की विधि इस प्रकार है—अपने दाहिने पांवकी एड़ी पेडू पर मूत्रेन्द्रियके ठीक ऊपर जमा दें और बाएं पांवकी एड़ी मूत्रेंद्रियके नीचे अड़ा दें। दोनों घुटने जमीन पर जमे रहें कमर सीधी रखें। दोनों हाथोंकी अधखुली मुट्ठी बांधे, दोनों घुटनों पर रखें। गर्दन सीधी रहे। और जब तक आसन लगावें अपने इष्टदेवका स्मरण करें। गुरु मंत्रका जप करें। अथवा ॐ का बारम्बार मौन उच्चारण करें। इससे कामवासना एकदम शांत हो जाती है।

(२) कदम्बवृक्षके फलका महीन चूर्ण छः माशा एक तोला शहदमें मिलाकर चाटें। चाटनेके तुरन्त बाद बर्फपानी एक गिलास पीएं। ऋतु स्नानके बाद तीन दिन तक इस प्रयोगसे स्त्रीकी प्रजनन शक्ति नष्ट हो जाती है।

(३) जायफलका ३ माशा चूर्ण, तीन वर्षके पुराने एक तोला गुड़में, ऋतु स्नानके बाद १६ दिन तक नित्य खिलानेसे स्त्रीकी गर्भधारण शक्ति नष्ट हो जाती है।

( ) हाथीकी लीद ताजा लेकर उसे निचोड़ कर उसका जल निकालो। इस जलको ३ माशा लेकर छः माशा शहदमें मिला लो। यह योग एक सप्ताह तक स्त्रीको सेवन करानेसे उसकी प्रजनन शक्तिका लोप हो जायगा।

(५) तिलके शुद्ध तेलमें एक तोला राई पीसकर ऋतुकालमें तीन दिन तक जिस स्त्रीको पिला दिया जाय वह गर्भधारण नहीं करेगी।

(६) बायविड़ंग, लेंडी पीपल, और टंकण खारको एक-एक तोला लेकर चूर्ण कर लें, इस चूर्णको रजस्रावके दिनोंमें एक-एक तोला जो स्त्री दुधके साथ सेवन करती है वह गर्भधारणके योग्य नहीं रहती।

(७) ऋतु शुद्धिके बाद सोलह दिनों तक जो स्त्री नियमित रूपसे चार तोला तक, खाली पेट पुराना गुड़ खा लेगी—उसे गर्भ नहीं रहेगा।

(८) जो स्त्री ऋतु शुद्धिके उपरान्त छः दिन तक हल्दीकी एक-एक गांठ नित्य पानीके साथ निगल लेती है उसे गर्भस्थापन नहीं होता।

(९) श्वेत चन्दनका चूरा एक तोला, सरसों एक तोला और शक्कर एक तोला। इन तीनोंको मिलाकर चांवलके धोवनके साथ १६ दिन तक स्त्रीको पिलाने से उसकी गर्भधारण शक्ति निर्मूल हो जाती है।

(१०) तालीस पत्र ६ माशा और सोना गेरू ६

माशा दोनोंका चूर्ण बनाकर ऋतुस्नानके चौथे दिन लेनेसे गर्भधारण नहीं होता।

(११) ककड़ीके बीज रजस्वला होनेसे सात आठ दिन तक जो स्त्री सेवन कर लेती है उसे गर्भ नहीं रहता।

(१२) नीमका तेल पावभर लेकर उसमें आधा तोला कपूरका चूर्ण डालकर खूब गर्म कर लें। ठंडा होने पर शीशीमें भरकर रख लें। मैथुनके पूर्व इस तेलको योनिमें अच्छी प्रकार चुपड़े जानेसे वीर्यकीट मर जाते हैं और गर्भ नहीं रहता।

(१४) जैतून के २॥ तोला तेलमें दो माशा कपूर मिला लो। उसे संभोगके पूर्व स्त्री योनिमें लगा देने अथवा स्पंज या रुईका फाहा तर करके रखनेसे गर्भ नहीं रहता।

(१५) माजूफलको पानीमें पीसकर उसके घोलमें स्पंज या फाहा भिगोकर योनिमें रख लेनेसे गर्भ नहीं रहेगा।

(१६) बंगला पानका रस योनिके अन्दर चुपड़कर संभोग करनेसे गर्भ नहीं रहेगा।

(१७) तुलसीके पत्तोंका महीन चूर्ण शहदमें मिला कर योनिमें रखनेसे गर्भ स्थापित नहीं होता।

(१८) सफेद फिटकिरीके चूर्णको पानीमें घोलकर रख लो। इसमें स्पंज या भिगोकर भगमें रख लेनेसे गर्भ नहीं रहता।

(१९) मैथुनके उपरान्त यदि स्त्री प्रजननेन्द्रियमें कालीमिर्च और लौंगका महीन चूर्ण रखे तो गर्भ कदापि नहीं रहेगा।

(२०) पलाशके बीज घृत और शहद तीनों सम भाग रजोदर्शनके दिनोंमें स्त्री योनिमें रखे तो उससे गर्भ नहीं रहेगा।

(२१) फिटकरी और नौसादर, दोनों समभाग पानीमें घिसकर संभोगके पूर्व यदि योनिमें चुपड़ दिए जाएं या स्पंज अथवा फाहा भिगोकर रख दिया जाय तो गर्भ नहीं रहेगा।

(२२) रजस्वला स्त्री यदि लौंग, हल्दी आदि गर्म प्रकृतिकी वस्तुओंका सेवन अधिक मात्रामें करे तो गर्भ रहना असंभव है।

(२३) मैथुनोपरांत स्त्री तुरन्त खडी हो जाय और तुरन्त ही मूत्रोत्सर्ग किया करे तो भी गर्भ नहीं रहेगा।

(२४) सबसे अन्तिम अचूक और निर्दोष नुस्खा यह है कि स्त्री पुरुष दोनों ब्रह्मचर्य शील व्रत) से रहें।

शकुनविचार

कार्तिक

कार्तिक पड़वाको रहे सूरजके परिवेष।
अलसी, सरसों, तेल, तिल मँहगे बिकें विशेष॥
कार्तिक मावसके दिन स्वाति नखत विचार।
गिरें कहीं भूकम्पसे पर्वत या मीनार॥

मार्गशीर्ष

मँगसिर पहिले पाखमें कोई तिथि बढ़ जाय।
कहीं जगतमें युद्धका भारी बादल छाय॥
मंगसिर बदी त्रयोदशी के दिन पड़ै जो बर्फ।
बढ़ै धान्य धन सम्पदा मंगलमय चौतर्फ॥
कृष्णपक्षमें तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय।
एक वस्तु तो क्या घटै, सभी वस्तु घट जाय॥
मँगसिर चौदस मावसा घटा रहे आकास।
मँहगे भावोंमें बिके, गल्ला चारा घास॥

पौष

पौष बदी एकादशी, चालै दखिना पौन
बादल, बिजली गाज हो, अति दुर्भिक्ष कुसौन॥
पौष सुदी तेरस दिना मंगल या शनिवार।
भरलो सब व्यापारियों गेहूँके भण्डार॥

—दुर्गाप्रसाद गुप्त

(पृष्ठ १६ का शेष)

के आचार्योंमें श्रीसिंहतिलक सूरिने 'मन्त्रराज रहस्य' और 'तन्त्रलीलावती' का प्रणयन किया है। श्रीजिनप्रभसूरिको पद्मावती देवीके वरसे मन्त्रतन्त्रादिका ज्ञान मिला जिसका संग्रह 'रहस्य कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थमें हुआ है। इस ग्रन्थका कुछ अंश बीकानेरमें नाहटाजीकी लायब्रेरीमें सुरक्षित है। श्री हलाचार्यका 'ज्वालिनीमत' इस परम्पराका उत्तम ग्रन्थ है। इसमें १—मन्त्री, २—ग्रह, ३—मुद्रा, ४—मण्डल, ५—कटुतैल, ६—वश्ययन्त्र, ७—सुगन्ध, ८—स्नपनविधि, ९—नीराजनविधि और १०—साधनाविधि नामक दस अधिकार हैं। श्री सिद्धिसेन दिवाकर, अकलंकदेव, जिनदत्तसूरि, मुनि गुणाकर, कुन्दकुन्दाचार्य, हेमचन्द्राचार्य, इन्द्रनन्दि आदि अनेक आचार्योंका जैनतन्त्रसाहित्यमें महत्वपूर्ण योगदान है। अनेक मन्त्रगर्भ-स्तोत्र उवसग्गहर, भतिब्भर, नमिऊण, लघुशान्ति, भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि इस दिशामें उत्तम सहायक हैं। सिद्धचक्र और ऋषिमण्डल यन्त्रोंका प्रचार भी पर्याप्त हो रहा है। भैरव पद्मावतीकल्प, सूरिमन्त्रकल्प, अर्जुनपताका, नमस्कारमन्त्र, मन्त्रचिन्तामणि आदि ग्रन्थोंके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'विद्यानुशासन' है। इस एक नामके ग्रन्थकी रचना विभिन्न आचार्योंने की है। इन्द्रनन्दि, मल्लिषेण, सुकुमारसेन तथा मतिसागर आदि। मल्लिषेण रचित 'विद्यानुशासन' ११ वीं शतीका एक उत्तम ग्रन्थ है। इसमें २४ अधिकार तथा प्रायः ५ हजार पद्य हैं। इसकी विशेषता यह है कि तन्त्रशास्त्रमें ग्राह्य सभी विषयोंका यथावत् समाकलन इसमें किया गया है। पंच नमस्कार एवं पार्श्वनाथकी उपासनाके अतिरिक्त अनेक देवी-देवताओंकी आराधनाका भी समन्त्रक निर्देश है। जैनधर्मकी विशेषताओंको ध्यानमें रखते हुए मन्त्र-व्याकरण, और सन्तानप्राप्ति आदिके विभिन्न प्रयोग इसके मौलिक विषय हैं। बन्ध्यादि दोषवारण, बालरोग विज्ञान, गर्भ स्थितिकालके क्रमिक रक्षा प्रयोग, सर्पविज्ञान, विषविज्ञान, निधिगर्भ भूपरीक्षण आदि विषयोंका एकत्र संस्करण इस ग्रन्थकी महत्तामें चार चांद लगाता है। इस ग्रन्थका प्रकाशन अहमदाबाद की एक संस्थाने हाथमें लिया है, यह प्रसन्नताका विषय है। आज भी ऐसी अनेक अज्ञात कर्तृक तन्त्रशास्त्रीय कृतियां भारतके विभिन्न प्राचीन ग्रन्थ संग्रहालयोंमें सुरक्षित हैं जिनको प्रकाशमें लाना अपेक्षित है।

गायत्री महिमा

जगमग जगा मन दीप साधनाका ले,
जगमें नवीनतम निर्माण लाती है।
पानेसे प्रथम कुछ देनेकी सदिच्छा ही
साधकके मनमें नवजागरण जगाती है॥
बढ़ा निष्काम कामनाको दे सिद्ध, सिद्धि,
जीवनमें जयगान साधकके गवाती है।
मान अपमानमें भी रखके स्थिर सम,
गायत्री माँ नरको भी नारायण बनाती है॥

समझता स्वर्ण स्वयं आनेमें मलिनता जो,
कौन उसे कृपा कर, कांचन बनाती है।
देश जाति धर्म हित, जीवन सर्वस्व लगा,
प्राणियोंमें भावनाका निर्माण लाती है॥
साधनासे सिद्ध कर साधककी भावनासे,
पत्थरमें भी प्रभुका पारायण कराती है।
जीवनमें प्रेरणाकी जगमग ज्योति जगा
गायत्री माँ नरको भी नारायण बनाती है॥

रचयिता—रामचन्द्र शास्त्री, मारुतीगंज उज्जैन।

पांच अनुभूत प्रयोग

[ले०—श्री मूलचन्द नागोरी भड़गत्यांभवन, मोतीकटला अजमेर]

(१) आंख दर्दकी औषध

सफेद फिटकड़ी साफ दो तोला, छोटी इलायचीके दाने साफ किये हुए ४ माशा, तूतिया नीलाथोथा ३ रत्ती। इन तीनों चीजोंको साफ लेकर किसी खरलमें जो काले पत्थरकी या सफेद पत्थरकी न घिसने वाली हो उसमें बारीक घोट (पीस) लेवें। जब घोटते घोटते खूब महीन हो जावे तब निकालकर पौन पव्वा साफ बोतलमें गंगाजल डालकर दवा मिली घुटी हुई उसमें मिला दें, और १०,१२ दिन तक पक्का डाट लगाकर रख देवें, ताकि दवा अच्छी तरह घुल जायें। ३-४ दिनमें बोतलको हिला दिया करें ताकि दवा मिलती रहे। बादमें रोगीको चित्त लिटाकर, ३-४ बूंद दवा ड्रापर (पिचकारी) से डालें। अनुभूत दवा है।

(२) शिर दर्द नाशक औषध

सफेद फारसी गेहूँ १॥ तोला साफ करके रात्रिको पानीमें भिगो देवें और सवेरे नितार करके उसमें १॥ तोला पोस्तके दाणे मिलाकर साफ सिला पर खूब अच्छी तरह बारीक पीस लेवें। पीसनेके बाद उस पीसी हुई लुगदीमें यथायोग्य असली गायका घृत और देशी खाण्ड या मिश्री मिलाकर हलवा बना लेवें। सवेरे कुछ दिन सेवन करनेसे हर तरहका शिर दर्द नया पुराना चाहे जैसा हो, अवश्य जाता रहेगा।

(३) पेट या उदर शूलकी औषध

सफेद कच्ची फिटकरी दो माशेको खूब बारीक पीस कर दो माशे असली शहदमें मिलाकर रोगी चाटे, जिस समय दर्द हो और दवाका चमत्कार देखें।

(४) मोतिया बिन्दु नाशक सुरमा

(१) सफेद मिरच (जो काली मिरच धोई हुई होती है) १॥ माशा।

(२) छोटी पीपल—३ माशे

(३) समुद्र फैन ३—माशे

(४) सैंधा नमक २'। माशे

(५) काला सुरमा २। तोले

विधि—इन पांच चीजोंको पंसारीके यहांसे ला करके खूब साफ करलेवे और पत्थरकी काली खरलमें जिसमें पत्थर न घिसता हो खूब बारीक घोटे, फिर मलमलके बारीक कपड़ेमें छान कर शीशियोंमें भर लेवे, इसको सोते समय जस्तकी सलाईसे लगावें। चश्मे तककी आदत छूट जाती है, अनुभूत है।

(५) दाढ़ दर्दकी अनुभूत दवा

केलशियम लेकटास (Calciam Lactas वह एक अंग्रेजी दवा है जो अंग्रेजी दवा बेचने वालोंके यहाँ बहुत सस्ती मिलती है—एक औंस ले आवें और उसकी ८ पुड़िया बना लेवें। एक पुड़िया लेकर उससे मजन करें, दर्दकी जगह उंगलीसे २,३ मिनट तक मलें। दिनमें तीन वार मलें। दो रोज करनेसे आराम हो जायेगा। यह दवा चूने जैसा सफेद रंगका पाउडर होता है, लगाते समय पेटमें निगलना नहीं चाहिये, फिर भी निगली जावें तो कोई हरज नहीं होता है।



पके फलोंके गुण

आपके बच्चोंके लिए चाट, टाफ़ी, गोलियां लाभकारी चीज़ें नहीं हैं, इनकी जगह इन्हें निम्नलिखित चीजें दीजिए---

पका केला और किशमिश

अच्छे पके केलेको फेटकर गाढ़ा घोल तैयार करें। भीगे बादाम (अथवा मूंगफली) और किशमिश मिलाकर नाश्तेमें दें। भोजनके अन्तमें आइसक्रीमके स्थान पर परोसा जा सकता है। यह एक बहतरीन पौष्टिक खुराक है।

सूखी अंजीर

बच्चोंको मिठाइयोंकी जगह अच्छी तरह धोकर सूखी अंजीर दें। अंजीरमें विटामिन बी अच्छा मिलता है। पेट ठीक रहता है। गुर्देकी बीमारी वालोंके लिए भी लाभकारी है।

अमरूद

अच्छे पके फलोंको धोकर बारीक टुकड़े करें। छिलका निकालनेकी जरूरत नहीं और न बीज। फिर पके केलेका गूदा और किशमिश मिलाकर स्वादिष्ट फलका सलाद बन जाता है।

अमरूदमें पोटेशियम फास्फोरस क्लोरीन और गन्धक अच्छी मात्रामें मिलता है। बिगड़े पेट वाले और कब्ज वाले अथवा खूनकी कमी वाले इसका सेवन करें।

पपीता

पके फलका स्वादिष्ट गूदा दिनमें कितनी ही बार खाया जा सकता है। किसी भी प्रकार पपीताको परोसा जा सकता है। हाँ, गूदेमें हल्कासा नींबूका रस मिलानेसे स्वाद भी अच्छा बन जाता है। खटमिठ्ठे गूदेमें तेज नमक या मसाला हरगिज न मिलायें।

पपीता और मीठे सन्तरेका गूदा बराबरके अन्दाजसे मिलाकर यह अपने किस्मका एक अनोखा स्वाद देगा।

पपीता पचनेमें हल्का और प्रोटीन प्रधान है जिसमें शुगर और चिकनाई मिलती है। कमजोर बालक, वृद्ध अथवा नाजुक महिलाओंका यह एक श्रेष्ठतम भोजन है। इसमें सोडियम और मैग्नेशियम अधिक मिलता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें प्रोटीनको पचाने वाला पेचीन तत्व खूब मिलता है। इसलिए जिनका हाजमा बिगड़ा रहता है उनके लिए पपीता वरदान है।

ब्राह्मण

ब्राह्मण वसुधा का विश्वास,
ब्राह्मण संस्कृति का कलहास
युग का स्वर्ण विहान सुहावन
ब्राह्मण अध्यात्मिक इतिहास

कुत्सित बात विनाशक ब्राह्मण
नवयुग का आराधक ब्राह्मण।
अनन्त अद्भुत बात सुनाता,
मानवता उत्पादक ब्राह्मण।।

ब्राह्मण मानव हित का सार,
ब्राह्मण प्रकृति का उपहार
उन्मत्त प्रलाप विनाशी ब्राह्मण,
पावन वचनों का भण्डार

निभाता नवयुग का दायित्व,
विश्व में ब्राह्मण का साहित्य।
'सुमन' के गौरव का उपहार
दिव्य आध्यात्मिकताका आदित्य।।

विबुध विविध विधि व्यापक ब्राह्मण,
आत्म-तत्व आराधक ब्राह्मण।
सत्य मूर्ति अध्यात्म अधीक्षक,
सद्धर्म कर्म संग्राहक ब्राह्मण।

रचयिता — उत्सवलाल तिवारी 'सुमन' उज्जैन

त्रैमासिक राशि भविष्य

नवम्बर-दिसम्बर १९६९ जनवरी १९७०

[लेखक—श्री ओंकारनाथ त्रिवेदी, ४२८ कटरा, बाराबंकी (उ०प्र०)]

मेष

नवम्बर—चिन्ता-संघर्ष पूर्ण होते हुए भी यह मास पर्याप्त अच्छा है और निश्चित रूपसे मंगलमय परिवर्तनोंकी सूचना देता है। व्यापारको बढ़ानेमें जुटे रहेंगे; वह बढ़ेगा-फैलेगा; बिक्री बहुत तेजीसे बढ़ेगी; सम्भव है नया कारोबार आरम्भ करें; नयी व्यवस्थाएँ योजनाएँ आरम्भ होंगी। प्रयासोंमें सफलता, विजय; उलझे मामले सुलझ जाएँगे, बेकार हैं तो काम धन्धेमें लग जाएँगे। समाजमें यश-सम्मान-प्रभावकी वृद्धि। कामनाएँ पूर्ण होंगी। स्थाई साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; नवीन लाभ स्रोतकी स्थापना; वस्त्र-वैभव-सम्पत्ति प्रियजन मिलन; सुसमाचार। अच्छा स्वास्थ्य। सुखद यात्राएँ। सरस-निराले वैवाहिक सुख। बहुतोंके विवाह होंगे। नवीन प्रेम सम्बन्धका आरम्भ और उसमें सफलता। १०-११ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। जिन प्रयत्नोंमें आप विगत दो मासोंसे लगे थे उनमें पूर्ण सफलता मिल जायगी। कामनाओंकी पूर्ति; तृप्ति विजय। अपनी उपलब्धियों पर फूल उठेंगे। व्यापार बढ़ेगा, फैलेगा और चमकेगा। समाजमें यश-सम्मान प्रतिष्ठा। स्थायी साधन तथा दो अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पत्ति; प्राचीन धन लाभ या बकाया रकमकी प्राप्ति उत्तराधिकारादिसे सम्भाव्य; लाभ स्रोतका विकास। विवाहित जीवनके विविध सुख; उत्सव या मंगल कार्य भ्रमण और मनोरंजनके अवसर। हर्षदायक समाचार और पत्र। प्रेम सम्बन्धमें सफलता। स्वास्थ्यमें वृद्धि। सन्तानको कष्ट। एक प्रिय व्यक्तिसे विछोह। १ २-१० ११-२८-२९ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास अच्छा है और जीवनमें मंगल मय परिवर्तनोंके साथ प्रगतिकी सूचना देता है। जो आर्थिक-व्यावसायिक समस्याएँ और मानसिक चिन्ताएँ दीर्घकालसे घेरे थी वे घट जायँगी। सुख-शान्तिका आभास मिलेगा। उत्साह पूर्वक कर्मपथ पर बढ़ेंगे; प्रयासोंमें सफलता और विजय; समाजमें मान-प्रतिष्ठा, व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा; बिक्री अच्छी होगी। चल रहे कामको बढ़ाने या किसी नये नये कारोबार में पूँजी लगानेका निश्चय करेंगे। स्थायी साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे पर्याप्त धन लाभ; कामनाओंकी पूर्ति। घर-परिवार और विवाहित जीवनके सुख बीच बीचमें सन्तोष जनक रूपमें मिलेंगे। स्वास्थ्य अच्छा। यात्रा होगी। प्रेम सम्बन्ध में सफलता। २३-२५-२६ ता० नेष्ट।

वृषभ

नवम्बर—ग्रह स्थितिको देखते हुए इस मासको अच्छा नहीं कहा जा सकता। भविष्यमें जो आशा सफलताकी धूमिल किरण दिखायी दे रही हैं वे तिरोहित हो जाएँगी। धीरे-धीरे संघर्ष बढ़ने लगेंगे। जितना परिस्थितियोंको सुलझानेका प्रयत्न करेंगे उतना ही उलझते जाएँगे। दो अप्रिय घटनाओं के योग हैं। व्यवसायमें हानि। सम्भव है कि चल रहा कारोबार तोड़कर नया काम करनेका निश्चय करें। पुलिस या टैक्स विभाग वाले छापा मारेंगे। समाजमें अपयश और कलंक। प्रियजन भी विरोधी बन जायँगे। अल्प धन लाभ अति विशेष व्यय

ओर हानि। किसी बीमारको देखने अस्पताल या अन्यत्र जाएँगे। शोक प्राप्ति। स्वास्थ्य खराब बीमारी सम्भाव्य। वैवाहिक सुखोंका अभाव। कष्ट-प्रद यात्रा और दौड़धूप। ऋण लेना पड़ेगा। ३-४ १४-१५-२१-२२ ता० नेष्ट।

दिसम्बर--यह मास भी संघर्ष पूर्ण है। किन्तु सुख सुविधा देने वाले दो तत्व आ जानेसे थोड़ी शान्ति मिलेगी और अन्तिम सप्ताहमें जो कुछ भी हैं उससे सन्तोष करनेको जी चाहेगा। मनमें भविष्यकी नयी योजनाए बनावेंगे। स्थायी साधनसे कम किन्तु अन्य दो रास्तोंसे धन लाभ; प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति; प्रयत्न करने पर नकद या मालके रूपमें ऋण मिल सकता है। विशेष व्यय और हानिसे सन्तप्त रहेंगे। घाटा उठा कर माल बेचना पड़ सकता है। व्यवसायको सुधारनेका उपाय करेंगे किन्तु कोई काम न हो सकेगा। समाज में बिगड़ी प्रतिष्ठा बनने लगेगी। पत्नी सहयोग देगी। प्रियजन मिलन। परदेशमें हैं तो घर आवेंगे। स्वास्थ्यमें सुधार। ५-६-१८-२९ ता० नेष्ट।

जनवरी—संघर्ष पूर्ण होते हुए भी यह मास पर्याप्त अच्छा है और जीवनमें मंगलमय परिवर्तनोंकी सूचना देता है। शान्तिके साथ धन लाभ और भाग्योदयके उपायों पर विचार करके उन्हे कार्य रूपमें परिणत करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी कामनाएँ पूर्ण होंगी। व्ययमें कमी आ जायगी। धन लाभ बढ़ेगा। स्थायी साधन या एक दो अन्य रास्तोंसे सन्तोषप्रद धन लाभ; नवीन लाभ स्रोतकी स्थापना या लाभ स्रोतमें विकास; प्राचीन धन लाभ या बकाया रकमकी प्राप्ति; नवीन वस्त्र वैभव; समाज में प्रतिष्ठा। बिगड़े हुए व्यवसायमें सुधार। धर्म श्रद्धा। पत्नीका सुख सहयोग। हर्षदायक समाचार और पत्र। प्रिय जन मिलन। यात्रा होगी। स्वास्थ्य अच्छा। ८-९-१४-२०-२१ तारीखें नेष्ट।

मिथुन

नवम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। एक दो नेष्ट फल मिलने पर भी जीवनमें प्रगति होगी। धन लाभ सम्बन्धी आपकी लम्बी चौड़ी कामनाओं का पूर्ण हो जाना तो कठिन है, किन्तु स्थायी साधन से विशेष कर २-३ अन्य रास्तोंसे पर्याप्त धन मिल जायगा। आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। व्यवसायको बढाने, फ़ैलानेके लिए नक़द या मालके रूपमें ऋण मिल सकता है। व्यापारमें लाभ। प्रयासोंमें सफलता। समाजमें मान और जन-प्रियता। एक बार आकस्मिक अपमान या कलंक भी मिलेगा। मनो-रंजनके अवसर। प्रियजन मिलन। घरमें उत्सव या मंगल कार्य। पत्नीका सुख सहयोग। एक निकट सम्बन्धी को कष्ट। आपका स्वास्थ्य तो ठीक होगा पर दुर्घटना या चोट चपेटका भय हैं। चर्या अस्तव्यस्त; उसमें आकस्मिक व्यवधान। ३-९-१४ १५ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास सघर्ष पूर्ण प्रतीत होगा। अपने उलझे हुए काम प्रथमार्धमें ही बना लेना चाहिए। स्थायी साधन और दो अन्य रास्तोंसे सामान्य धन लाभ। एकाएक ऋण या सञ्चित धन सम्पत्तिका सहारा लेना पड़ सकता है। मित्रों पर तो विश्वास नहीं है, पर एक साधु स्वभावका बड़ा आदमी अच्छा सहयोग देगा। व्यापारकी स्थिति सन्तोषजनक; बिक्री बढ़ाने और कारोबारमें सुधारका परिवर्तन का उपाय करेंगे। समाजमें जनप्रियता होते हुए भी कलंक मिलेगा। पत्नीसे सेवा सहयोग-विनोदकी प्राप्ति किन्तु अंतरंग सुखोंमें बाधाएँ। एक नवीन प्रेम सम्बन्धका आरम्भ। स्वास्थ्य अच्छा। यात्रा होगी। परदेशमें हैं तो घर आवेंगे।। २८ ता० के आसपाससे सुख-शान्तिका आरम्भ। ३-४-१४-१५-३० ३१ ता० नेष्ट।

जनवरी— अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास संघर्ष पूर्ण प्रमाणित होगा । कुछ-एक व्यक्तिगत उलझनें घेर लेंगी । उत्तरार्धमें जोश, क्रोध या जल्दबाजीमें कोई ऐसा काम कर बैठेंगे कि बादमें पछताना पड़ेगा । विरोधियोंका सामना होगा । स्थायी साधन और विशेष कर दो-तीन अन्य रास्तोंसे काम चलाने भरको धन लाभ; प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति सम्भाव्य । एक सज्जन पुरुषका महत्वपूर्ण सहयोग । श्रेष्ठ मनोरंजनके अवसर । व्यापारको बढ़ानेमें उत्साहपूर्वक जुट जायँगे । उसमें थोड़ी नयी पूंजी भी लगावेंगे; ऐसा करना ही चाहिए, समाजमें प्रतिष्ठा और जन प्रियता । पत्नीका प्रेम वैवाहिक सुख । दौड़ धूप करनी पड़ेगी । स्वास्थ्य अच्छा किन्तु बीच बीचमें थकान । प्रेम सम्बन्धमें सफलता । १-२-११-१०-२८-२९ ता० नेष्ट ।

कर्क

नवम्बर— यह मास संघर्ष पूर्ण है ।इधर उधर भटकने और प्रयत्न करने पर भी कोई सुपरिणाम न निकलेगा । तृष्णा बढ जायगी ।पाप कर्मोंकी प्रवृत्ति रहेगी या सम्भव है कोई अशोभन कार्य कर बैठें । एक अप्रिय घटनाके योग है जो ११ ता०को या इसके आसपास घटित होगी । घर- बाहर कलह-विवाद । प्रियजनोंसे वैमनस्य । सामान्य धन लाभ हो जायगा । विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे । व्यापारमें उतार चढ़ाव । नयी समस्याएँ सामने आवेंगी । कारोबारमें कोई परिवर्तन करेंगे, समाजमें प्रतिष्ठा घटेगी । घर-परिवारके थोड़े सुख मिल जायँगे । वैवाहिक सुखोंमें बाधाएँ । प्रेम सम्बन्धमें संकट । यात्रा और दौड़धूप । किसी निकट सम्बन्धीको विशेष कष्ट । स्वास्थ्य खराब ; उदर रोग, दुर्घटनाका भय है । ३-४-२६-२९ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—संघर्षों संकटोंसे युक्त होने पर भी यह मास जीवनमें सुधारकी सूचना देता है । १० ता० से परिस्थितियाँ बदलने लगेंगी और उत्तरार्ध में कई समस्याएँ सुलझ जायेंगी । धन लाभमें बाधाएँ, हीनताका का अनुभव । स्थायी साधन तथा २-३ रास्तोंसे सामान्य धन लाभ । व्यवसायमें उतार चढाव, उसकी रूप रेखामें परिवर्तन करने या उसे बढ़ानेका उपाय करेंगे; तदर्थ नक़द या मालके रूपमें ऋण मिल जायगा । पाप कर्मोंकी ओर प्रवृत्ति रहेगी । समाजमें अपयश और असम्मान । घर परिवारकी समस्याएँ बढेंगी । एक दो प्रिय जनोंसे वैमनस्य और शत्रुता । दिन चर्या अस्त व्यस्त । दौड़ना धूपना और भटकना पड़ेगा । वैवाहिक सुखोंमें बाधाएँ । आप का स्वास्थ्य सन्तोष जनक पर दुर्घटना या चोट चपेट का भय । ता० ८-९-१६-२१-२६-२९ नेष्ट ।

जनवरी—यह मास संघर्ष पूर्ण है । इधर उधर भटकनेमें समय बीतेगा और कोई सार न निकलेगा । पाप कर्मोंकी ओर प्रवृत्ति रहेगी । घर-बाहर कलह विवादके अवसर आवेंगे । स्वजन भी विरोधी बन जायेंगे । धन लाभ सामान्य । दीनताका अनुभव । ३से ५ ता० के बीच एक दो नयी समस्याएँ उत्पन्न हो जायँगी और व्ययमें चिन्ता जनक वृद्धि होगी । विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे । ऋण या संचित धन सम्पत्तिका सहारा लेना पड़ेगा । सोचे हुए समय पर और सोचे हुए ढंगसे धन न मिलेगा । मित्रोंसे सहयोगकी आशा नहीं । व्यवसायमें उतार चढाव और घाटा । कारोबार बदलनेको जी चाहेगा । समाजमें अयश और कलंक । दुःस्वप्न दिखाई देंगे । स्वास्थ्य खराब; दुर्बलता और थकान । यात्रा अवश्य होगी । ११-१२-२०-२१-२९-३० ता० नेष्ट ।

सिंह

नवम्बर- यह मास संघर्ष पूर्ण और घटना प्रधान है । जीवनमें एक दो महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे । व्यवसाय या व्यवसायका स्थान बदल देंगे । नयी योजनाओंके साथ नया काम आरम्भ होगा ।

आपका मन व्यथित हो उठेगा पर अन्तमें नयी व्यवस्था सन्तोष जनक प्रतीत होने लगेगी। यात्राके प्रबल योग हैं। सम्भव है कि कहीं परदेश चल दें; और परदेशमें हैं तो घर आवेंगे। समाजमें अपयश या कलंक। स्थायी साधन तथा दो अन्य रास्तोंसे सामान्य धन लाभ; वस्त्र वैभव सम्पत्ति। प्रियजन समागम भ्रमण और मनोरंजनके अवसर, उत्सव; सुसमाचार। उत्तरार्धमें घर परिवारके सुख। वैवाहिक सुखोंमें वाधा। प्रेम सम्बन्धका आरम्भ। स्वास्थ्य खराब। १०-११-२२-२३-२६ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—ग्रह स्थितिको देखते हुए इस मासको अच्छा नहीं कह सकते हैं। नयी समस्याएँ उत्पन्न होकर आपको विचलित कर सकती हैं। जहाँ भी सफलता पानेका प्रयत्न करेंगे वहीं मामले उलझ जायँगे। व्यापारमें उतार चढ़ाव; गत मासमें बनायी हुई योजनाओंमें संशोधन करनेकी विवशता। आप ऋणी हैं तो वह देना पड़ेगा। समाजमें अप्रतिष्ठा। चित्त में क्षोभ। कहीं चले जानेको जी चाहेगा। स्थायी साधन तथा एकाध अन्य रास्तेसे अल्प धन लाभ। दो व्यक्ति आपका प्रत्यक्ष विरोध करेंगे। कलह विवाद। मुकदमेबाजी करनेकी प्रेरणा मिलेगी। पाप कर्मोंमें रुचि। घर- परिवारके सुख प्राप्त होंगे पर वे अन्तमें समाप्त हो जायँगे। वैवाहिक सुखोंमें वाधाएँ। स्वास्थ्य खराब; उदर रोग। यात्रा और दौड़धूप करनी ही पड़ेगी। १०-११-१८-१९-२५-२६ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास संघर्ष पूर्ण है। संघर्षों पर विजय पानेका भरसक प्रयत्न करेंगे और सफल होंगे। आपकी स्थिति में कोई अप्रिय परिवर्तन हो सकता है। धन लाभके मार्गमें नयी समस्याएँ उत्पन्न होंगी। सोचे हुए ढंगसे और सोचे हुए समय पर धन न मिलेगा। फिर भी आवश्यकताओंकी पूर्ति भरको धन किसी-न-किसी प्रकार मिल सकता है। ऋण या संचित धन सम्पत्तिका सहारा लेना पड़ेगा। मित्रोसे सहायताकी आशा नहीं है। विश्वसनीय प्रियजन भी काम न आवेंगे, वे शत्रुता भी करेंगे। व्यवसाय रुकता प्रतीत होगा पर रुकेगा नहीं। समाजमें प्रतिष्ठा घटेगी। घर-बाहर कलह विवाद। वैवाहिक पारिवारिक सुखोंमें वाधाएँ। स्वास्थ्य सन्तोष जनक। यात्रा अवश्य होगी। १-१४-१५-२२-२३ ता० नेष्ट।

कन्या

नवम्बर—एक दो नेष्ट फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास अच्छा है और जीवनमें प्रगति तथा मंगल मय परिवर्तनोंकी सूचना देता है। प्रयासोंमें सफलता; विजय, स्थायी साधन तथा कई अन्य रास्तोंसे अतुल-धन लाभ, किसी मोटी रकमकी प्राप्ति; कोषकी वृद्धि; वस्त्र-वैभव-सम्पत्ति; मित्रों-परिजनोंका अत्युत्तम समागम, खान-पान भ्रमण-वार्तालाप-मनोरंजनके अवसर; दावतें उपहार; हर्षदायक समाचार और पत्र, व्यवसायका विकास, नया कारोबार या नयी योजनाओंके साथ नया प्रबन्ध, पत्नीसे सुख-सहयोग। सन्तानको कष्ट, कुछेक स्वजनोंसे कलह-विवाद; शोक, दिनचर्या ग्रस्त व्यस्त, बौद्धिक उलझनोंमें वृद्धि। यात्राके योग हैं। समाजमें प्रतिष्ठा और जन प्रियता। ५-४-१२-१३-२१-२२ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास आपके लिए पर्याप्त अच्छा है। गत मासमें जो समस्याएँ आपको त्रस्त किए थी उनमें अधिकांशका सुखद समाधान हो जाएगा। मनको शान्ति मिलेगी। शत्रुओं विरोधियोंका पराभव। स्थायी साधन तथा कई अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; कोषकी वृद्धि; नवीन वस्त्र-वैभव सम्पत्ति। व्यापारको बढ़ाने-संवारने या नया कारोबार करनेकी योजना बनाकर चालू कर देंगे। ऋणकी आवश्यकता होगी तो नक़द या मालके रूपमें मिल जायगा। समाजमें प्रताप-प्रभाव। खान पान-भ्रमण-वार्तालाप मनोरंजनके सुअवसर, प्रियजन मिलन; हर्षदायक समाचार और पत्र, अच्छा स्वास्थ्य; घर-परिवार

के सुख; उत्सव या मंगल कार्य, मेहमानोंका आगमन पत्नीका सहयोग रहेगा, पर १५से २३ ता० के बीच वैवाहिक सुखोंमें बाधा। १-२-१८-२६-२८-२९ ता० नेष्ट।

जनवरी— यह मास पर्याप्त अच्छा है। जैसे जैसे समय आगे बढ़ेगा शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी। सम्भव है कि कुछेक व्यक्तिगत समस्याएँ आपको भ्रमित करदें पर उनका अन्तिम परिणाम शुभ ही होगा। प्रयासोंमें सफलता, विजय। स्थायी साधन तथा कई अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; आकस्मिक लाभ; कोषकी वृद्धि; नवीन वस्त्र–सम्पत्ति। मित्रों-परिजनोंका अत्युत्तम समागम; घरमें उत्सव या मंगल कार्य। दावतें; खान पान-वार्तालाप-मनोरंजन के अवसर; मनमें सुख शान्ति; हर्षदायक समाचार और पत्र। पत्नी द्वारा सेवा-सहयोग। व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा। दुकान या गद्दीकी नयी सजावट करेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा और जन प्रियता। स्वास्थ्य अच्छा किन्तु थकान अनुभव। एक यात्रा होगी। परदेशमें हैं तो घर लोटेंगे। १५--१६-२४-२५ ता० नेष्ट।

तुला

नवम्बर— आपके लिए विगत एक वर्षसे संकट-संघर्ष पूर्ण समय चल रहा है। यह मास कुछेक नयी समस्याएँ लेकर आया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अज्ञात शक्तियाँ आपकी परीक्षा ले रही हैं। यह निश्चित है कि अप्रिय परिस्थितियोंका सामना आप धैर्य और गौरव पूर्वक करेंगे। स्थायी साधनसे सामान्य धन लाभ। विशेष व्यय और हानिसे बच नहीं सकेंगे। कपटी लोगों और शीघ्र धनी बनाने वाली योजनाओंसे बचना चाहिये। व्यवसायमें उतार चढ़ाव; नया कारोबार करनेका संकल्प करेंगे। स्थान परिवर्तनके योग हैं। कलह-विवाद; सगे-सम्बन्धियों से वैमनस्य; शत्रु चिन्ता; वैवाहिक-पारिवारिक सुखों में बाधा; किसी प्रियजनकी गम्भीर बीमारी या मृत्यु, स्वास्थ्य खराब; बीमारी या चोट चपेट। यात्रा अवश्य; परदेशमें हैं तो घर आयेंगे। ६-९-१० ११-१४ १५-१६-१७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास संघर्ष पूर्ण है। ३ से ८ ता०के बीच कुछेक नयी समस्याएँ और उलझनें आरम्भ हो जायँगी — जो १४ या १५ ता० को गम्भीर रूप धारण करेंगी। धैर्य और गौरव पूर्वक आप प्रतिकूल परिस्थितियोंका सामना करेंगे। एक उच्च कुलका मित्र उत्तरार्धमें सहयोग देगा। घर-बाहर-कलह विवाद। चार व्यक्ति प्रत्यक्ष शत्रुता करेंगे। आवश्यकताओंकी पूर्ति भरको धन अवश्य मिल जायेगा नवीन वस्त्र-वैभवकी प्राप्ति सम्भाव्य। एक सुसमाचार। व्यवसायको सँभाले रहनेका प्रयत्न करेंगे और सफलता भी मिलेगी। घर-परिवार और वैवाहिक सुखोंमें बाधाएँ। सन्तानको कष्ट। व्यसनों में चिन्ताजनक वृद्धि। उदर विकार, आकस्मिक गुप्त दुर्बलता। यात्रा होगी। २३-२४-ता० नेष्ट।

जनवरी--यह मास सामान्य अच्छा है और दीर्घ कालीन संघर्षोंके बाद मंगलमय परिवर्तनोंकी सूचना देता है। दो तीन गम्भीर समस्याओंका समाधान हो जायगा और मनको शान्ति मिलेगी। शत्रु और विरोधी दब जायँगे, उत्साहका अनुभव होगा। केवल एक विरोधी सामने रह जायगा। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। घर-परिवारमें सुखका संचार। व्यवसाय पर ध्यान केन्द्रित होगा; दूकान या गद्दीको सजावेंगे। कारोबार बढ़ानेके लिए नक़द या मालके रूपमें ऋण मिल जायगा। समाजमें प्रताप-प्रभावकी वृद्धि। स्थायी साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे धन लाभ। यात्रा होगी। परदेशमें हैं तो घर आवेंगे। वैवाहिक सुखोंमें बाधा। स्वास्थ्यमें सुधार। नये नये व्यय उठ खड़े होंगे। १-१०-११-१९-२०-२७-२८ ता० नेष्ट।

वृश्चिक

नवम्बर—यह मास संकट-संघर्ष पूर्ण है । अत्यधिक सावधान न रहने पर किसी लम्बी विपत्तिमें पड़ सकते हैं । धन लाभ सामान्य; अपने आर्थिक मामले ६-७ ता०में अवश्य ही बना लें । अति विशेष व्यय और हानिसे त्रस्त हो जायेंगे । १०से १३ के बीचसे हानि और व्ययके ऐसे कठिन झोंके आवेंगे कि संभल पाना कठिन है । व्यवसायमें हानि; कारोबार टूटनेका भय । नया व्यापार करनेकी योजना आरम्भ करेंगे; उसके लिए ऋण भी मिल जायगा । शत्रु वृद्धि । गुप्त शत्रु मिलकर षड्यंत्र कर सकते हैं । कोई मित्र-परिजन काम न आवेगा । टैक्स विभाग वाले छापा मारेंगे । ऐसा कोई काम न करें जिसमें फँस जाने या घाटा खानेका-भय हो । घर-परिवार और शयन कक्षके सुखोंमें बाधा । शोक, लम्बी यात्रा परदेश गमन । समाजमें अप्रतिष्ठा । ८-९-११-१२ २१-२२-२६-२७ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—संघर्ष पूर्ण होते हुए भी यह मास परिस्थितियोंमें सुधारकी सूचना देता है । विशेष व्यय और हानिके योग चलते रहेंगे । स्थायी साधन और विशेष कर दो अन्य रास्तोंसे पर्याप्त धन मिल जायगा; सम्भव है कि श्रीमती जी या दो मित्र आर्थिक सहयोग दे जायँ । सुखोपभोग, खान पान और वार्तालापके अवसर मिलेंगे उत्तराधिकारीसे लाभ सम्भाव्य । व्यापार सुधारने और लाभ बढ़ाने पर ध्यान जमा देंगे । नये कारोबारमें पूंजी लगती जायगी । स्थान परिवर्तन होगा; घरमें हैं तो परदेश जायँगे; परदेशमें हैं तो घर आवेंगे । दूकान या कारोबारके स्थानमें भी परिवर्तन हो सकता है । घर-परिवारकी उग्र समस्याएँ । बन्धुवर्गसे कलह वैमनस्य । एक प्रियजन गुप्त शत्रुता करेगा वैवाहिक सुख । स्वास्थ्य खराब; उदर रोग । ५-६-१४-१५-२६-२४ नेष्ट ।

जनवरी—यह मास मिश्रित फल वाला है । प्रयासोंमें सफलता, शत्रुओं और बाधाओं पर विजय; साहस आदि शुभ फल तो मिलते रहेंगे पर एक नयी समस्या उठ खड़ी होगी जो आपको अशान्त कर देगी; उस समस्याके मूल कारण आप स्वय होंगे । स्वजनोंसे कलह-वैमनस्य । सन्तानको कष्ट । साथ ही प्रियजन मिलन; हर्षदायक समाचार और पत्र, भ्रमण, सभा या गोष्ठीमें सम्मिलन । स्थायी साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे पर्याप्त धन लाभ, नवीन वस्त्र वैभव । विशेष व्यय और हानिसे त्रस्त हो जायँगे । एक अप्रिय समाचार । एक बीमारको देखने जाना पडेगा । व्यवसाय बड़ेगा और दूर दूर तक फैलेगा । पत्नीसे सुख सहयोग । यात्राएँ अवश्य ही होंगी । स्वास्थ्य सन्तोष जनक । २-३-१५-१९-२० २९-३० ता० नेष्ट ।

धनुः

नवम्बर—कई नेष्ट फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास अच्छा है और जीवनमें प्रगतिकी सूचना देता है । बौद्धिक उलझनें बढ़ेंगी; एक अप्रिय घटना होगी परन्तु एक पुरानी समस्याका समाधान हो जाने और कामनापूर्तिसे सन्तुष्ट भी होंगे स्थायी साधन तथा एकाध अन्य रास्तेसे विपुल धन लाभ; नवीन लाभ स्रोतकी स्थापना । धन हानिसे बच न सकेंगे । कपटी लोगों और तत्काल धनी बनाने वाली योजनाओंसे दूर रहें । व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा । किसी नये कारोबारमें पूंजी लगावेंगे या उसका निश्चय करेंगे, समाजमें प्रतिष्ठा । निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-विवाद । किसी मित्र या कुटुम्बीकी बीमारी । घर-परिवारके और वैवाहिक सुखोंमें कमी । भोजन प्राप्तिमें असुविधा, कुछेक प्रियजनोंसे बिछोह । स्वास्थ्य सामान्य । यात्रा सम्भाव्य । १०-११-१४-१५-२१-२२-२८-२९ ता० नेष्ट हैं ।

दिसम्बर—यह मास अच्छा है। ३ ता० से जैसे जैसे समय बढ़ेगा शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी। अधिकांश समस्याएँ सुलझ जायँगी। प्रयासोंमें सफलता; विजय; कामनाओंकी पूर्ति; स्थायी साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; नवीन वस्त्र वैभव-सम्पति; प्रियजन मिलन; हर्षदायक समाचार और पत्र; भ्रमण और मनोरंजनके अवसर। व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा। नये कारोबारमें पूंजी लगावेंगे। समाजमें प्रताप प्रभावकी वृद्धि। घर-परिवार के अल्प सुख, पत्नीसे सेवा और कृपा दृष्टिकी प्राप्ति। एक दुष्टा स्त्रीके प्रति आकर्षण। व्यसनोंमें वृद्धि। बौद्धिक उलझनें चलती रहेंगी; संकल्प विकल्पमें दिन बीतेंगे। किसी रक्त सम्बन्धीको कष्ट। स्वास्थ्य सन्तोष जनक। यात्रा होगी। १-२-१८-१९-२८ २९ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास पर्याप्त अच्छा है। आपकी व्यक्तिगत स्थिति सुदृढ़ रहेगी; सुखोपभोगके अवसर मिलेंगे। कठिन कामोंमें सफलता पानेके लिए प्रथमार्ध अच्छा है। १५ ता० से एक पुरानी चिन्ता तो दब जायगी पर एक नयी समस्या उठ खड़ी होगी। स्थायी साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; लाभ स्रोत का विकास कोषकी वृद्धि; नवीन वस्त्र वैभव-सम्पत्ति। मित्रों परिजनोंका उत्तम समागम; खान पान-भ्रमण वार्तालापके अवसर; हर्षदायक समाचार और पत्र। कामनाएँ पूर्ण होंगी। व्यवसायमें कुछेक आकस्मिक उलझनें उत्पन्न हो जायेंगी। सम्भव है कि दूकान या गद्दीमें परिवर्तन करनेको विवश हो जायँ। बन्धु-वर्गसे उत्तरार्धमें कलह। वैवाहिक सुख किसी न किसी प्रकार मिल जायँगे। उदर विकार। १५-२५ ता० नेष्ट।

मकर

नवम्बर—कुछेक नेष्ट फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास अच्छा है और जीवनमें प्रगतिकी सूचना देता है। घर-परिवारकी समस्याओंमें उलझे रहेंगे और दृष्टि व्यवसाय पर लगी रहेगी। व्यापारमें कुछेक क्रान्तिकारी परिवर्तन करके उसके स्वरूप को बदल देंगे; कोई नया कारोबार करनेका भी विचार करेंगे। प्रयासोंमें निश्चित सफलता मिलेगी। कामनाएँ पूर्ण होंगी। उत्तरार्धमें चार श्रेष्ठ सहयोगी मिल जायँगे। स्थायी साधन तथा एकाध अन्य रास्तेसे विपुल धन लाभ; बिना श्रमके धनागम; नवीन लाभ स्रोतकी स्थापना; वस्त्र वैभव सम्पत्ति; प्रियजन मिलन; हर्षदायक समाचार और पत्र। वैवाहिक सुख बीच बीचमें मिल जायँगे। घर कुटुम्ब सम्बन्धी संकट; किसी निकट सम्बन्धीकी गम्भीर बीमारी या मृत्यु। भोजन प्राप्त होनेमें असुविधा। यात्रा होगी। ३-४-१२-१३-२१-२२ ता० नेष्ट हैं।

दिसम्बर—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास संकटपूर्ण है। अत्यधिक सावधानीसे चलनेमें ही कल्याण है। विपुल धन लाभ होगा; कामनाएँ पूर्ण हो जायँगी किन्तु यह ध्यान रहे कि पहली ता० से ही धन लाभके योग धीरे धीरे घटने लगेंगे और २३ ता० से वे अति विशेष व्यय और हानिमें बदल जायँगे। मित्र और सहयोगी साथ छोड़ कर गुप्त शत्रुता करने लगेंगे। अपनेको नितांत एकाकी पायेंगे। आपकी व्यथा सुनने वाला कोई न होगा। टैक्स विभागवाले छापा मार कर आपको अनाश्रित कर सकते हैं। व्यापार टूटनेका भय है। यह भी सम्भव है कि पुराना कारोबार रोक कर नये काममें पूंजी झोंक दें, समाजमें अप्रतिष्ठा, अपवाद और कलंक। घर-परिवारकी समस्याएँ, भोजन प्राप्तिमें असुविधा। यात्रा होगी परदेश चले जानेको जी चाहेगा। शोक समाचार। स्वास्थ्य खराब। १४-१५-१८-१९ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास सामान्य अच्छा है। किसी महत्वपूर्ण शुभ फलकी प्राप्ति तो न होगी पर ऐसा अनुभव होगा कि अप्रिय परिस्थितियोंका दवाव घटा है और अकारण चैन मिल रहा है। धन लाभ तो अल्प मात्रामें होगा जिससे अति विशेष व्यय और हानि का सामना न कर सकेंगे। ऋण या सचित धन सम्पत्तिका सहारा लेना पड़ेगा. मित्रोंसे सहायताकी आशा नहीं है। उत्तरार्धमें व्यवसायमें थोड़ा सुधार होगा। सम्भव है कि किसी कारोबारमें पूंजी लगाते रहें। घर परिवारके सुखोंमें वाधाएँ। बीच बीचमें वैवाहिक सुख मिल जायेंगे। एक बड़ा आदमी पर्याप्त सहयोग देगा। समाजमें अप्रतिष्ठा। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह विवाद। भोजन प्राप्तिमें असुविधा, स्वास्थ्यमें सुधार, यात्रा होगी। १-६-७-१०-११-१९ २०-२४२५ ता० नेष्ट

कुम्भ

नवम्बर—संघर्ष संकट पूर्ण होते हुए भी यह मास जीवनमें प्रगतिकी सूचना देता है। अति विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे; इस सम्बन्धमें ६ से ९ और १४-१५ ता० चिन्तनीय हैं। प्रथमार्ध में कोई आकस्मिक विपत्ति आ सकती है। टैक्स या पुलिस विभाग वाले छापा मार सकते हैं। यह भी सम्भव है कि किसी नये कारोबारमें पूंजी लगा दें; लगाना भी चाहिए। १० ता० से प्रयासोंमें सफलता मिलने लगेगी; १६ ता० से वातावरण सुधरने लगेगा। भाग्योदयका विश्वास उत्पन्न होगा। धर्म पर श्रद्धा बढ़ेगी। १६ ता० से व्यापार बढ़ने लगेगा धन लाभ बहुत कम होगा पर भावी लाभकी आशाकी किरणें चमकने लगेंगी। उत्सव या मंगल कार्य। यात्रा अवश्य होगी। २६-२७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर--यह मास आपके लिए बहुत अच्छा है और श्रेष्ठ उपलब्धियोंकी सूचना देता है। संकल्प-विकल्प और द्विविधाको छोड़ कर स्थायी भविष्यका निर्माण करना चाहिए। प्रयासोंमें सफलता विजय, कामनाओंकी पूर्त्ति; भाग्योदय; स्थायी साधन तथा दो-तीन अन्य रास्तोंसे अतुल-विपुल धन लाभ; नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पत्ति; बड़े बड़े आदमियोंका सहयोग; समाजमें प्रताप-प्रभावकी वृद्धि; प्रियजन मिलन; हर्षदायक समाचार और पत्र; धर्म पर आस्था, उत्सव या मंगल कार्य; पत्नीका भरपूर सहयोग; घर परिवारके सुख; उत्तम स्वास्थ्य आदि सुफल प्राप्त होंगे। व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा। शत्रु और विरोधी हतप्रभ हो जायँगे। यात्रा अवश्य होगी। ३-४-३० ३१ ता० नेष्ट।

जनवरी--यह मास आपके लिए सामान्य अच्छा है। एक अदृव्य स्वाधीनताका अनुभव होगा। धर्म पर श्रद्धा बढ़ेगी; किसी महात्मा या महापुरुषकी कृपा प्राप्त होगी। स्थायी साधन तथा एक-दो अन्य रास्तोंसे पर्याप्त धन लाभ। १५ ता० से व्यय बढ़ेगा और हानिके योग आरम्भ होंगे: एक बड़े औरे प्रभावशाली व्यक्तिके जालमें फँस सकते हैं। किसी नये कारोबारमें पूंजी लगानेका निश्चय करेंगे। कपटी मित्रों और शीघ्र धनी वनाने वाले उपायोंसे दूर रहना चाहिए। विवेक पूर्वक नया काम आरम्भ करनेसे सफलता मिलेगी। समाजमें प्रतिष्ठा। पारिवारिक और वैवाहिक सुखोंमें वाधाएँ। भोजन प्राप्तिमें असुविधा। सन्तानको कष्ट। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-विवाद। स्वास्थ्य सन्तोष जनक। यात्रा। १-१०-११-१९-२०-२७ २८ ता० नेष्ट

मीन

नवम्बर संघर्षों और अप्रिय परिवर्तनोंसे युक्त होने पर भी यह मास अच्छा है। कोई बहुत बड़ी हानि या बहुत बड़ा लाभ होनेके प्रबल योग हैं। हानि या लाभ आपकी व्यक्तिगत ग्रहस्थिति पर निर्भर

है, पर अधिकांशमें लाभ ही होगा। स्थायी साधन तथा तीन अन्य रास्तोंसे विपुल धन लाभ; किसी मोटी सम्पदाकी प्राप्ति प्राचीन धन या बकाया रकम की प्राप्ति; उत्तराधिकारादिसे लाभ सम्भाव्य। धन हानिसे बहुत बचें, इस सम्बन्धमें २१-२२ ता० चिन्तनीय हैं। व्यवसायमें उतार-चढ़ाव। चल रहा कारोबार समाप्त करके या रोक करके किसी नये काममें पूंजी लगानेकी योजना बनावेंगे। वैवाहिक सुखोंमें नये अवरोध। घरमें उत्सव जैसा कार्यक्रम। भोजन प्राप्तिमें असुविधा। यात्रा अवश्य होगी। १०-११-२६-२७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है। निश्चय ही महत्वाकाक्षाएँ बहुत बढ़ जायँगी; बाहुबल और आत्म-विश्वासका उदय होगा; सफलता प्रत्यक्ष दिखायी देगी और मिलेगी भी; किसी नये बड़े व्यवसायमें पूंजी लगा देंगे। जल्दबाजी न करके विवेक पूर्वक नया कारोवार आरम्भ करें और सुन्दर भविष्यमें आने वाले आर्थिक-व्यावसायिक संकटोंके लिए एक बड़ी पूंजी बचाये रहें। यह समरण रखें कि कुछ मास पश्चात् वृ० और शनि अर्थाभाव उत्पन्न करके आपके नये व्यवसायको तोड़ देनेका पूरा प्रयत्न करेंगे, व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा। समाजमें मान-प्रतिष्ठा धन लाभ हो पाना कठिन है। स्थायी साधन तथा एकाध अन्य रास्तेसे थोड़ा धन चाहे मिल जाय। मित्रों पर विश्वास करना संकटपूर्ण है। टैक्स या पुलिस विभाग वाले छापा मार सकते हैं। भोजन प्राप्तिमें असुविधा। यात्राएँ होंगी। ५-६-१४-१५-१८-१६ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास अच्छा है और व्यक्तिगत रूपसे कुछ घिराव पूर्ण स्थिति होते हुए भी जीवन में प्रगतिकी सूचना देता है। स्थायी साधन तथा एक-दो अन्य रास्तोंसे पर्याप्त धन लाभ; नवीन स्रोतकी स्थापना; प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति; नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पत्ति। कामनाएँ पूर्ण होंगी। विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे; इस सम्बन्धमें ११-१२-१४-१५ ता० चिन्तनीय हैं। मित्रोंसे हानि और संकट। व्यापार बढ़ेगा और चमकेगा। किसी नये कारोबारमें पूंजी लगानेका विचार करेंगे जिसका बच पाना कठिन हो जायगा। समाजमें सम्मान और प्रतिष्ठा। वैवाहिक सुख चाहे मिल जायँ पर घर परिवार और खान पानके सुखोंमें बाधाएं हैं एक प्रियजनसे विछोह। शोक। यात्रा अवश्य होगी। स्वास्थ्य सन्तोषजनक। २-३ १६-२०-२६-३० ता० नेष्ट।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

शनिकी गतिविधिका प्रजातन्त्रपर प्रभाव

भारतके भविष्यपर शास्त्रीय विश्लेषण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

गत वर्ष इन्हीं दिनों 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' के 'रजतजयन्ती अङ्क' में भारतीय गणराज्यके २०वें वर्षका भविष्य और मेष राशिके शनिका दुष्प्रभाव विस्तृत रूपमें लिखा था। पृष्ठ ११ पर दैवज्ञकी दृष्टिमें लिखा है—"वर्षके पूर्वार्धमें ही विशेषकर (१ मार्चसे १० सितम्बर तक) भारतमें प्रकृति-प्रकोप, उग्रप्रदर्शन, हड़ताल, दुर्भिक्ष रोग, कहीं अवर्षण तो कहीं बाढ़से प्रजा त्रस्त होगी । सीमाविवाद भाषाविवाद और प्रान्तीय भेदभावका विष वैमनस्यके रूपमें बढ़ेगा ।...... प्रधान मंत्री एवं मुख्यमंत्रियोंको अनेक समस्याओंमें उलझकर शिरोवेदना एवं नित्य नयी चिन्ताओंमें व्यस्त रक्खेगा ।" इसी पृष्ठमें गत १५० वर्षोंमें ५ बार मेषका शनि जब-जब आया उस समयकी युद्धादि औत्पातिक ऐतिहासिक घटनाओंका उल्लेख करते हुए लिखा है कि "अब सन् १९६९ से ७१ तक मेषका शनि संसारमें क्या कुछ करेगा यह भविष्यके गर्भमें है ।"

इस वर्ष मेषके शनिने आते ही अपना दुष्प्रभाव दिखाना प्रारम्भ कर दिया है । गत मई मासमें उच्चराशिस्थ सूर्यके साथ जब नीचके शनिका प्रतियोग हुआ तब भारतके राष्ट्रपतिका आकस्मिक निधन हुआ और भारतकी समस्याएँ उग्ररूपमें उभरने लगीं । आंध्रमें तेलंगाना, बंगाल असम उड़ीसा और अभी गुजरातमें जो अवाञ्छनीय भयङ्कर काण्ड हुए उससे पाठक परिचित ही हैं । अभी गत मास उर्सके मेले पर शासनकी सतर्कतासे अजमेरमें भयकर काण्ड होनेसे बच गया । २१ अगस्तको शनिके वक्री होने पर राष्ट्रपतिके चुनाव प्रश्नको लेकर कांग्रेस दलमें जो गहरी दरार पड़ी है—ऐसी अप्रिय घटना कांग्रेसके जीवनमें पहले कभी नहीं हुई । शनिका कुप्रभाव पूर्वोत्तरीय भारतमें अधिक होना लिखा था । पंचांगके रजतजयन्ती अङ्कमें गतवर्ष संसारके प्रमुख राष्ट्रों और भारतके प्रान्तोंके नाम हमने जगल्लग्नकुण्डलीमें दिये थे उसमें बंगाल असम गुजरात आंध्र मद्रास राजस्थान पंजाब रियाणा पर शनिकी दृष्टि है । अतः इन्हीं प्रान्तोंमें हमने अधिक अशान्तिकी सूचना एक वर्ष पहले दी थी । "देश, जनता, शासन सावधान रहे" शीर्षकके नीचे पंचांगमें पृष्ठ १२ पर लिखी निम्न पंक्तियाँ अक्षरशः सत्य सिद्ध होकर ज्योतिर्विज्ञान की महत्ता प्रकट कर रही है—

"जनता यह अनुभव करने लगेगी कि शासन तंत्र नामकी को वस्तु है भी या नहीं ?...... सत्तासंघर्ष भी होगा । आन्तरिक फूट जनतामें ही नहीं, केन्द्र और प्रान्तोंमें भी होगी और सत्ता अपने स्वरूपको अस्तित्वहीन सिद्ध करती रहेगी ।............कोई पक्ष प्रभावशाली नहीं होगा । अनेक दलोंकी अन्त्येष्टि हो जायेगी । ...... १९६९ के पिछले भागमें जो ग्रहस्थिति बनती है उसमें अत्यन्त क्रान्तिकारी परिवर्तन चक्र चलता हुआ दिखाई देगा । ......जिस समय नीचके शनिके साथ नीचके सूर्य और उनके मगलका समागम होगा वह समय हमारे देशके साथ विश्वके अनेकों महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों और विशेषतः श्रम-प्रधानराष्ट्रों और एशियामें अकल्पनीय तूफा। का क्रान्तिकारी काल होगा ......भारतीय

जनताने पराधीनता देखी है, स्वाधीनताका स्वप्न भी लिया है, परन्तु १९६९ के अर्धभाग के अनन्तर २-३ वर्ष आगेके समयमें शायद इस देशको कोई तीसरे स्वरूपको देखनेका भी प्रसंग आजाये तो असम्भव नहीं होगा।

प्रस्तुत प्रधानोंका भावी अन्धेरेमें पड़ जायेगा, आगेका भावी भीषण है, अन्धकारमय है। लगातार आगे सर्वत्र विद्रोह बढ़ता जाएगा और आश्चर्य नहीं कि सत्ताका आसन डिग जाए। १९६९ से १९७१ तक आपत्तियोंसे घिरे रहना पड़ेगा।"

सावधानीका समय

अभी दि. १६ अक्टूबरसे १५ नवम्बर तक सूर्य नीच राशिमें नीच राशिस्थ शनिसे दृष्ट रहेंगे और २६ अक्टूबरसे ६ दिसम्बर तक मकरमें मंगल शनिके घरमें और शनि मंगलके घरमें रहेगा। फिर आगे ३ दिसम्बरसे १८ फरवरी तक शुक्र राक्षसगणमें अस्त रहेगा, अतः इस अवधिमें बंगाल असम केरल आंध्र पंजाब हरियाणामें विशेष रूपमें और सामान्यतः समस्त भारतमें अराजकता और बन्द हड़ताल घेराव आदि उत्पात तथा प्रकृति-प्रकोपसे हानि होगी। चीन पाकिस्तानके गुप्तचर यत्रतत्र तोड़ फोड़ और दंगा फिसाद करानेमें सक्रिय रहेंगे। भयंकर षड्यन्त्र होंगे। दुर्घटनाएँ भी अधिक होंगी। बंगाल केरल पंजाब हरियाणा असम उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेशके मन्त्रिमण्डलोंमें अप्रिय उलट फेर होगा। उक्त अवधिमें केन्द्रीय मंत्रिमण्डल भी लड़खड़ा जायेगा। केन्द्र और प्रान्तोंके आन्तरिक कलहका लाभ चीन पाकिस्तान उठायेंगे। यदि भारत शासनने समय रहते हमारी इस चेतावनी पर ध्यान देकर पर्याप्त सैनिक तैयारीके साथ संगठित होकर अराजक प्रवृत्तियोंका अन्त करनेकी योजना न बनाई तो ब्रह्मपुत्र नदका ऊपरी भाग चीन और निचला भाग पाकिस्तान हड़प जायेगा। इसे केवल दैवज्ञकी कल्पना ही न समझें।

शनिके दुष्प्रभावकी जो चेतावनी हमने गतवर्षके पंचांगमें (एक वर्ष पूर्व) दी थी वह प्रत्यक्ष घटित होती जा रही है। अभी हमारे परम स्नेही सहयोगी बंगलौरके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्री बी० व्ही० रमनने अक्टूबर मास ६९के 'अंग्रेजी 'एस्ट्रालाजीकल मेग्जीन' में "शनिकी गतिविधि और भारत" शीर्षक सम्पादकीय लिखा है—उससे भी एक वर्ष पूर्व लिखी गई हमारी भविष्यवाणीका समर्थन होता है। श्री रमनने प्रधानमन्त्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) की जन्मकुण्डली पर भी शनिके प्रभावकी चर्चा की है। लेख उपयोगी है अतः उसका अनुवाद हम यह प्रकाशित कर रहे हैं—

"ज्योतिषमें शनि ग्रहको अशुभ माना गया है। भारतके चतुर्थ राष्ट्रपति-चुनावके दिवस पर शनि भारतीय गणतन्त्रकी कुण्डलीकी जन्म-राशि पर था और संहारक नक्षत्र भरणीमें था। वह मेष राशि में था जो अग्नि राशि है और जिसका स्वामी मंगल है। शनिकी गतिकी प्रतिक्रिया शीघ्र होती है।

शनिकी गति राष्ट्रीय जीवनमें भयानक परिवर्तन ला सकती है। वह परिवर्तन शनैः शनैः लावेगी परन्तु लावेगी निश्चित रूपसे। शनि मेषमें चल रहा है और इन्दिरा गाँधीकी कुण्डलीमें मध्य राशिमें है। इसने उनके पार्टीके सम्बन्धोंमें गंभीर परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दी हैं और उन्हें वर्तमान परिस्थितिमें डाल दी है।

हमारा उद्देश्य यहाँ यह नहीं है कि श्रीमती कांग्रेसकी कुण्डलीका विवेचन करें या इन्दिरा गाँधीकी कुण्डलीका विस्तारसे विवेचन करें। किन्तु हम इस बातपर जोर देना चाहते हैं कि शनिकी मेष राशिमें गति भारतके राजनीतिक इतिहासमें महत्वपूर्ण युगारम्भ करने वाली है।

इन्दिरा गाँधीकी कुण्डलीमें शनिकी स्थितिको देखिए

वह लग्नमें है और लग्नेशको देखता है । अश्लेषा नक्षत्र संन्निहित है जिसका स्वामी बुध है जोकि मंगलकी अशुभ राशिमें है और सूर्यके साथ है । इन्हें वर्तमान समयमें शुक्रकी प्रत्यन्तर दशा, राहुकी अन्तर्दशा व वृहस्पतिकी महादशा चल रही है । महादशाधिप प्रबल होकर योगकारक मंगलके साथ है और राजतीतिक ग्रह सूर्य महादशाधिपसे केन्द्रमें स्थित है । राष्ट्रपतिके चुनावमें इनकी अभी हुई परिस्थितिके कारण राहु और शुक्र हैं। राहु और शुक्र धनुःराशिमें है जोकि संघर्ष बताते हैं और शनि शुक्रके नक्षत्रमें चल रहा है । साधारण रूपसे धनुराशिमें शुक्रकी स्थिति इसकी प्रकृतिका परिष्कार करती है और जातकको उच्च-हृदयका बनाती है तथा उसके विचार उदार होते हैं परन्तु इसकी स्थिति राहुके साथ धनुराशिमें है जो शुक्रके अच्छे गुणोंको दूर करता है और जातकको बेपरवाह और अविवेकी बनाता है । अनियंत्रित भावोंसे मस्तिष्क शीघ्र ही प्रभावित हो जाता है । यह पृथक्ताका भाव उत्पन्न करता है और मित्रोंके साथ कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है । परन्तु अन्तमें यह बताता है— "अविश्वसनीय मित्रों द्वारा हानि व बड़े जोखमी साहसके कार्य ।" राहुकी स्थिति ६वें भवनमें राजनीतिक मामलोंमें स्पष्ट विचार नहीं बताती ।

कांग्रेसके प्रधान ने अभी चुनावसे पूर्व तीक्ष्ण शब्दोंमें इंदिरा गांधीको भेजे गए पत्रमें कहा है —"इतिहास में ऐसी घटनाएं कहीं उल्लेख नहीं है कि जहाँ एक प्रधान-मन्त्री पार्टीके सदस्यको प्रस्तावित कर केवल उसके विरुद्ध ही कार्य न करे परन्तु विरोधी उम्मीदवारका समर्थन करे"। उसकी दलील 'अन्तरात्माकी है। चतुर्थ भवन पर वृहस्पतिके प्रभावकी कमी है जो केवल लचीली अन्तरात्मा दे सकता है जो कि परिस्थितिके अनुसार धारण करने योग्य बनाती है। मंगलकी स्थितिको फिर देखिए । पञ्चमका अधिपति द्वितीय-भवनमें है। हमारा शास्त्रीय साहित्य भी बताता है कि जब मंगल द्वितीय-भवनमें हो तो जातक दुर्जनकी सहायता खोजता है ।

शनिकी स्थिति लग्नमें अच्छी नहीं होती । हमारे प्राचीन शास्त्रसे स्पष्ट है कि जब शनि लग्न में होता है (जोकि स्वराशि या उच्चका न हो) तो जातक दुःखी और पीड़ित होता है । १९७०में शनिकी महा दशा आ रही है और गोचरका शनि वक्री १० वें घरमें होगा । (२९-६-१९७०- से १४-११--१९७०) तक रहेगा । महात्मा गांधीके इस कथन को याद रखना चाहिए—

"वैयक्तिकताको समाप्त कर राज्यकी शक्तिमें वृद्धि होना मानवताको ज्यादा हानि करता है । वैयक्तिकता सभी प्रकारकी प्रगतिकी जड़ है ।"

शनिकी गति प्रधानमंत्रीकी स्थितिके लिए शुभ नहीं है । अतः उन्हें राजनीतिक व व्यक्तिगत सुरक्षा में पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए ।

कांग्रेसी खेद प्रकट करते हैं कि ८४ वर्षके लम्बे इतिहासमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसको ऐसा धक्का कभी नहीं लगा जोकि इस आकस्मिक स्थितिसे हुआ । परन्तु कांग्रेस पार्टीमें संकटके तत्व स्पष्ट हैं कि कांग्रेस मारक दशाके अन्तिम भाग पर है । कांग्रेसमें फूट चलती रहेगी । १९७० के मध्यमें गंभीर धक्का लगेगा और यदि भूतकालमें हुई गलतियोंको नहीं सुधारा तो इसका पूर्ण रूपसे पतन हो जावेगा ।

आगामी कुछ वर्षोंमें शनिकी गतिकी स्थिति देखिए । वह भरणी नक्षत्रमें २२-८-६९को वक्री हुआ है, अश्विनीमें ३१-१०-१९६९ को प्रवेश करता है, ५-१-१९-७० को मार्गी होता है और भरणीमें ७-३-१९७० को, कृतिकामें २७-६-१९७०, रोहिणीमें ६-७-१९७१, मृगशिरमें १४-७-१९७२ और आर्द्रामें

२०-७-१९७३ को पुनः जुलाई १९७४ में आर्द्राको छोड़ता है। जब तक शनि आर्द्राको नहीं छोड़ता आपत्तियां बढ़ती रहेंगी। कृतिकामें शनिका वक्री होना यह बताता है कि कांग्रेस पार्लियामेंटरी पार्टीमें शक्ति-सन्तुलनमें परिवर्तन होगा। शनिकी मृगशिरमें गति यह बताती है कि भारतको भयंकर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जिससे उसकी सुरक्षा और एकता पर प्रभाव पड़ेगा।

शनिका नीच राशिमें होना सर्वदा प्रजातन्त्रके लिए खतरनाक होता है और इसकी मेष राशिमें गति अशुभ है। हमारे नेताओंको जागृत रहना होगा कि एकतामें कमी न होने पावे और प्रजातन्त्रको खतरा पैदा न हो। राष्ट्रकी सुरक्षाको पूर्ण रूपसे सुगठित रखना चाहिए। इतिहास उन नेताओंको क्षमा प्रदान नहीं करेगा (प्रधान मंत्री सहित) अगर वे राजनीतिक शक्तिकी लालसामें राष्ट्रको विप्लव व अस्थिरताकी आपत्तिमें डाल देते हैं।

ज्योतिषके विद्यार्थियोंको भारतके प्रधान-मंत्रीकी कुण्डलीमें जो योग हैं उनसे परिचित रहना चाहिए। 'मंगल सूर्यकी राशिमें है, सूर्य मंगलकी राशिमें है और सूर्य व मंगल परस्पर केन्द्र भावोंमें हैं। इसमें 'जातक पारिजात'में दिए हुए योगमें थोड़ा रूपान्तर है और इस दुर्भाग्यकी लपेटसे तभी प्रधानमन्त्री बच सकती है यदि प्रधानमन्त्री अपने पूर्व अधिकारियोंके पद-चिन्ह पर चलें। इस शक्ति-प्राप्तिके संघर्षमें जो यह पूर्ण रूपसे वामपक्षी समूह पर निर्भर है, इससे राष्ट्रमें अव्यवस्था ही नहीं होगी अपितु स्वयंके अस्तित्वको खतरा होगा।

ग्रहयोगोंके अनुसार राष्ट्रको सभी बुरे परिणाम भोगने पड़ेंगे। यह राष्ट्रके बुद्धिमान् नेताओं पर ही निर्भर है कि ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिको रोकनेका प्रयत्न करें।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अक्टूबर १९६९ ई०

ता० २५ शनिवार—श्री बाल्मीकि जयन्ती जैन आयम्बिल ओली समाप्त।

२७ सोमवार—शबरात महोत्सव यवन सम्प्रदायका।

२८ मंगलवार—श्रीगणेश४ करवाचौथ व्रत चन्द्रोदय १९।३३ स्टे. टा.

नवम्बर १९६९ ई०

ता० २ रविवार—अहोई अष्टमी सायंकाल काली पू.

६ गुरुवार—रमा एकादशीव्रत सायंकाल गोवत्स१२

७ शुक्रवार—प्रदोषव्रत धनतेरस श्रीधन्वन्तरि ज०

८ शनिवार—नरकहरा रूप १४ श्री हनुमज्जयन्ती।

९ रविवार—दीपमाला श्रीमहालक्ष्मी पूजन।

१० सोमवार—अन्नकूट गोवर्धन पूजन बलिपूजन।

११ मंगलवार—चन्द्रदर्शन यम २ भैय्यादूज विश्वकर्मा जयन्ती।

१४ शुक्रवार— ज्ञानपंचमी बालदिवस नेहरूजन्मदिन

१५ शनिवार—वृश्चिकमें सूर्यसंक्राति मु० ३० अर्धरात्रोत्तर

१७ सोमवार—गोपाष्टमी लाजपतराय निधनदिवस

१९ बुधवार—प्रबोधनी एकादशीव्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका भीष्मपंचक प्रारम्भ चतुर्मासव्रत समाप्ति।

२० गुरुवार—प्रबोधिनी११व्रत वैष्णवसम्प्रदायका

२१ शुक्रवार—प्रदोषव्रत

२३ रविार—कार्तिकी पूर्णिमा मेला पुष्करराज रेणुका तीर्थ, गढ़ गंगा, भीष्म पंचक समाप्ति, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य और गुरु नानक [जयन्ती सत्यव्रत त्रिपुरोत्सव।

२७ गुरुवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय रात्रि स्टे. टा. ८।२

दिसम्बर १९६९ ई०

ता० २ मंगलवार—श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती।

५ शुक्रवार—उत्पन्ना एकादशी व्रत।

६ शनिवार—मल्ल द्वादशी।

७ रविवार—प्रदोष व्रत।

९ मंगलवार—अमावस्या

११ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०

१२ शुक्रवार—ईदुलफितर।

१३ शनिवार—श्रीगुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस

१४ रविवार—स्कन्दषष्ठी, चम्पा ६

१५ सोमवार—धनुःमें सूर्य संक्रान्ति पुण्यकाल

१९ शुक्रवार—मोक्षदा एकादशीव्रत गीता जयन्ती

२१ रविवार—प्रदोष व्रत।

२२ सोमवार—श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती।

२३ मंगलवार—सत्यव्रत पूर्णिमा श्रीदत्त जयन्ती।

२७ शनिवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय ८।४३

जनवरी १९७० ई०

ता० ३ शनिवार—श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती।

४ रविवार—सफला एकादशी व्रत।

५ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।

७ बुधवार—अमावस्या।

९ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन।

१२ सोमवार—लोहड़ी महोत्सव पंजाब प्रान्तमें

१३ मंगलवार—मकरमें सूर्य मु०३० गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती।

१४ बुधवार—मकरसंक्रान्ति पुण्यकाल दिनभर, गंगासागर यात्रा, दुर्गाष्टमी।

१८ रविवार—पुत्रदा एकादशी व्रत।

१९ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।

२६ गुरुवार—पौषी पूर्णिमा सत्यव्रत शाकम्भरी ज०

हाजिर और वायदा बाज़ार भविष्य

दि. २६-१०-६९ से २२-१-७० तक

[ले०—दैवज्ञभूषण पं० हंसराज शर्मा, ज्योतिश्व द्रमणि सिविल लाईन, लुधियाना - १]

हाजिर मार्केट पर प्रभाव

इस अवधिमें जब तक शनि मेष राशिमें रहेगा और अन्य कोई भी ग्रह नीच राशिमें न होगा बहुत सी वस्तुओंमें मन्देका प्रभाव अधिक पड़ेगा, जिससे बहुत सी वस्तुओंके स्टाक करनेसे लाभकी अपेक्षा हानिकी संभावना अधिक रहेगी, जैसे गेहूँ, मक्की, चने, ज्वार आदि। परन्तु ऊन तेलके बीज, तेल आदि का मंदीकी प्रति क्रियामें स्टाक करनेसे आगे अच्छे लाभकी आशा बनेगी। अभी अक्टूबरके अन्तमें बुध ले कुछ मन्दी करेगा, परन्तु फिर ८ दिसम्बर तक यह उदय होगा बरावर तेजी बनाये रखेगा। इसका अधिक प्रभाव तेल मूंगफली अलसी, सरसों, बिनौला आदि पर पड़ेगा, गुड़ चीनी तथा खाण्डसारीके स्टाकसे अभी लाभकी आशा व्यर्थ दिखाई देती है। इस अवधिमें वनस्पतिके भाव भी मन्देमें रहेंगे और जो भाव जनवरीमें बने वह फिर शीघ्र न आवें तो आश्चर्य नहीं।

इस लिए गेहुं चना जौ ज्वार मक्की आदिके स्टाक जिनके पास पड़े हों उन्हें तुरन्त निकालकर आगे हानिसे बचना ही अच्छा है, जहां इन वस्तुके स्टाकसे हानिकी संभावना है वहां ऐसा समय भी मिलेगा कि बहुत सी वस्तुओंके स्टाक करनेसे थोड़े समयमें ही अच्छा लाभ होगा, जैसे कि सरसों, तिल, जिस्त, तांबा, पीतल, मूंग मोठ,उर्द, खसखास सन,सूत, सिल्क, स्टैपल, नीलम तथा हल्दी आदिके स्टाकसे अकस्मात् ही उत्तम लाभ हो सकता है।

जिन वस्तुओंमें नवम्बर मासमें मन्दा शुरु होगा उनमें जनवरी तक बराबर मन्दा रहेगा, तेजीकी प्रतिक्रिया नाम मात्र होंगी। यह स्थिति बराबर जनवरीके अन्त तक बनी रहेगी।

अनाजके संग्रहमें शनिके नीच राशिमें रहते और वक्री होनेसे राज आज्ञा द्वारा कई प्रकारकी समस्याएँ खड़ी होंगी और संभव है कि संग्रह से जो भी लाभकी आशा हो वह व्यापारीकी अपेक्षा राज्यको ही प्राप्त हो, इस लिये गेहूं आदिका संग्रह रखते समय इस बातका अवश्य ध्यान रखना होगा। चावलका संग्रह कुछ प्रतिशत लाभप्रद रह सकता है। इसमें शनि तथा बृहस्पतिकी स्थिति स्पष्ट है।

लोहा, मशीनरी, मोटर तथा साईकल आदि के पुर्जोंमें नवम्बरसे ही तेजी शुरु होगी और भाव धीरे-धीरे बढ़ते चले जावेंगे। इसके पश्चात् दिसम्बर माससे लकड़ी लोहा तथा इमारती सामान (Building Material) में भी तेजी चलेगी।

वायदा बाजार पर प्रभाव

यह अवधि वायदा बाज़ार वालोंके लिये अधिक महत्व रखती है, इसमें कुछ वस्तुओंका वायदाका सौदा फिरसे चालू होनेकी संभावना हैं। जैसे कपास और गुड़के सौदे, कालीमिर्च और जूटके सौदे भी चलें तो आश्चर्य नहीं, उत्तरी भारतमें कपास अलसी, तेल मूंगफली बिनौला आदिके सौदे अधिक होंगे और अन्य वस्तुके नाम पर कम। शेयर बाजार पर किसी प्रकारका प्रतिबन्ध लगे तो संभव है, शनिके नीच राशिमें रहते हर्षलसे षडष्टक चलनेसे धमाके अवश्य ही आते रहेंगे।

शनि वक्री होकर अश्विनीमें तेजी कारक है, मकरका मंगल भी शनिसे परिवर्तन महा योग

बनाकर तेजी कारक है, बुध स्वाति नक्षत्रमें कुछ मन्दी करके विशाखामें फिर तेजी करेगा। हर्षल हस्त नक्षत्रमें शेयर बाज़ारके लिये नेष्ट हैं, परन्तु चांदीमें तेजी कारक है :

इस प्रकार लम्बी लाइनका काम करने वालों के लिये यह अवधि काफी अच्छी रहेगी। नवम्बर तक तेजी रह कर फ़िर ८ नवम्बर तक मन्देकी प्रतिक्रिया आकर १६ नवम्बर तक भरपूर तेजी चलेगी, वास्तवमें ८ दिसम्बर तक तेजी रहेगी और ऊंचा भाव बना कर फिर मन्देकी लाईन बनेगी जो २० दिसम्बरके लगभग तक चलेगी वहांसे फिर तेजी उठेगी, परन्तु ऐसा प्रतीत होगा कि तेजीके पांव उखड़ चुके हों और बार बार मन्देके झटके भी लगेंगे। जनवरीके शुरुमें ही भाव फिर इकतरफा चलेंगे। थोड़ी सी सावधानीसे अच्छा लाभ उठाया जा सकता है।

इस अवधिमें बितौले ऊंचेमें ८९ रुपये और नीचेमें ६४ या ६७ रुपये तकके भाव मिल सकते हैं। चांदीमें नीचेमें ४८१ रुपये और ऊपरमें ५७१, रुपये तकके भाव बन सकते हैं। इसी प्रकार अलसी तथा कपास आदिके भाव जानें। यह लेख निकालनेमें पूरा परिश्रम किया गया है जो व्यापारी भाइयोंके आग्रह पर दे रहा हूं फिर भी व्यापारी स्वयं भी ध्यान रखें या पत्र द्वारा सम्पर्क बनाये रखें।

इस बार ऐसे दिन भी दे रहा हूं जिनमें भाव अधिक चलेंगे जो तेजी मन्दीकी गली तथा नजराने लगानेके लिये काफी लाभदायक सिद्ध होंगे। इनके लिये लम्बी लाईनका ध्यान अवश्य रखें। २७ और २९ अक्टूबर। ४, ७, ८, ११, १४, १७, १९, २४, (मध्याह्न पश्चात्), २८ नवम्बर। २, ४, ६, (मध्याह्न पश्चात्), ९, १६, १९, २२, २६, ३० दिसम्बर। ६,८, १३, १६ जनवरीके दिन भाव आशासे अधिक चलेंगे।

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्य फल

कार्तिकसे पौष सं० २०२६ तदनुसार ता० २६ अक्टूबर ६९ से २२ जन. ७० ई०

[लेखक :—श्री पं० ओंकारप्रसाद शर्मा ज्योतिषी हापुड़ उ०प्र०]

ज्योतिषशास्त्रके दो मार्ग सायन और निरयन हैं पर इन दोनों भेदोंके रहते हुए डायरक्शनका असर एक सार ही होता है।

उपरोक्त अवधिमें व्यापारका स्वामी बुध २६-१० ६९से १५-११-६९ तक इन्फीरियर चालमें रहेगा। इन्फीरियर चालसे जनरली तेजीकी लाइन बना करती है। खाद्य पदार्थ तेज तो धातुपदार्थमें भाव गिरा करते हैं। यह अवसर भी कभी कभी आया करता है, जब कि एकसार तेजी या मन्दी सभी मार्केटमें चले।

ता० २६-१०-६९से यह भविष्य आरम्भ होते ही कार्तिकका महीना अरम्भ होता है, ५ रविवार कार्तिकमें तेजी कारक हैं और सं०२०२६की दीपावली पूजन भी इतवार ता० ९ नवम्बरको तेजी कारक है : इसी दिन ता० २६ अक्टूबरको मकरेभौम होगा इस योगसे मन्दी रहकर खनिज पदार्थोंमें व सोनेमें जोरदार तेजी होगी। तथा तिलहन तैल खाद्यपदार्थ तेज होंगे। गुड़ खांड घी अलसी ऊन भी तेज होगी। पर वायदोंके सौदोंमें यह नोट करना कि जिन वस्तुओंमें तारीख २७ अक्टूबरको १०।।से ११ बजे बीचमें तेजी चले तो सौदा बदलकर मन्दीका ध्यान रखना क्योंकि २६ अक्टूबरको बुध गुरुका कन्जक्शन रात्रीको होगा जिसका असर २७ अक्टूबर से ता जरूर ही पड़ेगा। यहां हल्दी और बादामके भाव टूटेंगे पर अन्य वस्तुओंमें विचार तेजीका है।

ता० २६ अक्टूबरको सूर्य शनि आमने सामने १८० डिग्रीके फासलेसे ७ बजे दिनके ही होंगे जब भारी हंगामा तेल अलसी अरंडा करड़ी जूट पाट ऊन आदिमें तेजीका होगा।

ता० ३१ अक्टूबर हंगामेंका दिन है। इस दिन आपको नजराने लगाने तथा तेजी ५० लगाना तो मंदी ५ लगाना नहीं भूलना चाहिये। ता० ३१ अक्टूबरसे १ नवम्बरमें वायदे मार्केटमें १ बड़ा विस्फोट होगा और ३१ की लाइन ही ५ दिन बिना रियक्शनके चलेगी।

ता० ५ नवम्बरमें मन्दीकी चाल जिस वस्तुमें रहे ता० ६ नवम्बरसे उसीमें बिजलीके करंटके मा- ; तेजी होगी।

मिती-कार्तिक बदी १३ क्षय मंदी कारक चीनी खांड गुड़ मीठमें, पर बारदाना इस्पात और मैटीरियल में भारी तेजी होगी। यह तेजी तूफानी हाजिरीमें आयेगी पर वायदे स्थिर होंगे।

इस कार्तिक मासमें शुदि दशमीका क्षय होना साथ ही ता० १८ नवम्बरको अनुराधामें बुध प्रातः ८ घड़ी ४२ पल पर होना जनरली तमाम वस्तुओंमें अच्छी तेजीका सूचक है, लेकिन यह तेजी आखरी होगी, इसलिए तैल मूंग दाल उड़द अरंडा अलसी में तेजी आने पर मोटी तेजी में न आना, क्योंकि एक मोटी मन्दी आगामी वायदोंमें अवश्य होगी। धातु पदार्थ भी यहां मंदे होंगे और गुड़ चीनी खंडसारीके भाव भविष्यमें जोरदार टूटेंगे। क्योंकि ता० २०को बुध धनुः राशिमें सायनमें २२ नवम्बर को सायन धनुराशिमें सूर्य हो जानेके बाद ता० २४ नवम्बरसे आगे आगे मंदी चल पड़ेगी और हाई असर भाव खत्मक्रमसे सर्प चालके मानिंद बनकर यानि रियक्शन ले लेकर नीचा स्तर कायम करेंगे। पर मक्का ज्वार गुवारमें सुर्खी चलेगी और गेहुं उम्दा क्वालिटीकी स्थिर दड़ेमें तेजी आवेगी अन्य वस्तुओंमें कोई खास तेजी मन्दी नहीं आयेगी सिर्फ मार्केट पड़े रहेंगे, परन्तु लालमिर्च अन्य लाल पदार्थोंमें जोरदार तेजी आयेगी। श्रृंगार भोग-विलासकी वस्तुओंमें एक दम मंदी काफी होगी।

जोरदार तेजी मन्दी—ता० ६ से ८व९ दिसम्बर आप बिना सोचे समझे नजराने तिलहनमें लगाना और गली ५० मंदी तो पांच तेजी, तेल रुई चाँदी सोना व अलसीमें लगाना देखिये लाभ जरुर होगा। हमारा विचार पूर्व मन्दी तो बाद तेजीका हैं, लेकिन हमारे उपर लिखे अनुपातके हिसाबसे गली वालोंके लाभको लाभ जरूर व जरूर ही मिलेगा।

तूफानी चांसका ब्यौरा

ता० १६ दिसम्बरको सायनसे मीने भौम जल चर राशिमें और साथ गुरु सायनसे वृश्चिक जलचर राशिमें नवम पंचम डायरक्सन होना सोना व चांदी में भयंकर मन्दी का सूचक है अतः यह हमारा खास परामर्श है कि ता० १६से पूर्व स्टेडी या तेजीके भाव रहें तो जोरदार ता० १७से मंदी ऐसी आवेगी कि भाव बंद कुछ, और खुले और ही कुछ, इस टाईममें अच्छी मंदी ता० २४ से २७ में आयेगी और सोना यहां मंदा होगा पर चांदी २६ दिसम्बरसे ४ दिनमें जोरदार मंदी चलेगी। ता० १६दिसम्बरपर नोट है कि अगर ता० १७ को २बजे पर मंदी न चले तो पूर्व तेजी आकर बादकी तारीखोंमें मंदी आयेगी, यह नोट करना। घी घासलेट बारदाना मंदा होकर एक दम तेजीका बोलवाला अन्तमें होगा। कालीमिर्च मेवे तेज होंगे। और रुईमें भारी मंदी रुक कर एक दो दिन बाद ही उपरोक्त टाईममें तेजी आयेगी, यह हमारा दावा है कि चांस शतप्रतिशत सही होगा। इस टाईममें मेथी जीरा नमक करडी और हल्दीमें पूर्व तेजी तूफानी आवेगी। ता० ३ जनवरी १६७०को शनि मार्गी, साथ ही ता० ४ जनवरीको बुध वक्री फिर ता० ८ जनवरी को बुध अस्त।

———

श्रद्धाञ्जलि

संस्कृत-साहित्यके सुप्रसिद्ध विद्वान् सोलनके राज-गुरु स्व० महामहोपाध्याय श्री मथुराप्रसादजी दीक्षितके ज्येष्ठ सुपुत्र संस्कृतके सुकवि और समालोचक रासो समीक्षा, सरस्वती संस्कृत नाटक, गौरी-व्याकरण और श्रीकर्पूरस्तवराजकी 'रुचिरा' व्याख्या आदि अनेक ग्रन्थोंके यशस्वी लेखक सुप्रसिद्ध विद्वान् तांत्रिक-चूड़ामणि आचार्य श्रीसदाशिव दीक्षितका सोलनमें गत आश्विन कृष्णा ११ मंगलवार दि० ७ अक्टूबर १९६७ को प्रातः ब्राह्ममुहूर्तमें अपनी इष्ट देवताके समीप हृदय गति रुकनेसे सहसा ७२ वर्षकी आयुमें देहावसान हो गया। स्व० महामहोपाध्यायजी और सदाशिवजीसे हमारा ३६ वर्ष पुराना स्नेह सम्पर्क और आत्मीय सम्बन्ध था। परम-हितैषी स्नेही सहृदय विद्वान् मित्रका अभाव ज्योतिष्मती-परिवारके लिए अपूरणीय क्षति है। 'ज्योतिष्मती'से आपका जो अटूट स्नेह सम्बन्ध था वह अवर्णनीय है। दीक्षितजी परम आस्तिक कर्मठ विद्वान् थे। सोलन-नरेश महामहिम राजर्षि श्री १०५ दुर्गासिंहजीसे आपका विशेष आत्मीय स्नेह था। प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालमें दीक्षितजी ५-६ मास सोलनके राजकीय अतिथिगृहमें निवास करते थे। उनके योगक्षेम और स्वास्थ्यके देखभालकी सब व्यवस्था राजर्षिके द्वारा होती थी। दीक्षितजीका आवास-स्थान हमारे लिये तो साहित्य और शास्त्रीय चर्चाका केन्द्र था ही, प्रायः प्रतिदिन महा-महिम राजर्षि भी सायंकाल राजप्रासादमें जाते समय दीक्षितजीसे मिलकर उनके कुशल समाचार पूछते थे। स्वास्थ्य उनका कई वर्षोंसे निरन्तर निर्बल होता जाता था। हृद्रोगका आक्रमण पहले दो बार भयंकर रूप में हो चुका था। एकादशीको अपने पिताजीका पार्वणश्राद्ध उन्होंने श्रद्धापूर्वक किया। सोमवार रात्रि ८॥ से ९॥ बजे तक मैं उनके पास बैठा था। अपने पिता स्व० महामहोपाध्यायजीका जीवन-चरित्र उन्होंने इसी वर्ष सोलनमें पूर्ण किया था, उसके अन्तिम श्लोक मृत्युसे ७ घंटे पहले ही मुझे सुनाये थे। उस दिन श्राद्धकर्मसे श्रान्त होने पर भी वे स्वस्थ प्रतीत होते थे, कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सूर्योदयसे पूर्व ही वे दिवंगत हो जायँगे। किन्तु माँने उनकी इच्छा पूर्ण कर दी। उनका जीवन सन्यासीके समान विरक्त था। वे सोलनको पावन शूलिनी क्षेत्र मानते थे और यहीं शरीर छोड़ना चाहते थे। भगवती श्रीदक्षिण कालिकाके वे उपासक थे। रुचिराकी प्रस्तावनाके अन्तमें उन्होंने भगवतीके श्रीचरणोंमें विनीत विनति की है— "त्वन्मन्त्रं जपतस्त्वदंघ्रिभजतः स्यान्मे शरीरव्ययः"

यह प्रार्थना माँने स्वीकार कर ली। एकादशीको प्रातःकाल राजकीय परिचारक काशीराम जब सदाकी भांति दर्वाजा खोलकर कमरेमें गर्म जलकी बाल्टी रखने गया, तो देखा कि दीक्षितजी बिस्तर पर नहीं हैं। साथ वाले भगवतीके कमरेमें माँ के सिंहासनके समीप प्रणाम-मुद्रामें निश्चेष्टसे पड़े हैं। सेवक सहम गया और तत्काल दौड़कर राजासाहबको सूचना दी। तत्काल राजर्षि कमरेमें पहुंचे और देखा तो दीक्षितजीके प्राणपखेरू उड़ चुके थे। राजर्षिका सन्देश मिलते ही मैंने जाकर दीक्षितजीके पार्थिव शरीरको देखा तो अश्रुपातके साथ यह पंक्ति मुखरित हो गई —"त्वन्मन्त्रं जपतः त्वदङ्घ्रिभजतः स्यान्मे शरीर व्ययः" अन्त्येष्टिके समय दीक्षितजीके कनिष्ठ सुपुत्र श्री अयोध्यानाथजी दीक्षित एडवोकेट कानपुरसे पहुंच गये थे। आपके दोनों सुपुत्र सुयोग्य विद्याविनय सम्पन्न हैं। आशा है दीक्षितजीके लिखित साहित्यको वे सुरक्षित रखकर उसे प्रकाशित करके उनकी अन्तिम इच्छाको पूर्ण करेंगे।

गत ११ अक्टूबरको स्थानीय राजकीय श्रीतारिणी-संस्कृत-महाविद्यालयमें एक शोक सभा हुई—इसमें प्रमुख विद्वानों द्वारा दीक्षितजीको श्रद्धांजलि दी गई। मंगलमयी माँ दिवंगत आत्माको सद्गति प्रदान करे और शोक-संतप्त परिवारको यह अपार कष्ट सहनेकी शक्ति दे। ज्योतिष्मती-परिवार मूक भावसे दीक्षितजीकी दिवंगतात्माको नमन करता है और पुण्यस्मृतिमें विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

व्यापार ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें

सुगम ज्योतिष—

(पं० जगन्नाथ):--जो ज्योतिषके ज्ञानसे दूर यानि अनभिज्ञ हैं एवं जिनको इस पर विश्वास नहीं है ऐसे लोगोंको सरल भाषामें ज्योतिषका पूर्ण ज्ञान। (मू० ८)

व्यापार अर्घ मार्तण्ड—

(पं० रतीराम):—विश्वके व्यापारियोंके भाग्य को चमकाने वाली यह अमूल्य पुस्तक जिसके तेजी मन्दी अचूक चांस कभी खाली नहीं जाते यदि आप लखपति करोड़पति और भाग्यवान् बनना चाहते हैं तो अवश्य मगाए। मूल्य १०) दस रुपये।

अंक ज्योतिर्विज्ञान—

(अङ्क विद्या):—(राजेश दीक्षित) इसकी सहायतासे किसी भी स्त्री या पुरुषके नामके अङ्क जोड़कर। मिन्टोंमें उसके जीवनके हालात बताए जा सकते है। मू० ६)छः रुपया। पृष्ठ२०४

व्यापार चमत्कार—

(पं० रतीराम) सैंकड़ों व्यापारी इस पुस्तककी सहायतासे घाटेसे बच गये। आप भी यदि अपने व्यापारमें उन्नति चाहते हैं तो इसको पढ़ें। मू० ५)

मिस्मरेजम विद्याके चमत्कार—

(अमोलचन्द):— मिस्मरेजम करके सुलाना, प्रश्न पूछना, दूरकी वस्तु देखना, स्वयं समाधिस्थ होना, देश विदेशकी सीनरी अथवा कहां क्या हो रहा है। आदि आदि। मू० ८।) सवा आठ रुपये। पृष्ठ ३७२ सचित्र (चित्र संख्या ६३)

हस्तलिखित पुराना इन्द्रजाल -

जिस पुस्तकके लिए आप काफी परेशान थे वह अब छप गयी। असली हस्तलिखित प्राचीन इन्द्रजालको अब खोजनेकी आवश्यकता नहीं है। पृष्ठ ६२८ मू० १२) बारह रुपये डाक खर्च माफ।

तांत्रिक साधन विधि
यन्त्र सिद्धि
मन्त्र सिद्धि
तंत्र सिद्धि
वशीकरण सिद्धि
यक्षिणी भैरव सिद्धि
अष्ट सिद्धि
कामाख्या सिद्धि
देवीदेवता सिद्धि
भूत प्रेत पिशाच सिद्धि
अघोर विद्या सिद्धि
मोहिनी विद्या सिद्धि
बंगाला तंत्र मंत्र सिद्धि
छाया पुरुष हमजाद सिद्धि
मनोकामना सिद्धि
दक्षिण देशके अद्भुत चमत्कार

प्रत्येक पुस्तकका मूल्य ७।।) रु०

व्यापार अनुभव [व्यापारिक तेजी मंदी चांस]—

(पं० रतीराम):—तेजी मन्दीके चांसोंके साथ-साथ व्यापारियोंके लिए काम आने वाले व्यापारिक अनुभव दिए गए हैं। निराश व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक आशाकी किरण दिखाएगी। मूल्य ६) छः रुपये

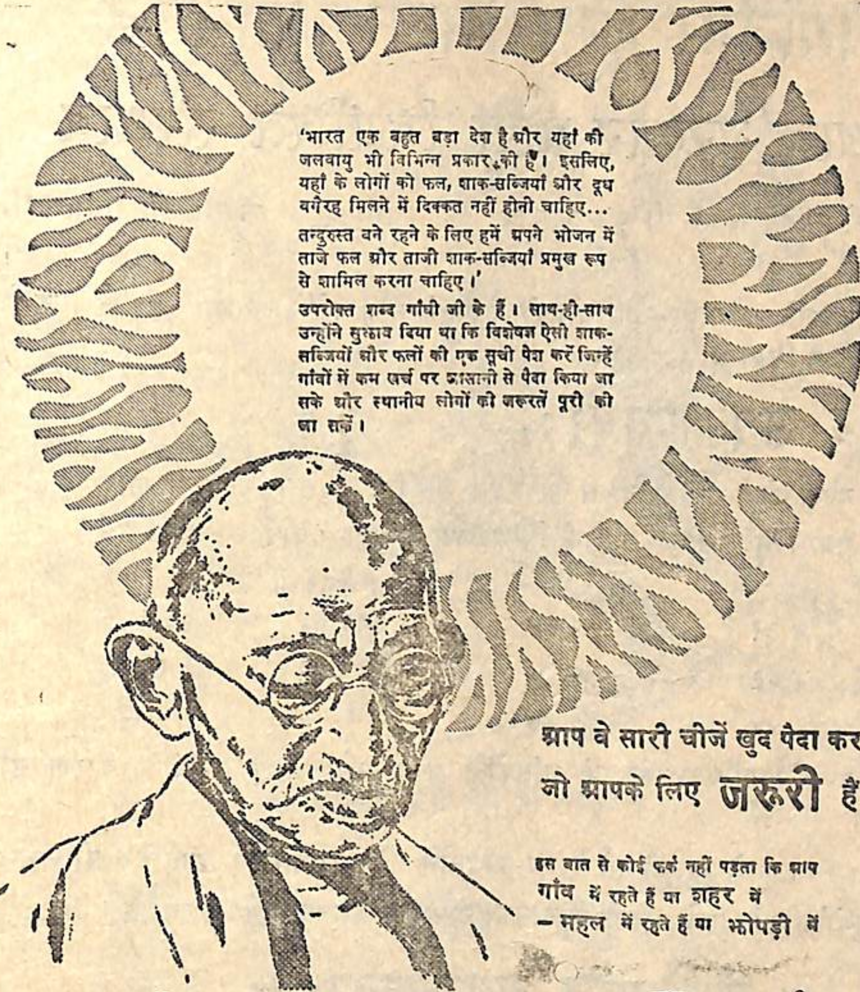
स्वप्न विज्ञान—

(सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री):—रात्रिके विभिन्न पहरोंमें देखे हुए स्वप्नोंका फल भी अलग २ समयमें मिलता है। किस स्वप्नका कैसा फल होता है? इस पुस्तकमें पढ़िए। मू० ८।) सवा आठ रुपये। पृष्ठ ३६२

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष—

(रामेश्वर अशान्त):—अपने हाथकी रेखाओं द्वारा इन बातोंका उत्तर लीजिये। आयु कितनी होगी, रोगसे कब मुक्त होंगे, मृत्यु कब और कैसे होगी, जीवन सुखमय होगा या दुखमय, क्या जीवनमें कोई विशेष घटना घटेगी, मृत्यु स्त्री पुरुषमें पहले किसकी होगी, आप निर्धन बनेंगे या धनवान्? इत्यादि जीवनमें रहस्यमयी बातोंका उल्लेख है। सचित्र मूल्य ८।) सवा आठ रुपये। पृष्ठ ५०४

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली—६


'भारत एक बहुत बड़ा देश है और यहाँ की जलवायु भी विभिन्न प्रकार की है। इसलिए, यहाँ के लोगों को फल, शाक-सब्जियाँ और दूध वगैरह मिलने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए...
तन्दुरुस्त बने रहने के लिए हमें अपने भोजन में ताजे फल और ताजी शाक-सब्जियाँ प्रमुख रूप से शामिल करना चाहिए।'
उपरोक्त शब्द गाँधी जी के हैं। साथ-ही-साथ उन्होंने सुझाव दिया था कि विशेषज्ञ ऐसी शाक-सब्जियों और फलों की एक सूची पेश करें जिन्हें गाँवों में कम खर्च पर आसानी से पैदा किया जा सके और स्थानीय लोगों की जरूरतें पूरी की जा सकें।



"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.No,-4941/57

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा वि कुमार प्रिंटिंग प्रेस सोलन में छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि प्र) से प्रकाशित